कुफ़्रे मुआ़विया

150 से ज़ायद किताबों के हवालों के साथ तह्क़ीक़ शुदा

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

कुफ़्रे मुआ़विया

150 से ज़ायद किताबों के
हवालों के साथ तहक़ीक़ शुदा

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी हनफ़ी

नाम किताब– कुफ़्रे मुआ़विया

मुअ़ल्लिफ़– डा० आज़म बेग क़ादरी
सफ़वी हनफ़ी

इशाअ़त– मई–2025 (1446) हिजरी

कम्पोज़िंग– अमन & ज़ैनुल आ़बदीन

क़ीमत–250 रुपये

ISBN-NO- 978-93-343-6952-6

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
01	हम्द....................................	13
02	तम्हीद...................................	15
03	सहाबी की ताअ़रीफ़.........................	18
04	मुआ़विया की हक़ीक़त व उसका किरदार.	19
05	अमीर मुआ़विया की हुकूमत में जुल्मो तशद्दुद और क़त्लो ग़ारत की इन्तिहां...	22
06	मुहम्मद बिन अबू बक्र का क़त्ल...........	22
07	मुहम्मद बिन अबूबक्र के क़त्ल पर अमीर मुआ़विया का खुश होना.................	23
08	मुहम्मद बिन अबूबक्र के क़त्ल पर हज़रत आयशा ने मुआ़विया को बद्दुआ़ दी.....	25
09	मुआ़विया ने सहाबी-ए-रसूल हज़रत हुज्र बिन अ़दी का क़त्ल किया..............	26
10	हज़रत हुज्र बिन अ़दी की शहादत पर हज़रत इब्ने उ़मर का रोना.............	30
11	हुज्र की शहादत पर उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा को सदमा पहुँचा.......	31
12	हुज्र बिन अदी के एक साथी को ज़िन्दा दफ़न कर दिया गया....................	33
13	अ़ली पर तबर्रा करो छोड़ दिये जाओगे..	33
14	मुआ़विया ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा का क़त्ल किया................	35

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
15	हजरत इमाम हसन का क़ातिल मुआ़विया.	36
16	इमाम हसन की वफ़ात पर मुआ़विया ने खुशी का इज़्हार किया..................	38
17	अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली का क़ातिल मुआ़विया........................	44
18	अह्ले बैत अत्हार से बुग्ज़ रखने वाला दोज़ख़ी है............................	46
19	अहले बैत अत्हार से बुग्ज़ रखने वाला काफ़िर है.............................	49
20	अहले बैत अत्हार से बुग्ज़ रखने वाला हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा..........	51
21	हलाकत व बर्बादी है उस शख़्स के लिये जो अह्ले बैत से बुग्ज़ रखे.............	52
22	मुआ़विया ने बुस्र बिन अरताह के ज़रिये सैंकड़ों क़त्ल कराये...................	53
23	मुआ़विया ने हज़रत मालिक बिन अश्तर का क़त्ल कराया.........................	56
24	हज़रत इमाम नसाई की मौत का वाक़्आ़.	59
25	मुआ़विया की हुकूमत जुल्म व तशद्दुद क़त्लो ग़ारत पर मुश्तमिल थी............	61
26	सरों को काटने का वहशियाना तरीक़ा मुआ़विया के दौरे हुकूमत में शुरु हुआ...	62
27	हज़रत तल्हा की शहादत....................	66
28	लोगों का क़त्ल व उन पर जुल्म करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वई़द.....	67

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
29	मुआ़विया की मौत कुफ़्र व मुनाफ़िक़त पर हुई..............................	70
30	रसूलुल्लाह ने मुआ़विया को बद्दुआ़ दी और वो कुबूल हुई........................	72
31	मुआ़विया बाग़ी था.........................	75
32	मुआ़विया की ख़ता इज्तिहादी नहीं बल्कि ख़ताए मज़मूम थी........................	79
33	अमीर मुआ़विया हुकूमत का हरीस और लालची था..............................	85
34	हज़रत अ़ली का मुख़ालिफ़ बाग़ी गिरोह शैतान का गिरोह है......................	85
35	बाग़ी फ़िरक़े का रसूलुल्लाह से कोई तआ़ल्लुक़ नहीं है.........................	86
36	रसूलल्लाह का अ़ली के मुख़ालिफ़ीन बाग़ी गिरोह के बारे मे ख़बर देना...............	86
37	जंगे जमल व जंगे सिफ़्फ़ीन के बारे में रसूलुल्लाह की पेशीनगोई......................	87
38	रसूलुल्लाह का फ़रमान अ़ली कुरान की तावील पर क़िताल करेंगे.....................	88
39	हज़रत मौला अ़ली की इताअ़त मुआ़विया पर वाजिब थी...........................	90
40	मौला अ़ली की इताअ़त रसूलुल्लाह की इताअ़त है................................	91
41	जो अ़ली से जुदा हुआ वो रसूलुल्लाह से जुदा हुआ.................................	92

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
42	अह्ले बैत का दामन छोड़ने वाला गुमराह.	92
43	जिसने मौला अ़ली से जंग की तो गोया उसने रसूलुल्लाह से जंग की............	94
44	अह्ले हक़ मुसलमानों की जमाअ़त से अलग होने वाला दोज़ख़ी है............	95
45	मुसलमानों को गाली देना फ़िस्क़ और उससे क़िताल करना कुफ़्र है............	99
46	मुआ़विया का अ़ली को ख़लीफ़ा न मानना और कुरान की बेहुरमती करना..........	102
47	मुआ़विया बदतरीन बादशाह था..........	104
48	अमीर मुआ़विया की बैअ़त गुमराही पर मबनी थी............................	104
49	मुआ़विया जाहलियत की मौत मरा.......	105
50	एक ख़लीफ़ा के होते हुये दूसरे की बैअ़त ली जाये तो दूसरे को क़त्ल कर दो......	106
51	मौला अ़ली हक़ पर थे और मुआ़विया बातिल पर था........................	109
52	मौला अली हक़ व बातिल में जुदाई करने वाले हैं...........................	110
53	मौला अ़ली हक़ को वाज़ेह करने वाले हैं.	110
54	मौला अ़ली हादी व महदी हैं............	110
55	अ़ली हिदायत के अ़लम और रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं...................	111
56	जिसने मौला अ़ली को मज़बूती से थामा वो कभी गुमराह न होगा................	111

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
57	हक़ अ़ली के साथ और अ़ली हक़ के साथ..	114
58	अमीर मुआ़विया को हज़रत मौला अ़ली का जवाबी ख़त................................	116
59	अ़ली के साथ जंग में शामिल न होने का इब्ने उ़मर को अफ़सोस........................	117
60	हज़रत अम्मार को जंगे सिफ़्फ़ीन में अबुल ग़ादिया ने शहीद किया......................	118
61	रसूलुल्लाह ने हज़रत अम्मार के लिये शैतान से तहफ़्फ़ुज़ की दुआ़ की.........	118
62	मौला अ़ली से बुग्ज़ व अ़दावत रखने वाला मुनाफ़िक़ है............................	119
63	तमाम मुनाफ़िक़ीन हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे..	123
64	तमाम काफ़िर व मुनाफ़िक़ दोज़ख़ी हैं....	124
65	अह्ले बैत के हक़ को न पहचानने वाला हरामी है..	126
66	जो मौला अ़ली को मौला न माने तो वो मोमिन ही नहीं..............................	127
67	जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा...................................	128
68	जिसने अ़ली से दुश्मनी रखी तो उसने अल्लाह तआ़ला से दुश्मनी रखी.........	131
69	जंगे जंमल के मुताअ़ल्लिक़ एक ऐतराज़ और उसका जवाब..............................	138

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
70	मक़ामे हौअब पर कुत्ते भोंकेंगे............	139
71	हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का नादिम होना..	140
72	तल्हा व ज़ुबैर का रुजूअ़ करना और मोमिन के क़ातिल की तौबा कुबूल नहीं...	142
73	रसूलल्लाह ने हज़रत आयशा के साथ नरमी बरतने का हुक्म दिया............	146
74	ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत आ जायेगी.............	147
75	हकम की औलाद का रसूलुल्लाह के मिम्बर पर उछलना कूदना...............	151
76	रसूलुल्लाह ने हकम व उसकी औलाद पर लाअ़नत फ़रमाई.........................	152
77	उम्मत की हलाकत कुरैश के चन्द लड़कों के हाथों होगी..............................	153
78	कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ बनू उम्य्या के आअ़माल..................................	154
79	नमाज़े ईदैन से पहले खुत्बा और इदैन में अज़ान देने की बिदअ़त.............	154
80	अमीर मुआ़विया ने बुध के दिन जुमअ़ा की नमाज़ पढ़ी.............................	156
81	अमीर मुआ़विया नमाज़े वित्र एक रकअ़त पढ़ता था..................................	156
82	मुआ़विया ने सदक़ा फ़ित्र की सुन्नत में अपनी राय क़ायम की................	157
83	मुआ़विया शराबी था...............	157

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
84	माले ग़नीमत के मुआ़मले में कुरान व सुन्नत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी................	162
85	मुआ़विया ने सुन्नत को बदलकर अपनी राय से कई बिदअ़ते शुरु कीं............	165
86	मौला अ़ली से बुग़्ज़ की वजह से अमीर मुआ़विया ने तलबिया नहीं पढ़ी..........	165
87	मुआ़विया मौला अ़ली पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न करता व कर'वाता था....	166
88	मुआ़विया ने हज़रत साअ़द को हुक्म दिया कि अ़ली को बुरा कहें............	167
89	मुआ़विया ने अ़ली को बुरा कहा तो साअ़द को मुआ़विया पर गुस्सा आया....	169
90	मुआ़विया ने हुज्र से कहा कि अ़ली पर लाअ़नत करोगे तो छोड़ दिये जाओगे....	171
91	मुआ़विया के सामने मुआ़विया के लोग हज़रत अ़ली को गाली देते थे...........	172
92	बनू उमय्या अह्ले बैत को गाली देते थे और लाअ़न ताअ़न करते...............	173
93	मुआ़विया ने अ़ली पर सब्बो शत्म न करने की शर्त को नहीं माना............	176
94	शराइते सुलह इमाम हसन..................	176
95	अमीर मुआ़विया ने एक भी शर्त को पूरा नहीं किया...........................	178
96	जिसने अ़ली को गाली दी उसने अल्लाह तआ़ला को गाली दी..................	180

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
97	जिसने अ़ली को बुरा कहा उसने अल्लाह व उसके रसूल को बुरा कहा.............	183
98	जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी तो उसने अल्लाह व उसके रसूल को तकलीफ़ दी..	184
99	हजरत मौला अ़ली को गाली देने वाले हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे.............	187
100	अ़ली मग़फ़िरत का दर'वाज़ा हैं जो इससे निकल गया वो काफ़िर है...............	187
101	अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ......	188
102	रसूलुल्लाह को जो गाली दे उसे क़त्ल करने का हुक्म..........................	192
103	रसूलुल्लाह ने काफ़िर व मुरतद को क़त्ल करने का हुक्म फ़रमाया................	193
104	मुआ़विया के चार काम ऐसे जो उसे हलाक करने वाले हैं.....................	194
105	मुआ़विया की फ़ज़ीलत में एक भी हदीस सहीह सनद से साबित नहीं.............	195
106	झूठी अहादीस रिवायत करने वाले चन्द राावियों का तज़किरा.....................	203
107	झूठी अहादीस बयान करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब की वई़द.......................	205
108	मुआ़विया कातिबे वही नहीं था...........	207
109	मुआ़विया फ़क़ीय नहीं था................	211
110	अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में मौज़ूअ़ अहादीस का तहक़ीक़ी जायज़ा...........	213

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
111	बाअ़ज़ सहाबा मुरतद हुये.................	226
112	कातिबे वही का मुरतद होना.............	230
113	बाअ़ज़ सहाबा भी दोज़ख़ में जायेंगे......	233
114	रोज़े क़यामत बाअ़ज़ सहाबा हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे........................	238
115	चोरी करने वाले के हाथ काटने का हुक्म.	241
116	एक सहाबी को ज़िना करने की वजह से रज्म किया गया.......................	242
117	सुलह इमाम हसन के असबाब............	244
118	मुआ़विया ने हज़रत अबू अय्यूब के साथ ज़्यादती की..............................	246
119	इमाम बुखारी के उस्ताद मुआ़विया से नफ़रत करते थे........................	247
120	मुआ़विया के बारे में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का क़ौल.......	247
121	मुआ़विया के बारे में रसूलल्लाह (सल्ल०) का फ़रमान..............................	248
122	मुआ़विया के चार बाप....................	248
123	मुसलमान का क़ातिल दोज़ख़ी............	252
124	मुसलमान को क़त्ल करना कुफ़्र है.......	255
125	मुसलमान का माल, इ़ज़्ज़त व खून हराम.	255
126	क़यामत में पहला फ़ैसला खून का होगा..	258
127	हर गुनाह मुआ़फ़ सिवाए मुसलमान के क़त्ल के....................................	258
128	मुसलमान पर जुल्म करने वाला दोज़ख़ी..	260

-: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजूबिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

तमाम ख़ूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है कि जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ो तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्द व सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना और वो लाज़वाल है वो हर ऐ़ब से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है शक्लो सूरत में हर शैः से बईद तर है उसके बन्दों का कोई लम्हा उससे मख़्फ़ी नहीं इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं, बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे-

परेशान व हैरान नहीं कर सकता मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता और जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है और वो कायनात की हर शैः का अ़ालिम है और वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे और अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को औसाफ़ो अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुज़ूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

अल्लाह तअ़ाला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अह्ले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अह्ले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़तो मुसीबत के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुताह्हरात और आपकी आल व असहाब और जुमला औलिया किराम व सूफ़िया इ़ज़ाम और उन पर जो अल्लाह के मुक़र्रब मख़सूस बन्दे हैं।

—: तम्हीद :—

किसी शख़्स की इब्तिदाई ज़िन्दगी या वुस्ती ज़िन्दगी के आअ़माल व अहवाल कैसे भी रहें हों अगर उसका ख़त्मा ईमान बिल ख़ैर पर हो तो वो बाईमान कामयाब और निजात याफ़्ता शख़्स है किसी इन्सान का इस्लाम में दाख़िल होना और फिर दीन से फिर जाना या फिर उससे ऐसे उमूर वाक़ैअ़ होना जो कुफ़्र हों या अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल की शानो अ़ज़मत में गुस्ताख़ी के कलिमात का सादिर होना ये सब उमूर उस इन्सान को मुरतद बना देते हैं यानी वो शख़्स वाज़िबुल क़त्ल हो जाता और उसका उसका इस्लाम में दाख़िल होना अल्लाह तअ़ाला की तौहीद और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की रिसालत पर ईमान लाना और नेक आअ़माल करना उसे कोई अज्र व नफ़ाअ़ न देंगे ख़्वाह वो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का सहाबी ही क्यों न हो।

अमीर मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान जो फ़तह मक्का के बाअ़द मजबूरी में ज़ाहिरन इस्लाम में दाख़िल हुआ मगर उसके बातिन और उसके दिल में निफ़ाक़ गर्दिश रवां और मौजज़न रहा और उसके इस्लाम में दाख़िल होने की मजबूरी ये थी कि मक्का मुकर्रमा फ़तह हो चुका था और अब अगर वो इस्लाम नहीं लाता तो वो क़त्ल कर दिया जाता इस मजबूरी की वजह से अमीर मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान इस्लाम में दाख़िल हुआ और उस मौक़ेअ़ के इन्तिज़ार में रहा कि जब उसका मौक़ाअ़ और वक़्त उसके मुवाफ़िक़ होगा तो वो अपने

छुपे हुये बुग्ज़ व निफ़ाक़ को ज़ाहिर करेगा और अपनी ख़्वाहिशात और बदले को पूरा करेगा और जैसे ही वो मौक़ाअ़ और वक़्त आया तो अमीर मुआ़विया ने अपने छुपे हुये बुग्ज़ और निफ़ाक़ को ज़ाहिर कर दिया और फिर उसने अह्ले बैत अत्हार और सहाबा किराम व ताबईन पर इन्तिहाई जुल्म व खूँरेज़ी और नाहक़ क़त्लो ग़ारत और लूटपाट को बपा किया हत्ता कि ख़्वातीन पर भी शदीद जुल्म किये और कुरानो सुन्नत की खुले आ़म तौहीन और नाफ़रमानी की और दीन में कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ अपने नफ़्स और अपनी तबियत के मुताबिक़ उसने नई नई बिदअ़तों को ईजाद किया तो ऐसे उमूर को अन्जाम देने वाला शख़्स क़तई मुसलमान नहीं हो सकता बल्कि वो काफ़िर और मुनाफ़िक़ होगा और हक़ीक़त यही है कि मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान इस्लाम में आने के बाअ़द मुरतद हो गया था।

मुअ़विया की बग़ावत, खुरुज, फ़साद, क़त्लो ग़ारत और कुरान व सुन्नत से रुगरदानी और अह्ले बैत अत्हार पर सब्ब व शत्म और लाअ़न ताअ़न ये तमाम उमूर मुआ़विया के कुफ़्र पर दलालत करते हैं नासबी फ़िरक़ा परस्त गिरोह अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में बातिल और बेसनद और मौजूअ़ हदीसें बयान करते हैं जबकि हक़ीक़त इसके बर अ़क्स है कि मुअ़विया इस्लाम लाने के बाअ़द मुरतद हो गया था जो कि कुरान व सुन्नत और तारीख़ की किताबों से साबित है और हमारी इस किताबी तहरीर का मक़सद किताबो सुन्नत की रौशनी में अमीर मुअ़विया के कुफ़्र और उसकी हक़ीक़त को आशकार और वाज़ेह करना है ताकि उम्मते मुस्लिमा अमीर मुआ़विया लाअ़नती के ज़ाहिरी व बातिनी उमूर पर मुत्तलाअ़ हों और मुग़ालते का शिकार न हों।

अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान से मुहब्बत करने वाले नासबियों ने एक अ़जीब तरीक़ा ईजाद किया है कि मुआ़विया के इन्तिहाई ज़ुल्म व क़त्लो ग़ारत और अहले बैत अत्‌हार पर सब्बो शत्म और उनसे बुग्ज़ व अ़दावत का ज़िक्र तारीख़ की किताबों में हो तो नासबी कुतुबे तवारीख़ को ग़ैर मुअ़तबर कहते हैं और अगर मुअ़तबर कुतुबे अहादीस में मज़कूरा उमूर का ज़िक्र हो तो ये नासबी ख़ताए इज्तिहादी कहते हैं और मुआ़विया के मज़कूरा उमूर सहीह सनद से साबित हों जायें तो ये नासबी मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के दिफ़ाअ़ में उसकी ग़लत तावीलात करते या फिर ये कहते हैं कि सुकूत इख़्तियार करो लेकिन जब हज़रत अबू तालिब अ़लैहिस्सलाम का मुआ़मला हो तो यही नासबी उनको (मआ़ज़ अल्लाह) काफ़िर कहते हैं और अपनी ज़बाने दराज़ करते हैं क्या इसी को अ़द्‌ल और इन्साफ़ कहते हैं नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि ये मुनाफ़िक़त व नासबियत की दलील है

इन मुनाफ़िक़ व नासबी मुल्लाओं के नज़दीक अहले सुन्नत वल जमाअ़त में वो शख़्स दाख़िल है जो इनके अकाबिर ओ़ल्माओं के साथ साथ अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान लाअ़नती को भी दिल से तसलीम करे और उसकी ताअ़ज़ीम करे और उसकी शान में क़सीदे पढ़े और उसका ओ़र्स मनाये और बनू उमय्या के साथ मुहब्बत रखे ख़्वाह वो अह्‌ले बैत अत्‌हार से बुग्ज़ व कीना रखें हालांकि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हयाते तय्यबा से लेकर आज तक अह्‌ले सुन्नत वल जमाअ़त के नज़दीक उनके अ़क़ाइद में रसूले पाक से मुहब्बत व उनके ख़ानदान से मुहब्बत मदारे ईमान और फ़र्ज़ क़रार दी गई है।

-: सहाबी की ताअ़रीफ़ :-

सहाबी का इत्लाक़ हर उस शख़्स पर किया जाता है कि जिसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हालते ईमान में ज़ियारत की हो और आपकी सुहबत इख़्तियार की हो ख़्वाह एक दिन या एक घड़ी क्यों न हो तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का हालते ईमान में दीदार करने वाला सहाबी हो जाता है मगर उसकी साहबियत बरक़रार रहने के लिये उसका ख़ात्मा ईमान पर होना ज़रुरी है इस्लाम लाने के बाअ़द अगर कोई मुरतद हो जाये तो उसे सहाबी नहीं कहा जायेगा यानी जब तक कि इस्लाम में दाख़िल होने के बाअ़द उसका इस्लाम पर बाक़ी रहना साबित न हो अगर उसका इस्लाम पर बाक़ी रहना साबित न हो तो उसकी साहबियत ज़ाइल हो जाती है क्योंकि साहबियत के लिये उसका ख़ात्मा भी इस्लाम पर होना चाहिये यानी ईमान की हालत में जिसने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ियारत की हो और ईमान की हालत में ही उसकी मौत हुई हो उसे सहाबी कहते हैं मगर जिसने हालते ईमान में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुलाक़ात की हो फिर वो इस्लाम से फिर गया हो और उसी हालत में उसकी मौत वाक़ेअ़ हुई हो वो सहाबी की ताअ़रीफ़ से ख़ारिज हो जाता है।

और जिस तरह अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं जिनमें सबसे आअ़ला व अफ़ज़ल तरीन दर्जा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ाते पाक का है तो इसी तरह-

सहाबा किराम के भी मुख़्तलिफ़ दरजात हैं और उनमें सबसे अफ़ज़ल हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की ज़ाते पाक है इसी तरह पहले ईमान लाने वाले और बाअ़द में ईमान लाने वाले बराबर नहीं हो सकते पहले ईमान लाने वालों का दर्जा फ़ज़ीलत के ऐतबार से बाअ़द में ईमान लाने वालों से बुलन्द तर है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

तुममें से जिन लोगों ने फ़तह मक्का से पहले (अल्लाह की राह में अपना माल) ख़र्च किया और क़िताल किया वो (और तुम) बराबर नहीं हो सकते वो उन लोगों से दर्जे में बहुत बुलन्द हैं कि जिन्होंने बाअ़द में माल ख़र्च किया। (सूरह-हदीद-57/10)

अमीर मुआ़विया की हक़ीक़त और उसका किरदार

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बग़ावत और जंग करने वाला मुआ़विया, और उन पर तबर्रा करने वाला मुआ़विया, हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गाली देने और दिलवाने वाला मुआ़विया, हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के लश्कर पर जंगे सिफ़्फ़ीन में पानी बन्द कर'वाने वाला मुआ़विया और हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) व उनके साथियों को क़त्ल करवाने वाला मुआ़विया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के बेटे व उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के भाई हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) का क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया और हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु) को क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया, जंगे सिफ़्फ़ीन में बेशुमार सहाबा किराम व ताबईने किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) को क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया, व हज़रत उवैस करनी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया, और हज़रत मालिक बिन अश्तर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को क़त्ल करवाने वाला मुआ़विया और हज़रत मौला इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम को ज़हर दिलवाकर क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया और हज़रत मौला इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात पर ख़ुशियाँ मनाने वाला मुआ़विया और इब्ने मुल्जिम के ज़रिये हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को क़त्ल कर'वाने वाला मुआ़विया,

और क़ुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ हुकूमते निज़ाम को चलाने वाला मुआ़विया, नाहक़ क़त्ल और नाहक़ माल लूटने का हुक्म देने वाला मुआ़विया हुकूमत का लालची मुआ़विया और माले ग़नीमत से अपने लिये सोना चाँदी निकलवाने वाला मुआ़विया माले ग़नीमत से फौजियों के लिये तन्ख़्वाह के बदले सोना चाँदी तक़सीम करने वाला मुआ़विया, शराब पीने वाला मुआ़विया, और शराब से लज़्ज़त लेने वाला मुआ़विया, व रेशम के कपड़े पहनने वाला मुआ़विया और दौराने हज तल्बिया न पढ़ने वाला मुआ़विया, और यज़ीद मरदूद लईन मुरतद को अपनी ज़िन्दगी अपना जा नशीन बादशाह मुक़र्रर करने वाला मुआ़विया, जमाअ़ते हक़ से अलग होने वाला मुआ़विया बाग़ी व जहन्नमी जमाअ़त का सरदार मुआ़विया, और जंगे सिफ़्फ़ीन में सुलह के वक़्त मुआ़हिदे की तहरीर से लफ़्ज़े अमीरुल मोमिनीन हटवाने वाला मुआ़विया और–

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जिस पर लाअ़नत की थी उस मर‘वान बिन हकम को मदीने का गवर्नर बनाने वाला मुआ़विया, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की सुन्नत को बदलने वाला मुआ़विया, कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ दीन में नई नई बिदअ़तें ईजाद करने वाला मुआ़विया मिम्बरों से हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न करने व कर‘वाने वाला मुआ़विया और कुरान को नेज़ों पर उठाने वाला मुआ़विया और बैठकर खुत्बा पढ़ने वाला मुआ़विया और हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने जिसको गधा कहा वो मुआ़विया बुध के दिन जुमअ़ा पढ़ने वाला मुआ़विया, ईदैन की नमाज़ से पहले अज़ान देने वाला मुआ़विया, लोगों के हाथ कटवाने वाला और लोगों के सर क़लम कर‘वाने वाला मुआ़विया व हज़रत ऊ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के दो छोटे मासूम बच्चो का क़त्ल करवाने वाला मुआ़विया

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) व उनके रुफ़क़ा के सर काट कर क़त्ल कर‘वाने वाला मुआ़विया और बुस्र बिन अरताह के ज़रिये सैंकड़ो लोगों का क़त्ल कर‘वाने वाला मुआ़विया और ख़वातीन को लोंडी बनाकर फिर उन्हें बाज़ार में फ़रोख़्त करवाने वाला मुआ़विया, अल्लाह तआ़ाला और उसके रसूल को अज़ि़यत पहुँचाने वाला मुआ़विया, हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के साथ एक मुआ़हिदे के तहत होने वाली सुलह के वक़्त तय होने वाली तमाम शराइतों में से एक को भी पूरा न करने वाला मुआ़विया और सख़्त तरीन ज़ालिम बादशाह मुआ़विया, और दुबैला फोड़े से बद तरीन मौत मरने वाला मुआ़विया और कुफ़्र और जाहलियत की मौत मरने वाला मुआ़विया अब भी अगर

कोई मुआ़विया को सहाबी तसव्वुर करे तो समझ लेना कि वो पक्का नासबी और मुनाफ़िक़ है।

मज़कूरा तमाम उमूर की तफ़सील इंशा अल्लाह आगे सफ़हात पर मय हवाला अहले सुन्नत की कुतब से तहरीर की जायेगी जिसमें कुछ हवाले अ़रबी कुतब से और कुछ उ़र्दू कुतुब से होंगे।

अमीर मुआ़विया की हुकूमत में जुल्मो तशद्दुद और क़त्लो ग़ारत की इन्तिहां

हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र का क़त्ल

➡ हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ये उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के हक़ीक़ी भाई थे आप हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़िन्दगी में हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर हरम के नज़दीक पैदा हुये आपकी वालिदा का नाम अस्मा बिन्ते उमैस था हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी वफ़ात के वक़्त आप ही को गुस्ल की वसीअ़त की थी चुनांचा आप ही ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को गुस्ल दिया था आप जंगे जमल व जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ आपके लश्कर में थे और जब हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ख़लीफ़ा-ए-राशिद के मन्सब पर फ़ाइज़ हुये तो आपने हज़रत क़ैस बिन साअ़द बिन उबादा के बाअ़द हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को मिस्र-

का वाली मुक़र्रर किया और फिर उसी साल में अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान लाअ़नती ने अम्र बिन आस को मिस्र की तरफ़ भेजा तो अम्र बिन आस ने मिस्र पर हमला किया तो हज़रत मुहम्मद बिन अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को शिकस्त हुई और अम्र बिन आस ने आपसे मिस्र छीन लिया फिर हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ ने भागकर एक ग़ार पनाह ली लेकिन आप पकड़े गये और फिर आप को क़त्ल कर दिया गया उस वक़्त आपकी उ़म्र तीस साल से कम थी फिर आपके मुर्दा जिस्म को एक मुर्दा गधे की खाल में डालकर जला दिया गया एक रिवायत में है कि अम्र बिन आस ने उन्हें रोज़े की हालत में भूका प्यासा रखकर क़त्ल किया चूंकि हज़रत मुहम्मद बिन अबूबक्र सिद्दीक़ साहिबे फ़ज़्ल व इ़बादत गुज़ार शख़्स थे इसलिये हज़रत अ़ली उनको अच्छा जानते थे (इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–उर्दू–जि०–3-हि०–8-सफ़ा-140) (तारीख़ इब्ने कसीर–उर्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –4–हि०–7–स०–311)
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–147)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उर्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –7–स०–417) (तज़किरातुल ख़वास–सफ़ा–136)
(तारीख़े मसऊ़दी–उर्दू–जि०–1–हि०–2–सफ़ा–343, 344)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उर्दू–जि०–1-सफ़ा–154,155)
(तारीख़े तबरी–उर्दू–जि०–3-हि०–2–सफ़ा–305, 306)
(तारीख़े याअ़कूबी–उर्दू–जि०–2-हि०–2–सफ़ा–317)

मुहम्मद बिन अबू बक्र के क़त्ल पर मुआ़विया का खुश होना

➡ मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान लाअ़नती जहन्नमी

को जब हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा) के क़त्ल की ख़बर पहुँची तो उसके सुरुर व मसर्रत का कोई ठिकाना न रहा और मुआविया ने उस खुशी व मसर्रत का इज़हार भी किया मगर जब हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हुमा) के क़त्ल की ख़बर पहुँची और उसके साथ मुआविया के इज़हारे मसर्रत व खुशी का हाल सुना तो फिर आपने फ़रमाया कि मुआविया को उनके क़त्ल पर जितनी खुशी है हमें उनके क़त्ल पर उतना ही सदमा है और इस सदमे की कई वजह हैं सबसे बड़ी वजह ये है कि वो जलीलुल क़द्र सहाबी अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) के बेटे हैं और दूसरी ये कि मैं भी उन्हें अपना बेटा समझता था क्योंकि वो मेरे भाई अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) के बेटे हैं इसके अ़लावा वो हर वक़्त हर मौक़ेअ़ पर मेरा साथ देने के लिये आमादा और मुस्तइद रहते थे बहर कैफ़ हम उसका हिसाब अल्लाह तआला पर छोड़ते हैं और एक रिवायत में ये है कि जब हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हुमा) के क़त्ल की ख़बर पहुँची तो आप रोये और इज़हारे ग़म व अफ़सोस किया और फिर आपने हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ के क़ातिलों पर लाअ़नत फ़रमाई हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ का क़त्ल 38 हिजरी में हुआ था।

(तारीख़े मसऊ़दी–उर्दू–जि०–1–हि०–2–सफ़ा–344)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उर्दू–जि०–1–सफ़ा–154,155)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उर्दू–सफ़ा–136)
(तारीख़े याअ़कूबी–उर्दू–जि०–2–हि०–2–सफ़ा–318)
(तारीख़े तबरी–उर्दू–जि०–3–हि०–2–सफ़ा–309, 310, 311)

मुहम्मद बिन अबू बक्र के क़त्ल पर अम्मा आयशा ने मुआ़विया को बददुआ़ दी

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को जब अपने भाई की वफ़ात का इल्म हुआ तो उन्हें बहुत दुख व सख़्त रंजो ग़म हुआ और फिर आपने फ़रमाया कि मैं मरहूम को अपना भाई व बेटा समझती थी चूंकि उन्हें आग में जलाया गया था इसलिये उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने इस वाक़ओ़ के बाअ़द कभी भी भुना हुआ गोस्त नहीं खाया और फिर आपने हर नमाज़ के बाअ़द अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान और अम्र बिन आस को बददुआ़ देना शुरु की और तमाम अह्ले बैत आपकी इस बददुआ़ में शरीक रहते।
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–उर्दू–जि०–3-हि०–8–सफ़ा–140 –रक़म–4744) (तज़किरातुल ख़वास–उर्दू–1–सफ़ा–136)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उर्दू–जि०–1–सफ़ा–154,155)
(तारीख़े तबरी–उर्दू–जि०–3–हि०–2–सफ़ा–306)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं अपने भाई मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के मुआ़मले में उसने जो कुछ किया वो मुझे इससे नहीं रोक सकता कि मैं तुम्हें वो बात सुनाऊँ जो मैंने खुद हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को कहते हुये सुना आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह जो शख़्स भी मेरी उम्मत के किसी मुआ़मले का ज़िम्मेदार बने और उन पर सख़्ती करे तो ऐ अल्लाह तू उस पर सख़्ती फ़रमां
(मुस्लिम–सहीह–3/693–ह०–4722)

मुआ़विया ने सहाबी-ए-रसूल ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी का क़त्ल किया

➡ ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह जुबैरी फ़रमाते हैं कि ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी किन्दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की कुन्नियत अबू अ़ब्दुर्रहमान थी आप सर'वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की बारगाह में आये थे जंगे क़ादसिया, जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हमराह शरीक हुये थे मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने इनको मरजु अज़राअ पर शहीद किया था इनके दो बेटे थे अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रहमान इन दोनों को मुस्अ़ब बिन उ़मैर ने बाँध कर शहीद किया था ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी 51 या 53 हिज्री में शहीद हुये।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-5/175-ह०-5974)
(इमाम ज़हबी-सीयरे आलामिन नुबला-अ़रबी-जि०-3-सफ़ा-467)

➡ ह़ज़रत मुहम्मद बिन सीरीन फ़रमाते हैं कि ज़ियाद ने खुत्बा लम्बा कर दिया तो ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि नमाज़ का वक़्त हो चुका है और साथ अपना हाथ ज़मीन पर मारा और साथ ही दूसरे लोगों ने भी हाथ ज़मीन पर मारे ज़ियाद मिम्बर से नीचे उतरा और नमाज़ पढ़ा दी और फिर ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के बारे में मुआ़विया की जानिब ख़त लिखा मुआ़विया ने उस ख़त के जवाब में लिखा कि उनको मेरे पास भेज दो ज़ियाद ने ह़ज़रत हुज्र बिन अ़दी व उनके साथियों को बेड़ियों में जकड़ कर मुआ़विया के पास भेज दिया-

मुआ़विया ने उनके क़त्ल का हुक्म दे दिया जब उनको क़त्ल के लिये ले जा रहे थे तो उन्होंने कुछ देर नमाज़ पढ़ने के लिये मुहलत का मुतालबा किया उनको मुहलत दी गई आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी फिर फ़रमाया कि तुम मेरा खून न धोना और न ही मेरी बेड़ियाँ उतारना और मुझे मेरे इन्हीं कपड़ों में दफ़न करना क्योंकि कल रोज़े क़यामत मेरा और मुआ़विया का झगड़ा होगा और मैं इसी हाल में बारगाहे इलाही में मुक़द्दमा पेश करुँगा और फिर हज़रत हुज्र बिन अ़दी और आपके साथियों के क़त्ल का मुआ़विया ने हुक्म जारी कर दिया और आपके साथ सात (07) लोगों को क़त्ल कर दिया गया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/177-ह०–5979, 5981)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जि०–4–हि०–1–सफ़ा–99)
(इब्ने हजर अस्क़लानी–अल असाबा फ़ी तमइजुस्सहाबा–उर्दू–जि०–1–सफ़ा–581–रक़म–1631)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–उ़र्दू–जि०–1–हि०–2-सफ़ा-526-रक़म–1093)
(तबक़ात–इब्ने साअ़द–उ़र्दू-जि-3-हि०-6-सफ़ा-145-ता-147)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि०–4–हि०–8–स०–389, 390, 391, 392)
(तारीख़े इब्ने ख़ल्दून–उ़र्दू–जि०–2–सफ़ा–489, 490)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जि०–3–सफ़ा–24, 25)
(तारीख़े याअ़क़ूबी–उ़र्दू–जि०–2–सफ़ा–381, 382)
(तारीख़े अहमदी–उर्दू–जि०–1–सफ़ा–230, 231)
(अल इस्तिआ़ब–अ़रबी–2–सफ़ा–386)
(इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–5–सफ़ा–242)
(तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12–सफ़ा-215,226,228)(तारीख़े इस्लाम–इमाम ज़हबी–अ़रबी–जि०–4-सफ़ा-194)(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला-अ़रबी–जि०–3–सफ़ा–466, 467)

➡ ज़ियाद को मुआ़विया ने कूफ़ा का गवर्नर बनाया था ज़ियाद अबू सुफ़ियान की नाजाइज़ औलाद था जो सुमय्या से पैदा हुआ था फिर मुआ़विया ने उसे अपना भाई बना लिया था और अपने नसब में दाख़िल कर लिया था ज़माना जाहलियत में अबू सुफ़ियान तॉयफ़ गया तो अबू मरयम शराब फरोश के यहाँ उतरा और अबू मरयम से कहा मैं इस वक़्त औ़रत की ख़्वाहिश में बेचैन हूँ अबू मरयम ने कहा कि अगर तुम सुमय्या को पसन्द करते हो तो मैं उसे बुला दूँ अबू सुफ़ियान ने कहा ठीक है बुला दो तो अबू मरयम ने सुमय्या को बुला दिया सुमय्या हारिस सक़फ़ी की लोंडी थी फिर अबू सुफ़ियान उससे हम बिस्तर हुआ फिर उसी से सुमय्या हामला हो गई और फिर उससे ज़ियाद पैदा हुआ और इसकी गवाही अबू मरयम ने दी और ये पहला वाक़िआ़ है जिसमें ऐलानियां तौर पर शरीअ़त की मुख़ालिफ़त की गई कि मुआ़विया ने उसे अपना भाई बना लिया और अपने नसब में दाख़िल कर लिया

जब ज़ियाद ने कूफ़ा की मस्जिद में मिम्बर पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तबर्रा किया तो हज़रत हुज्र बिन अदी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की ताअ़रीफ़ और फ़ज़ीलत बयान की तो ज़ियाद ने ग़ज़बनाक होकर हज़रत हुज्र और उनके तेरह साथियों को गिरफ़्तार करके मुआ़विया के पास भेज दिया जिनको मुआ़विया ने मक़ामे उज़्रा में भेजकर क़त्ल कर डाला हुज्र बिन अदी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बड़े दीनदार व इ़बादत गुज़ार शख़्स थे और उनका क़त्ल मुसलमानों पर बहुत ही शाक़ गुज़रा इमाम अहमद बिन हम्बल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) का क़ौल है कि मैंने याह्या बिन सुलेमान से पूछा तो–

माअ़लूम हुआ कि हुज्र बिन अदी मुस्तजाबुद दाअ़वात शख़्स थे यानी वो जिसकी दुआ़यें बारगाहे खुदाबन्दी में मक़बूल होती हों और वो फ़ाज़िल तरीन सहाबा में से थे कंजुल उ़म्माल में है उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि अ़नक़रीब उज़्रा में ऐसे लोग क़त्ल किये जायेंगे कि जिनके क़ातिलीन पर अल्लाह तआ़ला और आसमान वालों का ग़ज़ब नाज़िल होगा। (तारीख़े अहमदी–उर्दू–जि०–1–सफ़ा–230, 231)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने रिवायत किया है कि हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और उनके साथियों के क़त्ल के बाअ़द मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास आया तो उम्मुल मोमिनीन ने फ़रमाया कि ऐ मुआ़विया मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना अ़नक़रीब उज़्रा में कुछ लोग क़त्ल होंगे जिनके लिये अल्लाह तआ़ला और आसमान वाले ग़ज़बनाक होंगे।
(तारीख़े याअ़क़ूबी–उ़र्दू–जि०–2-सफ़ा–382)
(तारीख़े अहमदी–उ़र्दू–जि०–1–सफ़ा–232)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –4–हि०–8–सफ़ा–392)

➡ हज़रत ज़ियाद बिन उलासा फ़रमाते हैं मैंने हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को देखा जब ज़ियाद ने उनको मुआ़विया की तरफ़ भेजा (उनकी कैफ़ियत ये थी कि) उनको ऊँट के साथ एक जानिब–

बाँधा गया था और उनके पाँव एक तरफ़ लटक रहे थे (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/175–ह०–5973)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) ने लोगों से पूछा कि क्या हुज्र बिन अ़दी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई और उनको बेड़ियों के साथ दफ़न किया गया था तो लोगों ने कहा हाँ फिर आपने फ़रमाया खुदा की क़सम वो हुज्जत क़ायम कर गये। (तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12––सफ़ा–226) (तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि०–4–हि०–8–स०–390)

हुज्र बिन अ़दी की शहादत पर इब्ने उ़मर का रोना

➡ हज़रत नाफेअ़ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के पास भेजा जा रहा था तो लोग बहुत हैरान थे और पूछते थे कि हुज्र का कुसूर क्या है ये ख़बर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) तक पहुँची वो उस वक़्त बाज़ार में किसी जगह रुपोश थे आपने रुपोशी ख़त्म की और लोगों के दरमियान आ गये और जब वो वापस जा रहे थे तो मैं उनकी फूट फूट कर रोने की आवाज़ सुन रहा था। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/176–ह०–5975) (तारीख़ इब्ने कसीर–उर्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि०–4–हि०-8–स––392) (तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12-सफ़ा-228)(तारीख़े इस्लाम–इमाम ज़हबी–अ़रबी–जि०–4-सफ़ा-194)(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला-अ़रबी–जि०–3–सफ़ा–466, 467)

हुज्र की शहादत पर उम्मुल मोमिनीन को बहुत सदमा पहुँचा

➡ हज़रत सईद बिन मुसय्यब मर'वान का ये बयान नक़ल करते हैं कि मर'वान कहता है कि मैं मुआ़विया के हमराह उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उम्मुल मोमिनीन ने कहा कि ऐ मुआ़विया तूने हुज्र बिन अ़दी और उनके साथियों का क़त्ल किया है और उनके साथ तूने बहुत ज़्यादती की है इसके बाअ़द रावी ने पूरा क़िस्सा बयान किया।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/179–ह०–5984)
(इब्ने हजर अस्क़लानी–अल असाबा फ़ी तमइजुस्सहाबा-उर्दू–जि०–1–सफ़ा–582–रक़म–1631)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –4–हि०–8–स०–392)
(तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12–सफ़ा-226, 228)
(तारीख़े इस्लाम़–इमाम ज़हबी–अ़रबी–जि०–4–सफ़ा-194)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जि०–3–सफ़ा–466, 467)

➡ हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बहुत आ़बिद ज़ाहिद, सालेह मोमिन और मुहिब्बे अह्ले बैत थे उनकी शहादत की ख़बर जब लोगों को पहुँची तो उन्हें बहुत शाक़ गुज़रा और जब ये ख़बर मदीना मुनव्वरा पहुँची तो उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को बहुत ग़म पहुँचा फिर जब अमीर मुआ़विया उम्मुल मोमिनीन से मिलने आया

तो आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने मुअ़ाविया से बहुत सख़्त लहज़े में कहा क्या तुम्हें इस बात का ख़ौफ़ न हुआ कि मैं एक शख़्स को तेरे क़त्ल के लिये बिठा दूँगी जो मेरे भाई मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) के क़ातिल को क़त्ल करेगा और तुमने मेरे भाई को क़त्ल किया था और हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) और उनके साथियों को क़त्ल करने में तुम्हारा तहम्मुल कहाँ गया था तुम्हें खुदा का डर नहीं लगा और मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि मेरे बाद कुछ लोग क़त्ल किये जायेंगे जिनकी वजह से अल्लाह तअ़ाला और आसमान वाले नाराज़ होंगे मुअ़ाविया ने कहा कि मैं अमान वाले घर में दाख़िल हुआ हूँ और मेरा व हुज्र का मुअ़ामला छोड़ दीजिये यहाँ तक कि हम दोनों अपने रब से जा मिलें उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने मुअ़ाविया से कहा कि अब मेरे पास कभी न आना।

(मुस्नद अहमद–7/21–ह०–16957)

(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/385–ह०–8038)

(अल इस्तिअ़ाब–अ़रबी–जि०–2-सफ़ा–387)

(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–उ़र्दू–जि०–1–हि०–2-सफ़ा-526-रक़म–1093)

(इब्ने हजर अस्क़लानी–अल असाबा फ़ी तमइजुस्सहाबा-उ़र्दू–जि०–1-सफ़ा–582–रक़म–1631)

(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जि०–4–हि०–1–सफ़ा–101,102)

(तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12-सफ़ा–229)

(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –4–हि०–8–स०–392)

हुज्र बिन अ़दी के एक साथी को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया गया

➡ हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के साथियों में एक अ़ब्दुर्रहमान बिन हस्सान भी थे कि जिनको ज़िन्दा गाढ़ दिया गया मुआ़विया ने उनसे पूछा कि अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के बाब में तेरा क्या क़ौल है उन्होंने कहा बेहतर है कि ये बात मुझसे न पूछो फिर मुआ़विया ने कहा जब तक तू ये नहीं बतायेगा मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा उन्होंने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि वो ज़िक्रे खुदा करने वाले और हक़ पर हुक्म करने वाले थे और अ़द्ल के क़ायम रखने वाले थे और लोगों से दर गुज़र करने वाले थे और फिर मुआ़विया ने इनको ज़ियाद के पास भेज दिया और उसे लिख भेजा कि तेरे भेजे हुये लोगों में सबसे बदतर यही है और तुम इसको ऐसी सज़ा देना जिसका वो सज़ावार है और बहुत बुरी तरह इसको क़त्ल करना ज़ियाद के पास जब ये पहुँचे तो इनको ज़िन्दा गाढ़ दिया गया।

(तारीख़े तबरी–उर्दू–जि०–4–हि०–1–सफ़ा–100)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उर्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –4–हि०–8–स०–390)
(तारीख़े इबने ख़ल्दून–उर्दू–जि०–2–सफ़ा–490)

मौला अ़ली पर तबर्रा करोगे तो छोड़ दिये जाओगे वरना क़त्ल किये जाओगे

➡ हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) वो सहाबी हैं जो मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बहुत मुहब्बत करते थे और ये जंगे सिफ़्फ़ीन व जंगे जमल–

में मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) व उनके साथियों को गिरफ़्तार करके शाम पहुँचा दिया गया तो मुआ़विया की तरफ़ से उनके सामने दो बातें रखी गईं और उनसे मुतालबा किया गया कि अगर वो अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बेज़ारी का इज़्हार कर दें और वो (मआ़ज़अल्लाह) अ़ली पर लाअ़नत करें और जिस शख़्स ने ऐसा किया उसे छोड़ दिया जायेगा और जिसने ऐसा न किया उसे क़त्ल कर दिया जायेगा इसके जवाब में हुज्र बिन अ़दी और उनके साथियों ने कहा कि जिस बात की तरफ़ तू हमें दाअ़वत दे रहा है उसके मुक़ाबले में तलवार की धार पर ठहरना हमारे लिये बहुत आसान है अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और आपके वसी मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को राज़ी करना हमें आग में दाख़िल होने से ज़्यादा महबूब है पस कुछ लोगों ने इन्कार किया तो वो क़त्ल हो गये और कुछ लोगों ने क़त्ल हो जाने के डर की वजह से उनका मुतालबा मन्जूर कर लिया तो वो बच गये हुज्र बिन अ़दी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ सात अफ़राद को क़त्ल कर दिया गया।

(इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–5–सफ़ा–242)
(तारीख़े इस्लाम़–इमाम ज़हबी–अ़रबी–जि०–4–सफ़ा–194)
(तारीख़े इब्ने ख़ल्दून–उ़र्दू–जि०–2–सफ़ा–489)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जि०–3–सफ़ा–24)
(तारीख़ मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12–सफ़ा–222)
(मुख़्तसर–तारीख़े दमिश्क़–अ़रबी–जि०–6–सफ़ा–241)
(अल कामिल–फ़ी तारीख़–अ़रबी–3/335)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जि०–4–हि०–1–सफ़ा–98, 99)

मुआ़विया ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का क़त्ल किया

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को मुआ़विया लाअ़नती और मर'वान ने शहीद किया था क्योंकि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा इनकी मुख़ालिफ़त किया करती थीं क्योंकि इनके आअ़माल अच्छे नहीं थे कि अमीर मुआ़विया जब यज़ीद मरदूद के वास्ते बैअ़त लेने की ग़रज़ से मदीना गया और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम), हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, हज़रत जुबैर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को आज़ुरदाह किया यानी उन्हें नाराज़ व रंजीदा किया तो इस पर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने इस पर ऐअ़तराज़ किया और मलामत की तो मुआ़विया लाअ़नती ने एक दिन उन्हें दाअ़वत के बहाने से बुलाया और पहले से एक गढ्ढा खोदकर उसमें नेज़े तलवारें, छुरियाँ वग़ैराह रख दी और उसको तिनको से पाट दिया और उसके ऊपर एक फ़र्श बिछा दिया और उसके ऊपर एक कुर्सी रख दी उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा जब तशरीफ़ लाईं तो उनको उसी पर बिठाया उनका बैठना था कि वो नीचे गिर पड़ीं जिससे उनको शदीद चोटें आईं जो ठीक न हुईं और आपकी वफ़ात हो गई आप हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की मेहबूब तरीन अज़वाज में से हैं आपकी वफ़ात 58 हि० में हुई (कौकिबे दुर्रि–फ़ी फ़ज़ाइले अ़ली–उ़र्दू–जि०–1–सफ़ा-570) (तारीख़े इब्ने ख़ल्दून–उ़र्दू–जि०–2-सफ़ा–506, 507) (तारीख़े इस्लाम़–मुअर्रिखुल इस्लाम–अकबर शाह ख़ाँ–नजीबाबादी–उ़र्दू–जि०–1-सफ़ा–657)

हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) का क़ातिल मुआ़विया

➡हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम ने देखा कि अमीर मुआ़विया हुकूमत की तलब में बेइख़्तियार है और इस मुआ़मले में मुसलमानों का खून बहेगा इसलिये हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने मुआ़विया से सुलह की और हुकूमत उसके हवाले करके आप मदीना मुनव्वरा चले गये इससे भी अमीर मुआ़विया की तस्कीन न हुई और हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) की जान के पीछे पड़ा रहा और अमीर मुआ़विया ने अपने दिल में ये बात ठान ली थी कि वो अपने बेटे यज़ीद (मरदूद लई़न जहन्नमी) को वली अ़हद बनायेगा यानी बादशाहे वक़्त का होने वाला जानशीन और वो लोगों से यज़ीद के लिये बैअ़त लेगा और मुआ़विया ये अच्छी तरह से जानता था कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के जीते जी मुआ़विया ये कार्यवाही नहीं कर सकता था इसलिये मुआ़विया रात दिन इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के दफ़इ़या की तदबीरें सोचता रहता था यानी हज़रत इमाम हसन को कैसे दफ़ाअ़ करें और उन्हें कैसे दूर करें और किस तरह उन्हें रास्ते से हटायें इसका तोड़ क्या है आख़िर कार एक तदबीर सोचकर मुआ़विया ने मर‘वान बिन हकम को मदीना भेजा और ये वो ही मर‘वान था जिसे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और शेख़ैन ने जिला बदर किया हुआ था

तो मुआ़विया ने एक रुमाल में ज़हर रखकर मर‘वान के हवाले किया और उससे कहा कि तुम इस ज़हर को

जुअ़दा बिन्ते अशअ़त को पहुँचादो और उससे कहना कि अगर तुमने ये ज़हर हसन (अ़लैहिस्सलाम) को दे दिया तो मुआ़विया तुम्हें पचास हज़ार दिरहम और एक रिवायत में है कि एक लाख दिरहम इनआ़म देगा और यज़ीद से तुम्हारा निकाह करा देगा पस मर'वान मदीने गया और जुअ़दा बिन्ते अशअ़त को फ़रेब दिया और जुअ़दा ने ज़हर हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम को दे दिया जिससे उनकी अंतड़ियों के टुकड़े टुकड़े हो गये और आप वफ़ात पा गये फिर अमीर मुआ़विया ने एक लाख दिरहम जुअ़दा बिन्ते अशअ़त को भेजे और अपने बेटे यज़ीद से कहा कि जुअ़दा बिन्ते अशअ़त से निकाह करले तो उसने कहा कि जुअ़दा ने फ़रज़न्दे रसूल से वफ़ा न की तो उससे और किसी को नेकी व ख़ैर की क्या तवक्कौ हो सकती है और एक रिवायत में है कि मुआ़विया ने जुअ़दा से कहा कि मुझे यज़ीद की ज़िन्दगी अ़ज़ीज़ है अगर उसके साथ तेरी शादी कर दी गई तो तेरे हाथों उसकी जान भी जा सकती है आपकी वफ़ात 28 सफ़र सन 50 हिज्री में हुई उस वक़्त आपकी उ़म्र सैंतालीस 47 साल थी।

(कौकिबे दुर्रि–फ़ी फ़ज़ाइले अ़ली–उ़र्दू–सफ़ा–569, 570)
(इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा–उ़र्दू–सफ़ा–190)
(तारीख़े अबुल फ़िदा–उ़र्दू–सफ़ा–164)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जि०–1–हि०–2–सफ़ा–363)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उ़र्दू–सफ़ा–261)
(मिरअतुल असरार–उ़र्दू–सफ़ा–199)
(सैयद मुहम्मद बिन मुबारक किरमानी-सियारुल औलिया –उर्दू–सफ़ा–50)
(शवाहिदुन नबूवत–उ़र्दू–सफ़ा–303)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –8–स०–62)

हज़रत इमाम हसन की वफ़ात पर मुआ़विया ने ख़ुशी का इज़हार किया

➡ हज़रत मिक़दाम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के पास हाज़िर थे तो मुआ़विया ने कहा कि हसन वफ़ात पा गये तो हज़रत मिक़दाम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तो एक शख़्स ने कहा कि क्या तुम इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो तो हज़रत मिक़दाम (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जवाब दिया हाँ क्यों नहीं ये तो एक बड़ी मुसीबत है क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत इमाम हसन को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और फ़रमाया हसन मुझसे है

इसके बाअ़द क़बीला बनू असद के एक आदमी ने कहा (मआ़ज़ अल्लाह) कि हसन एक दहकता हुआ कोयला था जिसे अल्लाह ने बुझा दिया हज़रत मिक़दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने मुआ़विया लईन से कहा कि मैं आज तुम्हें गुस्सा दिलाकर रहूँगा और तुम्हें वो कुछ सुनाऊँगा जो तुम्हें बुरा लगे फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा ऐ मुआ़विया अगर मैं सच कहूँ तो मेरी तस्दीक़ करना और अगर ग़लत कहूँ तो तरदीद कर देना तो मुआ़विया ने कहा ठीक है ऐसा ही करूँगा फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम जानते हो कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मर्द को सोना पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है मुआ़विया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर–

पूछता हूँ कि क्या हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने रेशम पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है तो मुआ़विया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दरिन्दों की खालें पहनने व उन पर सवार होने से मनाअ़ फ़रमाया है मुआ़विया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा कि अल्लाह तअ़ाला की क़सम ऐ मुआ़विया ये तीनो काम तेरे घर में ही होते हैं और मैंने ये तीनो काम तेरे घर में होते हुये देखा है इस पर मुआ़विया ने कहा कि ऐ मिक़दाम मुझे माअ़लूम था कि मैं तुमसे हरगिज़ बच नहीं सकता।

(अबू दाऊद–सुनन–4/193–ह०–4131)

(अबू दाऊद–सुनन अ़रबी–4/432–ह०–4128)

(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जि०–3––सफ़ा–158,159)

मज़कूरा हदीस में जैसा कि एक शख़्स ने कहा कि क्या तुम इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो तो ये शख़्स अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान हरामी था जैसा कि मुस्नद अहमद और तबरानी मुअ़जम कबीर वग़ैराह में लिखा है कि मुआ़विया ने कहा क्या तुम इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो और हज़रत मिक़दाम का मुआ़विया को जवाब देना कि ऐ मुआ़विया तेरे घर में तीन काम ऐसे होते हैं जो कि नाजाइज़ व हराम हैं ये भी इसी तरफ़ इशारा करता है कि वो शख़्स मुआ़विया ही था जिसने कहा था कि तुम हज़रत इमाम हसन की वफ़ात को मुसीबत समझते हो और मुआ़विया को इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) की वफ़ात मुसीबत न लगी यानी उसे किसी क़िस्म का रंजो ग़म न हुआ बल्कि उसे तो–

बहुत खुशी हुई और उसने खुशी का इज़हार भी किया इसका ज़िक्र इन्शा अल्लाह तआ़ला आगे आयेगा और मुआ़विया के सामने जब एक असदी शख़्स ने कहा कि हसन एक दहकता हुआ कोयला था जिसे अल्लाह ने बुझा दिया तो अमीर मुआ़विया ने उस असदी शख़्स से कुछ भी नहीं कहा बल्कि चुपचाप सुनता रहा तो क्या ये बात मुआ़विया की इज़हारे खुशी की दलील नहीं है कि एक बादशाह के सामने इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम के मुताअ़ल्लिक़ कोई बद कलामी और नाज़ेबा अल्फ़ाज़ कहे और बादशाह ख़ामोश सुनता रहे तो क्या ये बात मुआ़विया की खुशी के इज़हार की दलील नहीं है और अल्लाह तआ़ला हज़रत मिक़दाम को जज़ा-ए-ख़ैर अ़ता फ़रमाये और उनके दरजात बुलन्द फ़रमाये कि वो एक ज़ालिम बादशाह मुआ़विया के सामने बिल्कुल भी न डरे और उसके सामने हक़ बात कह दी

➡ हज़रत मिक़दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अमीर मुआ़विया के पास हाज़िर थे तो मुआ़विया ने कहा कि हसन वफ़ात पा गये हैं तो हज़रत मिक़दाम ने ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' पढ़ा तो मुआ़विया कहने लगा क्या तुम इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो तो हज़रत मिक़दाम ने जवाब दिया हाँ क्यों नहीं ये तो एक बड़ी मुसीबत है क्योंकि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत इमाम हसन को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और फ़रमाया कि हसन मुझसे है। (मुस्नद अहमद-7/141-ह०-17321)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/307-ह०-2562)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर अ़रबी-3/34-ह०-2628)
(कंज़ुल उ़म्माल-7/298-ह०-37657)
(तारीख़े मदीना दमिश्क़-अ़रबी-जि०-60-सफ़ा-187,188)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) जब मुआ़विया के पास वफ़्द लेकर गये तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले गये वहाँ उन्होंने मुआ़विया को नाअ़रा-ए-तकबीर बुलन्द करते देखा और लोग भी नाअ़रा-ए-तकबीर बुलन्द कर रहे थे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) की आमद की ख़बर जब मुआ़विया को हुई तो वो और भी ज़्यादा खुश हुआ मुआ़विया ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से कहा कि मैंने सुना है कि हसन वफ़ात पा गये हैं तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा जी हाँ लेकिन क्या तुम हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात की ख़बर सुनकर नाअ़रा-ए-तकबीर बुलन्द कर रहे थे तो मुआ़विया ने जवाब दिया जी हाँ

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ये सुनकर बोले कि हसन (अ़लैहिस्सलाम) की मौत से तुम्हारी मौत मुअख़्ख़र नहीं हो सकती और न ही उनके ज़ेरे ज़मीन जाने से तुम्हारे ज़ेरे ज़मीन जाने में ताख़ीर हो सकती है और हम पर एक मुसीबत उस वक़्त आयी थी कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वफ़ात पाई थी और उसके बाअ़द हज़रत मौला अ़ली ने वफ़ात पाई और हमने ये सब मसाइब रज़ाये इलाही समझ कर बर्दाश्त किये हैं इब्ने अ़ब्बास की ज़बान से ये सुनकर मुआ़विया बोला कि ऐ इब्ने अ़ब्बास तुम्हारा बुरा हो मैंने तो कुछ ऐसी बात नहीं की है कि तुम इतना बिगड़ रहे हो एक रिवायत में है कि इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया ऐ मुआ़विया हज़रत इमाम हसन की वफ़ात पर तुम इतना खुश न हो खुदा की क़सम तुम भी मरोगे और एक रिवायत में है कि-

जब मुआ़विया को हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) की वफ़ात की ख़बर हुई तो मुआ़विया बहुत खुश हुआ और सज्दा-ए-शुक्र बजा लाया।
(तारीख़े मसऊ़दी-उ़र्दू-जि०-1-हिस्सा-2-सफ़ा-365, 366)
(तारीख़े अबुल फ़िदा-उ़र्दू-सफ़ा-164)
(इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा-उ़र्दू-सफ़ा-190)
(अख़बारुत तिवाल-उ़र्दू-जि०-1-सफ़ा-400)
(हयातुल हेवान-उ़र्दू-जि०-1-सफ़ा-202, 203)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी-तज़किरातुल ख़वास-उ़र्दू-सफ़ा-264)

हजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात पर मुआ़विया का इज़हारे खुशी करना और उनकी वफ़ात को मुसीबत न समझना और उन्हें जलता हुआ कोयला क़रार देने पर राज़ी रहना ये मुआ़विया की मुनाफ़िक़त व नासबियत और इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम से बुग्ज़ व अ़दावत को ज़ाहिर करता है

➡ अहले हदीस आ़लिम शमसुल हक़ फ़रमाते हैं कि सबसे ज़्यादा हैरत अंगेज़ बात अमीर मुआ़विया की है कि उसने अह्ले बैत अत्हार की क़दरो मन्ज़िलत नहीं जानी हत्ता कि उसने हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) की वफ़ात को बड़ी मुसीबत नहीं जाना और अल्लाह तआ़ला हज़रत मिक़दाम को जज़ा-ए-ख़ैर दे और उनसे राज़ी हो क्योंकि वो सच व हक़ के इज़हार से ख़ामोश न रहे और कामिल व मुख़लिस मोमिन की यही शान होती है
(औनुल माअ़बूद शरह अबू दाऊद-जि०-11-सफ़ा-155)

जब हज़रत मिक़दाम ने रेशम पहनने व सोना पहनने और दरिन्दों की खालें पहनने और उन पर सवार होने

की मुमानियत बयान फ़रमाई तो अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान चुपचाप सुनता रहा यानी उसने इस बात को तसलीम किया कि उसके घर में ये तीनो काम होते हैं और अमीर मुआ़विया ये जानता था कि तीनो कामों को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मनाअ़ फ़रमाया था।

➡ अबू शेख़ हुनाई ताबई कहते हैं कि मैं मुआ़विया के पास चन्द सहाबा किराम की मजलिस में बैठा हुआ था तो अमीर मुआ़विया ने उनसे पूछा कि आप लोगों को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या आप लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मर्दों को सोना पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है उन्होंने जवाब दिया जी हाँ फिर मुआ़विया ने कहा कि मैं भी इसकी गवाही देता हूँ फिर मुआ़विया ने कहा कि मैं आप लोगों को अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या आप लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने रेशम पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है उन्होंने जवाब दिया जी हाँ फिर मुआ़विया ने कहा कि मैं भी इसकी गवाही देता हूँ फिर मुआ़विया ने कहा कि क्या आप लोग जानते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने दरिन्दों की खालें पहनने व उन पर सवार होने से मनाअ़ फ़रमाया है उन्होंने जवाब दिया जी हाँ फिर मुआ़विया ने कहा कि मैं भी इसकी गवाही देता हूँ फिर मुआ़विया ने कहा कि क्या आप लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने सोने व चाँदी के बर्तन में पानी पीने से मनाअ़ फ़रमाया उन्होंने कहा जी हाँ।
(मुस्नद अहमद–7/22–ह०–16958)
(मुस्नद अहमद–7/32–ह०–16989)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली का क़ातिल मुआ़विया

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) जब नमाज़ के लिये खड़े हुये तो अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम जो मस्जिद के एक गोशे में पहले से छुप गया था और मुन्तज़िर रहा फिर जैसे ही अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) नमाज़ में मशगूल हुये अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम ने अपनी ज़हर आलूदा तलवार से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर वार किया अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम ने मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के कहने से मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तलवार से वार किया जिससे आप शदीद ज़ख़्मी हो गये और आप तीन रोज़ तक ज़िन्दा रहकर जुमआ़ के दिन रमज़ानुल मुबारक की 21 तारीख़ 40 हिजरी को अपने रब से जा मिले और इस तरह से आप शहीद हुये आपने 63 साल की ऊ़म्र में शहादत पाई।
(सियारुल औलिया–ऊ़र्दू–सफ़ा–47)
(फ़वाइदुल फ़वाद–ऊ़र्दू–सफ़ा–431)
(कौकिबे दुर्रि–फ़ी फ़ज़ाइले अ़ली–ऊ़र्दू–सफ़ा–567, 568)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
(सूरह–निसा–4/93)

जैसा कि अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वो मुद्दतों रहेगा तो ज़रा सोचो और तसव्वुर करो कि अह्ले बैत अत्हार और बेशुमार सहाबाकिराम व ताबईन हज़रात का क़ातिल मुआ़विया के अन्जाम का आ़लम क्या होगा कितना भयानक और ख़ौफ़नाक होगा और मुआ़विया लाअ़नती पर दोज़ख़ मे इंतिहाई सख़्त तरीन अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा जिसका अंदाज़ा लगाना मुहाल है फिर अगर कोई मुनाफ़िक़ व नासबी मुआ़विया के दफ़ाअ़ में इस आयत की तावील करे तो उसकी तावील मुआ़विया को कोई नफ़ाअ़ और फ़ायदा नहीं देगी क्योंकि हदीस पाक में है कि ऐसे क़ातिल की तौबा भी कुबूल नहीं होती इसका ज़िक्र इन्शा अल्लाह आगे सफ़हात पर आयेगा।

हदीस पाक में है कि अहले बैत अत्हार से बुग्ज़ व अ़दावत रखना अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल से बुग्ज़ व अ़दावत रखना है और ऐसा शख़्स जहन्नमी और अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ है ख़्वाह वो आ़म मुसलमान हो या सहाबी–ए–रसूल हो और ऐसे शख़्स का ख़ात्मा ईमान व इस्लाम पर नहीं होता बल्कि वो मुनाफ़िक़ या काफ़िर होकर मरता है तो जब अह्ले बैत अत्हार से बुग्ज़ व अ़दावत रखने वाला जहन्नमी और अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ है तो जो अहले बैत अत्हार का क़ातिल हो तो आख़िरत में उसका हाल क्या होगा।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

बेशक अल्लाह तअ़ाला मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को दोज़ख़ में जमाअ़ करने वाला है।
(सूरह–निसा–4/140)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औ़रतों से आतिशे दोज़ख़ का वाअ़दा फ़रमां रखा है वो उसमें हमेशा रहेंगे वो (आग) उन्हें काफ़ी है और अल्लाह ने उन (सब) पर लाअ़नत की है और उनके लिये हमेशा बरक़रार रहने वाला अ़ज़ाब है।
(सूरह-तौबा-9/68)

अह्ले बैत अत्हार से बुग्ज़ रखने वाला दोज़ख़ी

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अ़स्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे जब आप चौथी रकअ़त में थे तो हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) तशरीफ़ लाये और ये दोंनों शहज़ादे हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की पुश्त पर सवार हो गये जब हुजूर अ़लैहिस्सलाम ने सलाम फेरा तो दोनों को अपने आगे बिठाया इमाम हसन को दांयी जानिब व इमाम हुसैन को बांयी जानिब बिठाया फिर फ़रमाया ऐ लोगों क्या तुम्हें लोगों में सबसे बेहतर नाना और नानी के लिहाज़ से उनके मुताअ़ल्लिक़ न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में बेहतर खाला के लिहाज़ से न बताऊँ क्या तुम्हें लोगों में से बेहतर वालिदा और वालिद के लिहाज़ से न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में से बेहतर चचा के लिहाज़ से न बताऊँ क्या मैं तुम्हें लोगों में से बेहतर फूफी के लिहाज़ से न बताऊँ और फिर आपने फ़रमाया कि वो दोंनों हसन व हुसैन हैं इन दोंनों के नाना रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) इन दोंनों की नानी हज़रत खदीजातुल कुबरा हैं इनकी-

वालिदा ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा हैं इन दोंनों के वालिद हज़रत मौला अ़ली है इन दोंनों की खाला ज़ैनब व रुकय्या और कुलसुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की शहज़ादियाँ हैं इन दोनों के नाना नानी जन्नती इन दोंनों के वालिदैन जन्नती इन दोंनों के चचा जन्नती इन दोंनों की फूफी जन्नती इन दोंनों की खाला जन्नती और ये दोंनों जन्नती हैं इन दोंनों से जो मुहब्बत करेगा वो जन्नती है और इनसे जो बुग्ज़ रखेगा वो जहन्नमी है (मुअ़जम कबीर–2/345-ह०-2616)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/64–ह०–2682)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/92–ह०–6462)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/213–ह०–15097)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/173, 13/229)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/226, 230)
(कंजुल उ़म्माल–6/411–ह०–34278)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया खुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है हम अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला कोई एक शख़्स भी ऐसा नहीं है कि जिसे अल्लाह तआ़ाला जहन्नम में न डाले।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/295–ह०–4717)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/159–ह०–6978)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)
(कंजुल उ़म्माल–6/405–ह०–34204)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर-

कोई शख़्स काबातुल्लाह के पास रुक्ने यमानी व मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़ा होकर नमाज़ पढ़े व रोज़ा भी रखे फिर वो इस हाल पर मरे कि मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता था तो बेशक वो जहन्नम में जायेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/293–ह०–4712, 4717)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/176–ह०–11412)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/194–ह०–15006)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/536)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस शख़्स पर अल्लाह तआ़ला का सख़्त अ़ज़ाब होगा जो मेरे अहले बैत के बारे में मुझे तकलीफ़ पहुँचायेगा।
(कंजुल ऊ़म्माल–6/399–ह०–34143)

➡ हज़रत इब्ने ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के कॉंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ये मेरा चचाज़ाद भाई है और मेरे लख़्ते जिगरों का वालिद है ऐ अल्लाह जो भी इससे बुग्ज़ व अ़दावत रखे तू उसे औंधा मुँह करके दोज़ख़ में डाल।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/420–ह०–5762)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/288–ह०–32944)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जुमाअ़ के दिन खुत्बे में इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि हज़रत अ़ली से मुहब्बत करो क्योंकि इनसे मुहब्बत मोमिन ही करता है

और मुनाफ़िक़ इनसे बुग़्ज़ रखता है पस जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग़्ज़ रखा उसने मुझसे बुग़्ज़ रखा और जिसने इनसे बुग़्ज़ रखा तो अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़ाब देगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/352–ह०–1066)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह अ़ली की मदद फ़रमां और अ़ली पर रहम फ़रमां और ऐ अल्लाह उससे मुहब्बत फ़रमां जो अ़ली से मुहब्बत करे और तू उससे नाराज़ होजा जो अ़ली से बुग़्ज़ रखे।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/289–ह०–32951)

अह्ले बैत अत्हार से बुग़्ज़ रखने वाला काफ़िर

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम ने (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो वो शहीद मरा जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो वो मग़फ़ूर मरा (यानी उसकी मग़फिरत हो गई) और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो ईमान पर मरा और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो जन्नत में इस तरह संवार कर ले जाया जायेगा कि जैसे दुल्हन अपने दूल्हा के घर संवर कर जाती है और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उसकी क़ब्र पर अल्लाह तआ़ला रहमत के फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमायेगा और उसके लिये जन्नत की दो खिड़कियाँ खोल दी जायेंगी–

और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा उसे मल्कुल मौत फिर मुन्कर नकीर जन्नत की खुश ख़बरी सुनायेंगे जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो सुन्नत वल जमाअ़त पर मरा और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो रोज़े महशर इस तरह आयेगा कि उसकी पेशानी पर आयते रहमत लिखी हुई होगी और जो शख़्स आले मुहम्मद के बुग्ज़ पर मरा वो जब क़यामत के दिन आयेगा तो उसकी आँखों के दरमियान ये लिखा होगा कि वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरुम है और वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूँघेगा और जो शख़्स आले मुहम्मद के बुग्ज़ पर मरा वो कुफ़्र पर मरा। (तफ़्सीर–रुहुल बयान–7/81)
(हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी–14,15)
(तफ़्सीर–कबीर–9/595)
(तफ़्सीर–तिबयानुल कुरान–10/585)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने हज़रत अ़ली से हसद किया तो उसने मुझसे हसद किया और जिसने मुझसे हसद किया तो उसने कुफ़्र किया (कंजुल उ़म्माल–6/296-ह०-33050)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसे क़यामत के दिन यहूदियों के साथ जमाअ़ करेगा चाहे वो रोज़े नमाज़ का पाबन्द क्यों न हो और खुद को मुसलमान गुमान करता हो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/233–ह०–4002)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/195–ह०–15009)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप मेरे भाई हैं और मेरे वज़ीर हैं मेरे वाअ़दे पूरे करते हैं और मेरी ज़िम्मेदारी अदा करते हैं पस जो मेरी ज़िन्दगी में तुमसे मुहब्बत करे तो वो मन्ज़िल तक पहुँच गया और जो मेरे बाअ़द तुमसे मुहब्बत करे तो अल्लाह तआ़ला अमन व ईमान पर उसका ख़ात्मा फ़रमायेगा और क़यामत के दिन मैं उसे अमन अ़ता फ़रमाऊँगा और ऐ अ़ली जिसकी मौत तेरी अ़दावत पर आये वो जाहलियत की मौत मरेगा और इस्लाम में जो उसने अ़मल किये होंगे तो अल्लाह तआ़ला उसका मुहासिबा फ़रमायेगा।
(कंजुल उ़म्माल–6/289–ह०–32952)

अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हम (अहले बैत) से बुग्ज़ व हसद रखने वाला क़यामत के दिन आग के चाबुकों से हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/209–ह०–2405)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/195–ह०–15008)
(कंजुल उ़म्माल–6/405–ह०–34203)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया ऐ अ़ली तू और तेरे मददगार रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे

(नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/474–ह०–941)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319–ह०–998)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125–ह०–14749)

हलाक़त व बर्बादी है उस शख़्स के लिये जो अहले बैत से बुग्ज़ रखे

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है और तेरा महबूब मेरा महबूब है और मेरा महबूब अल्लाह का महबूब है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और उसके लिये हलाकत (बर्बादी) है जो मेरे बाअ़द तुम्हारे साथ बुग्ज़ रखे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257–ह०–4640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210–ह०–8325)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है जो तुझसे मुहब्बत करेगा वो मुझसे मुहब्बत करेगा और जिसने तुझसे मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की तेरा महबूब मेरा महबूब तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और तेरा दोस्त मेरा दोस्त और मेरा दोस्त अल्लाह तआ़ला का दोस्त है और तुम्हारा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला

का दुश्मन है और हलाकत व बर्बादी है उस शख़्स के लिये जो मेरे बाअ़द तुमसे बुग्ज़ रखेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257–ह०–4640)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/361–ह०–1092)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210–ह०–8325)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/74)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने मुझे ख़बर दी है कि खुश बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से मुहब्बत करता है और बद बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से बुग्ज़ रखता है।
(कंजुल उ़म्माल–7/75–ह०–36458)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/182)

मुआ़विया ने बुस्र बिन अरताह के ज़रिये सैंकड़ों क़त्ल कराये

➡ अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने अपने दौरे बादशाहत में एक कुरैशी शख़्स को भेजा जिसे बुस्र बिन अरताह कहा जाता था अमीर मुआ़विया ने बुस्र बिन अरताह से कहा कि मैं तुम्हें एक इलाक़ा देता हूँ सो तुम अपने लश्कर के साथ निकलो और फिर तुम जब मुल्के शाम से बाहर निकल जाओ तो तुम तलवार निकाल लेना सो जो शख़्स मेरी बैअ़त से इन्कार करे तो उसे क़त्ल कर देना यहाँ तक कि मदीना पहुँचो फिर जब मदीने में दाख़िल हो तो उस शख़्स को क़त्ल कर देना जो मेरी बैअ़त से इन्कार करे।
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर अ़रबी–2–सफ़ा–145)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर उ़र्दू–1–सफ़ा–534)

➡ बुस्र बिन अरताह अमीर मुआ़विया के तरफ़दारों व हिमायतियों में से था जंगे सिफ़्फ़ीन में ये मुआ़विया के साथ था अमीर मुआ़विया ने इसे 40 हिज्री के आगाज़ में मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा और यमन की तरफ़ र'वाना किया और उसे हुक्म दिया कि जो लोग ताअ़ते अ़ली पर क़ायम हों उन्हें चुन चुन कर मारना।
(इब्ने असाकिर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–अ़रबी–जि०–10–सफ़ा–145)
(इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जि०–1–सफ़ा–409)
(तहज़ीबुल कमाल–फ़ी असमाइ र्रिजाल–अ़रबी–जि०–4–सफ़ा–61)
(मुख़्तसर तारीख़ दमिश्क़–अ़रबी–जि०–5–सफ़ा–183)

➡ अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने बुस्र बिन अरताह को मदीना भेजा वहाँ से वो मक्का और यमन गया जहाँ उसने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के भतीजों को उनकी माँ के सामने ज़िब्हा कर दिया तो उनकी माँ दीवानी हो गई।
(इमाम बुख़ारी–तारीख़ सग़ीर–जि०–1–सफ़ा–111)
(इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जि०–1–सफ़ा–409)
(इमाम ज़हबी–तहज़ीब तहज़ीबुल कमाल–अ़रबी–जि०–2–सफ़ा–17) (तहज़ीबुल कमाल–फ़ी असमाइ र्रिजाल–अ़रबी–जि०–4–सफ़ा–64)

➡ अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने बुस्र बिन अरताह को हिजाज़ (मुल्के अ़रब का वो हिस्सा जिसमें मक्का, मदीना और तॉयफ़ शामिल हैं) और यमन को हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के क़ब्ज़े से निकालने

के लिये भेजा था फिर मुआ़विया ने हमादान पर क़ब्ज़ा करने के लिये मामूर किया इस ज़ालिम बुस्र ने लोगों पर इंतिहाई जुल्म व ज़्यादती की इसने यमन में हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के गर्वनर हज़रत उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के दो छोटे छोटे बच्चों को पकड़कर क़त्ल कर दिया इन बच्चों की माँ इस सदमे से दीवानी हो गई बनू किनाना की एक औ़रत जो ये जुल्म देख रही थी चीख़ उठी कि मर्दों को तुमने क़त्ल किया और अब इन बच्चों को किसलिये क़त्ल कर रहे हो बच्चे तो जाहलियत में भी नहीं मारे जाते थे।
(तारीख़े तबरी–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा–175)
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–146)
(तारीख़ इब्ने कसीर–अ़रबी–अल बिदाया वन निहाया–जिल्द–8–सफ़ा–90)

➡ बुस्र बिन अरताह ने मुसलमान औ़रतों को लोंडी बनाया और बाज़ार में फ़रोख़्त के लिये खड़ा कर दिया और उसने लोगों पर इंतिहाई जुल्म किया।
(इमाम ज़हबी–तारीख़े इस्लाम–अ़रबी–जि०–5–सफ़ा–369)

➡ इमाम ज़हबी फ़रमाते हैं कि बुस्र बिन अरताह ने हज़रत उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के दो बच्चों का क़त्ल किया और उसने अम्र बिन अरका सक़फ़ी को क़त्ल किया और उसने हमादान के दो सौ से ज़्यादा लोगों का क़त्ल किया और उनके बच्चों का भी क़त्ल किया।
(इमाम ज़हबी–तारीख़े इस्लाम–अ़रबी–जि०–5–सफ़ा–369)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–410)

अमीर मुआ़विया हरामी जहन्नमी काफ़िर लाअ़नती का दफ़ाअ़ करने वालों से मेरा ये सुवाल है कि मुआ़विया की बैअ़त से इन्कार कर देने वालों को क़त्ल कर देना हत्ता कि माअ़सूम छोटे छोटे बच्चों का क़त्ल कर देना ये किस शरीअ़त में है और ऐसा वहशत नाक क़त्ले आ़म कराने वाला क्या मुसलमान हो सकता है हालांकि ऐसे इंतिहाई मज़मूम बुरे फ़ेअ़ल और गुनाहे कबीरा का इरतिकाब करने वाला और कर‘वाने बिला शको शुबाह जहन्नमी है और नारे दोज़ख़ उसका दायमी ठिकाना है और अगर नासबियों के नज़दीक बैअ़त से इन्कार कर देने वालों को क़त्ल कर देना जाइज़ है तो फिर सबसे पहले मुआ़विया का क़त्ल होना चाहिये था क्योंकि उसने ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की बैअ़त से इन्कार किया था और बाग़ी हो गया था।

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर फ़रमाया कि तुम्हारे ख़ून व तुम्हारे माल और तुम्हारी इ़ज़्ज़तें तुम पर इसी तरह हराम हैं कि जैसे आज के दिन की हुरमत है जैसे इस महीने की हुरमत है जैसे इस शहर की हुरमत है तुम मेरे बाअ़द कुफ़्र में मत लौट जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारते फिरो। (हाकिम-5/178-हदीस न०-5982) तो माअ़लूम हुआ कि मुसलमानों का नाहक़ क़त्ल करने व कर‘वाने वाला काफ़िर है।

मुआ़विया ने हज़रत मालिक बिन हारिस अश्तर का क़त्ल कर‘वाया

➡ हज़रत मालिक बिन हारिस अश्तर (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) ये ताबईन में से थे मगर ये रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हयाते मुबारका में ही ईमान ले आये थे मगर ये किसी वजह से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ियारत न कर सके जिस तरह हज़रत उवैस करनी अपनी माँ की ख़िदमत की मसरुफ़ियत की वजह से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ियारत नहीं कर सके और ये अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के मशहूर असहाब में से थे और ये जंगे जमल व जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हमराह शरीक हुये थे और तमाम हालातो वाक़्आ़ात का मुशाहदा किया था अमीर मुआ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान के हुक्म से इनका क़त्ल किया गया और ज़हर आलूद शहद पीने से आपकी वफ़ात हुई हज़रत मौला अ़ली ने इन्हें मिस्र का वाली बना दिया था हज़रत अ़ली ने जब इन्हें मिस्र की तरफ़ भेजा तो इनके पहुँचने से पहले ही मुहम्मद बिन अबूबक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) क़त्ल हो चुके थे

हज़रत मौला अ़ली ने मालिक अश्तर के बारे में अहले मिस्र की तरफ़ लिखा कि मैंने तुम्हारी तरफ़ अल्लाह तआ़ाला की शमशीरों में से एक शमशीर भेजी है पस अगर वो तुमसे मदद माँगे तो तुम उनकी मदद करो और अगर वो तुमको ठहरने का हुक्म दें तो तुम ठहर जाओ हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र के क़त्ल के बाद हज़रत मालिक बिन हारिस अश्तर हज़रत मौला अ़ली की तरफ़ से एक पूरा लश्कर और मिस्र की गवर्नरी का तक़र्रुर नामा लेकर निकले हज़रत अश्तर ने जब मिस्र र'वानगी की तैयारी की तो मुआ़ाविया के जासूसों ने मुआ़ाविया को इसकी जानकारी दी कि हज़रत अ़ली ने मिस्र की हुकूमत अश्तर को दी है मुआ़ाविया जो कि

मिस्र पर निगाहें लगाये हुये था इसलिये मुआ़विया को अश्तर की इमारत बहुत शाक़ गुज़री क्योंकि मुआ़विया जानता था कि अगर मालिक बिन हारिस अश्तर मिस्र पहुँच गये तो ये मुहम्मद बिन अबूबक्र से ज़्यादा सख़्त साबित होंगे और अहले यमन उनमें से हर किसी से ज़्यादा तेज़ी के साथ अश्तर की तरफ़ आयेंगे इसलिये मुआ़विया ने एक अपने जान पहचान वाले शख़्स को इनआ़म व इकराम का लालच दिया और उसकी ज़मीन का लगान दस साल के लिये मुआ़फ़ कर देने का उससे वाअ़दा किया और उससे कहा तुम मालिक बिन हारिस अश्तर को किसी भी तरह खाने में ज़हर दे दो तो वो इस बात पर राज़ी हो गया

हज़रत अश्तर ने कल्ज़ुम नामी जगह पर उस शख़्स की इन्किसारी व उसके ज़्यादा इसरार को देखकर उसके यहाँ क़याम किया उस दिन आप रोज़े से थे और जब इफ़्तार का वक़्त आया तो उसने पानी के साथ ज़हर आलूद शहद पीने के लिये आपको दिया वो शहद पीते ही आपकी जान चली गई और आप दुनिया से रुख़सत हो गये और इस तरह आपने शहादत पाई मुआ़विया शामियों से कहा करता था कि अ़ली ने मालिक अश्तर को मिस्र र'वाना किया है तुम लोग अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि अल्लाह तुम्हें उससे बचाये फिर शामी रोज़ाना अल्लाह तआ़ला से हज़रत मालिक अश्तर के लिये बददुआ़ करते थे चन्द रोज़ बाद जिस शख़्स ने अश्तर को ज़हर दिया था वो मुआ़विया के पास आया और मुआ़विया को मालिक अश्तर की मौत की ख़बर दी तो मुआ़विया ने इस खुशी में लोगों को खुत्बा दिया कि अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के दो दाहिने हाथ थे जिसमें से एक हाथ सिफ़्फ़ीन के रोज़ काट दिया गया था यानी

हज़रत अ़म्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और दूसरा हाथ आज काट दिया गया है यानी हज़रत मालिक बिन हारिस अश्तर का और उस वक़्त हालात ऐसे थे कि मुआ़विया जब अपने आदमी हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के इलाक़े में लूटमार के लिये भेजता तो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम उसकी मुदाफ़अ़त के लिये अपने आदमी र'वाना कर देते थे।
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–3–हिस्सा–2–सफ़ा–296)
(तारीख़े याअ़कूबी–उ़र्दू–जिल्द–2–सफ़ा–317, 318)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–1–हिस्सा–2-सफ़ा–344)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उ़र्दू–सफ़ा–136)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उ़र्दू–जिल्द–2–सफ़ा–154)
(तारीख़े अहमदी–उ़र्दू–सफ़ा–212)
(तबक़ात इब्ने साअ़द–उ़र्दू–जिल्द–3–हिस्सा–6–सफ़ा–143)

हज़रत इमाम नसाई की मौत का वाक़ेआ़

➡हज़रत इमाम अ़ब्दुर्रहमान नसाई जब मनाक़िबे मौला अ़ली (ख़साइसे अ़ली) की तसनीफ़ से फ़ारिग़ हुये तो आपने चाहा कि इस किताब को दमिश्क़ की जामाअ़ मस्जिद में पढ़कर सुनाऊँ ताकि बनू उमय्या की सल्तनत के असर से अ़वाम में नासबियत की तरफ़ जो रुजहान पैदा हो गया है उसकी इस्लाह हो जाये जैसे ही आपने इस किताब को पढ़ना शुरु किया और थोड़ा सा हिस्सा ही पढ़ पाये थे कि मुहिब्बाने मुआ़विया में से एक शख़्स ने पूछा कि मुआ़विया के मनाक़िब के बारे में भी आप ने कुछ लिखा है हज़रत इमाम नसाई ने जवाब दिया कि मुआ़विया के लिये यही काफ़ी है कि वो बराबर छूट जाये और मुआ़विया के मनाक़िब कहाँ हैं यानी उसकी–

कोई फ़ज़ीलत नहीं है और मुझे मुआ़विया के मनाक़िब में सिवाए इस हदीस " ला अश्बअ़ल्लाहु बतनहू " के कोई सहीह हदीस नहीं मिली ऐ अल्लाह मुआ़विया का पेट कभी न भरे इमाम नसाई के ये अल्फ़ाज़ सुनते ही मुआ़विया के लोग आप पर टूट पड़े और शीआ़ शीआ़ कह कर मारना पीटना शुरु कर दिया इमाम नसाई के ऐसी शदीद चोटें पहुँची कि आप बेहोश हो गये ख़ादिम आपको घर ले आये फिर आपने कहा कि मुझे मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँचा दो ताकि मेरा इन्तिक़ाल मक्का में या उसके रास्ते में हो कहते हैं कि आपकी वफ़ात मक्का में हुई और आपको सफ़ा मर'वाह के दरमियान दफ़न किया गया। (नसाई–ख़साइसे अ़ली–सफ़ा–14)
(नसाई–सुनन–उ़र्दू–मुक़द्दमा–जिल्द–1–सफ़ा–40, 41)

➡इमाम नसाई को मुहिब्बाने मुआ़विया व दुश्मनाने अ़ली ने सिर्फ़ इसलिये शहीद कर दिया कि इमाम नसाई ने मुआ़विया के फ़ज़ाइल में कोई हदीस पेश नहीं की और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत में एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई पस इस वजह से उनको मारा पीटा गया और उनके जिस्म के नाजुक हिस्सों को सख़्त चोट पहुँचाई गई जिसकी वजह से आप वफ़ात पा गये इस वाक़अ़ा को इमाम इब्ने जोज़ी, इमाम इब्ने असाकिर इमाम ज़हबी व इमाम इब्ने कसीर और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी वग़ैराह ने ज़िक्र किया है।
(इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–13–सफ़ा–156)
(मुख़्तसर तारीख़ दमिश्क़–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–102)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जि०–14–सफ़ा–129) (तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि०–11–सफ़ा–235) (अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस–बुस्तानुल मुहद्दिसीन–उ़र्दू–सफ़ा–321)

मुआ़विया की हुकूमत जुल्म व तशद्दुद और क़त्लो ग़ारात पर मुश्तमिल थी

➡हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दे रब्बे काअ़बा एक तवील हदीस में फ़रमाते हैं कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास गया तो वो ख़ाना-ए-काअ़बा के साये में बैठे हुये वाअ़ज़ फ़रमां रहे थे और लोग उनके नज़दीक जमाअ़ थे तो मैंने उनसे कहा कि आपका चचाज़ाद मुआ़विया हमें हुक्म देता है कि हम आपस में एक दूसरे का माल नाजाइज़ तरीक़े से खायें और एक दूसरे को क़त्ल करें जबकि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है 'ऐ ईमान वालो तुम आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ तरीक़े से न खाओ और न एक दूसरे को क़त्ल करो' (सूरह-निसा-4/29) फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह घड़ी भर ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की इताअ़त के कामों में मुआ़विया की इताअ़त करो और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी के कामों में नाफ़रमानी करो। (मुस्लिम-सहीह-उ़र्दू-3/713-ह०-4776)
(अबू दाऊद-सुनन-उ़र्दू-4/263-ह०-4248)
(मुस्नद अहमद-उ़र्दू-3/506-ह०-6503)
(इब्ने अबी शैबा-उ़र्दू-11/521-ह०-38264)

➡रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ मुआ़विया जब तू बादशाह हो जाये तो नेक काम करना और अल्लाह से डरना और इन्साफ़ से काम करना नीज़ फ़रमाया उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब अल्लाह तआ़ला तुझे हुकूमत अ़ता फ़रमायेगा और उसमें फ़सादात होंगे और फ़सादात होंगे और फ़सादात होंगे इस कलमे में इस तरफ़ इशारा है-

कि मुआ़विया की हुकूमत तसल्लुत यानी ज़ोर व क़ब्ज़ा से मुनअ़क़िद होगी बैअ़त के ज़रिये मुनअ़क़िद न होगी और उसकी सीरत शेख़ैन के मुवाफ़िक़ न होगी और वो ख़िलाफ़त इमामे वक़्त से बग़ावत के बाअ़द मुनअ़क़िद होगी इसी लिये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये तीन मर्तबा फ़रमाया फ़सादात फ़सादात फ़सादात। (शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी–इज़ालतुल ख़फ़ा अ़न ख़िलाफ़तुल खुल्फ़ा–उ़र्दू-जि०-2-सफ़ा-371,372)

➡ हज़रत सफ़ीना से कहा गया कि बनू उमय्या ये दाअ़वा करते हैं कि ख़िलाफ़त उनमें है तो हज़रत सफ़ीना ने फ़रमाया कि वो झूटे हैं बल्कि वो बदतरीन बादशाहों में से बादशाह हैं और पहला बादशाह अमीर मुआ़विया है (तिर्मिज़ी–सुनन–2/111–ह०–2226)
(इब्ने अबी शैबा–11/62–ह०–37157)

सरों को काटने का वहशियाना तरीक़ा मुआ़विया के दौरे हुकूमत में शुरु हुआ

➡ अमीर मुआ़विया के दौरे हुकूमत में लोगों के नाहक़ क़त्ल करके उनके सरों को काटकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाने और इन्तिक़ाम के जोश में लाशों की बे–हुरमती करने का ज़ालिमाना और वहशियाना तरीक़ा जो ज़माना जाहलियत में राइज था जिसे इस्लाम ने मिटा दिया था वो तरीक़ा मुआ़विया के दौरे हुकूमत में शुरु हुआ जैसे मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को गधे की खाल में लपेट कर जलाया गया और सबसे पहला सर जो ज़माना–ए–इस्लाम में काटकर ले जाया गया वो हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का सर था इमाम अहमद–

बिन हम्बल ने अपनी मुस्नद में सहीह सनद के साथ ये रिवायत नक़्ल की है और इब्ने साअ़द ने भी इसे तबक़ात में नक़्ल किया है कि जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सर काटकर लाया गया और दो आदमी झगड़ते हुये अमीर मुआ़विया के पास आये और उनमें से हर एक का ये दाअ़वा था कि उसने हज़रत अम्मार बिन यासिर को शहीद किया है हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र कहने लगे कि तुम्हें तो चाहिये कि एक दूसरे को मुबारक बाद दो क्योंकि मैंने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना है कि अम्मार को बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तो मुआ़विया कहने लगा कि ऐ अ़ब्दुल्लाह तुम हमारे साथ क्या कर रहे हो तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ने फ़रमाया कि एक मर्तबा मेरे वालिद (अम्र बिन आस) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से मेरे सामने मेरी शिकायत की तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया था कि ज़िन्दगी भर अपने बाप की इताअ़त करना उसकी ना फ़रमानी न करना इसलिये मैं तुम्हारे साथ हूँ लेकिन मैं लड़ाई में शरीक नहीं होता।

(मुस्नद अहमद–उ़र्दू–3/517–ह०–6538)
(मुस्नद अहमद–उ़र्दू–3/641–ह०–6929)
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–147)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उ़र्दू–सफ़ा–118)
(तबक़ात इब्ने साअ़द–उ़र्दू–जि–2–हि०–3–सफ़ा–158)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और उनके रुफ़क़ा के साथ भी सख़्त वहशत व जाहलियत बरती गई इनके सरों को काट कर मक्का से

मदीना और मदीना से दमिश्क ले जाये गये और जगह जगह उनकी नुमाइश की गई और मक्का मुकर्रमा में इन हज़रात की लाशें कई रोज़ तक सूली पर लटकी रहीं हालांकि इस्लाम में किसी काफ़िर के साथ भी ऐसा बरताव करना क़तअ़न जाइज़ नहीं है।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–148)

➡ इसी तरह हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) का सर काटकर करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से दमिश्क़ ले जाया गया और आपके जसदे मुबारक पर घोड़े दौड़ाये गये हत्ता कि उनके सीना–ए–अक़्दस और पुश्त मुबारक को चूर चूर कर दिया गया और आपके सर मुबारक की कूफ़ा में नुमाइश की गई।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–147)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–4–हि०–1–सफ़ा–232 ता 235)
(तारीख़ इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–उ़र्दू–जि० –8–सफ़ा–260, 261)

➡ एक ताबई हजरत ज़ियाद बिन जारियाह जो वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में दमिश्क़ की मस्जिद में दाख़िल हुये वहाँ जुमअ़ा की नमाज़ अ़स्र के वक़्त हुई तो उन्होंने इसकी शिकायत की और कहा कि खुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के बाअ़द कोई नबी नहीं भेजा है जो जुमअ़ा की नमाज़ अ़स्र के वक़्त पढ़ने का हुक्म देता हो तो उनको महल में ले जाया गया और उनका क़त्ल करके उनका सर काटकर मस्जिद में फेंक दिया गया।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जिल्द– –2–सफ़ा–505)

अमीर मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान ने अपने गवर्नरों को कानून से बालातर क़रार दिया था और उनके जुल्म व ज़्यादतियों पर शरई अहकाम के मुताबिक़ कार्यवाही करने से साफ़ इन्कार कर दिया था मुअ़ाविया का एक गवर्नर अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ग़ैलानी एक मर्तबा बसरा में मिम्बर पर खुत्बा दे रहा था एक शख़्स ने दौराने खुत्बा में उसको कंकर मार दिया इस पर अ़ब्दुल्लाह ने उस शख़्स को गिरफ़्तार कराया और उसका हाथ कटवा दिया हालांकि शरअ़ई कानून की रु से ये ऐसा जुर्म न था कि जिस पर हाथ काट दिया जाये जब मुअ़ाविया के पास इस्तिग़ासा किया गया यानी ये बात बताई गई और फ़रियाद की गई और ये दाअ़वा किया गया कि ये शरअ़न नाजाइज़ है तो अमीर मुअ़ाविया ने कहा कि मैं हाथ की दीयत (जुर्माना) को बैतुल माल से अदा करूँगा मगर मेरे हाकिम से क़िसास लेने की कोई सबील नहीं है यानी मेरे हाकिम से क़िसास नहीं लिया जायेगा।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–145)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–4–हि०–1–सफ़ा–113, 114)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–अल बिदाया वन निहाया–जि० –8–स०–97)

➡ ज़ियाद बिन सुमय्या जो अबू सुफ़ियान की नाजाइज़ औलाद था जो तॉयफ़ की एक लौंडी सुमय्या नामी के पेट से पैदा हुआ था अबू सुफ़ियान ने तॉयफ़ की इस सुमय्या नामी लौंडी से ज़िना किया था जिससे ज़ियाद पैदा हुआ था ज़ियाद को अमीर मुअ़ाविया ने बसरे के साथ साथ कूफ़ा का भी गवर्नर मुक़र्रर किया तो ज़ियाद जब खुत्बा देने के लिये कूफ़ा की मस्जिद के मिम्बर पर खड़ा हुआ और खुत्बा देना शुरु किया तो कुछ लोगों ने उस पर कंकर फेंके तो उसने मस्जिद के दर'वाज़े बन्द

करा दिये और कंकर फेंकने वाले उन तमाम लोगों को कि जिनकी ताअ़दाद 30 से 80 तक बयान की जाती है गिरफ़्तार कराके उसी वक़्त उनके हाथ कटवा दिये उन पर न कोई मुक़द्दमा चलाया गया और न ही वो किसी अदालत में पेश किये गये और ज़ियाद ने अपने हुक्म से उन लोगों के हाथ कटवा दिये जिसके लिये क़तअ़न कोई शरअ़ई जवाज़ न था।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–145)
(तारीख़े तबरी–उर्दू–जिल्द–4–हि०–1–सफ़ा–73)

नोट– जब मस्जिदों के मिम्बरों पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को दौराने खुत्बा गालियाँ दी जाती थीं और उन पर तबर्रा व लाअ़न ताअ़न किया जाता था तो मस्जिद में मौजूद मुहिब्बाने अ़ली ऐसा करने वालों पर कंकरियाँ फेंका करते थे और इहतिजाज करते थे इसका ज़िक्र इन्शा अल्लाह आगे सफ़हात पर आयेगा।

–: हज़रत तल्हा की शहादत :–

➡ हज़रत क़ैस बिन अबू हाज़िम फ़रमाते हैं कि मैंने जंगे जमल में मर'वान बिन हकम को देखा जब उसने हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को तीर मार कर शहीद किया हज़रत तल्हा शदीद दर्द की हालत में तस्बीह पढ़ते रहे हत्ता कि वो शहीद हो गये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/695–ह०–5590, 5591)

➡अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने मरवान बिन हकम को मदीने का गवर्नर मुक़र्रर किया था।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–89)
(तारीख़े खुल्फ़ा–इमाम जलालुद्दीन सयूती–उ़र्दू-सफ़ा-197)

लोगों का क़त्ल व उन पर जुल्म करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वईद

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तअ़ाला ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
(सूरह–निसा–4/93)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बस मलामत के मुस्तहिक़ तो वो हैं जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं और फ़साद फ़ैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह–शूरा–42/42)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
यही वो लोग हैं कि जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़फ़िरत के बदले अ़ज़ाब कैसा अजीब है ये उनका हौसला कि दोज़ख़ का अ़ज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार हैं। (सूरह–बक़राह–2/175)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
तुम ऐसे लोगों की तरफ़ मत झुकना जो जुल्म कर रहे हैं वरना तुम्हें आतिशे (दोज़ख़) आ छुयेगी और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई भी मददगार न होगा और फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी।
(सूरह–हूद–11/113)

➡ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सरकशी व क़तअ़ रहमी की सज़ा दुनिया में भी मिलेगी व आख़िरत में भी मिलेगी। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/308–ह०–2511)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से बढ़कर है।
(नसाई–सुनन–6/40–ह०–3995)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/414–ह०–4349)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह तअ़ाला हर गुनाह को मुअ़ाफ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो शिर्क की हालत में मर गया या जिसने किसी मुसलमान का क़त्ल किया हो नीज़ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन को क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तअ़ाला उसका उसका कोई अ़मल कुबूल नहीं करेगा न निफ़िल न फ़र्ज़। (अबू दाऊद–सुनन–4/277–ह०–4270) (इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

मुअ़ाविया काफ़िर मलऊ़न इस बात को जानता था कि जिसने किसी मुसलमान को नाहक़ बिला वजह क़त्ल किया तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें–

रहेगा व उस पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब होगा और उस पर अल्लाह तआला लाअनत करेगा और अल्लाह तआला ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है जैसा कि कुरानो सुन्नत से ये वाज़ेह और साबित है फिर भी मुआविया ने हुकूमत व इक्तिदार हासिल करने की ख़ातिर अहले बैत और सहाबा ताबईन का नाहक़ क़त्ल किया और उन पर इन्तिहाई जुल्म व ज़्यादती की मुआविया को दुनिया व मताये दुनिया और हुकूमत व इक्तिदार हासिल करने व ख़्वाहिशाते नफ़्स की तकमील और उसके ग़लबे ने मुआविया को अन्धा कर दिया था

➡ हज़रत अबू इदरीस कहते हैं कि मैंने मुआविया को जो बहुत कम हदीस बयान करता था कहते हुये सुना कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये इरशाद फ़रमाते हुये सुना कि उम्मीद है कि अल्लाह तआला हर गुनाह को मुआफ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे। (मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

चुनांचा हदीस पाक में है कि अहले बैते रसूल से बुग्ज़ रखना अल्लाह तआला व उसके रसूल से बुग्ज़ रखना है और अहले बैते रसूल को अज़्ज़ियत देना अल्लाह तआला व उसके रसूल को अज़्ज़ियत देना है और ऐसा शख़्स जहन्नमी और अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ है और अमीर मुआविया ने तो अहले बैते रसूल पर इंतिहाई जुल्म और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की शदीद तकलीफ़ें पहुँचाईं हत्ता कि बाअ़ज़ अहले बैत अत्हार का क़त्ल कर'वाया जो कुतुबे अहादीस व कुतुबे तारीख़ से साबित है तो–

मुआ़विया काफ़िर मलऊ़न जहन्नम के सबसे ख़तरनाक गढ़े में होगा और उस पर सख़्त तरीन अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा और उसका दायमी ठिकाना दोज़ख़ होगा जिसमें वो हमेशा जलता रहेगा और उस पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़ज़ाब मुसल्लत किये जायेंगे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जो लोग अल्लाह व उसके रसूल को अज़्ज़ियत देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया व आख़िरत में लाअ़नत भेजता है और उसने उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सूरह–अहज़ाब–33/57)

अमीर मुआ़विया की मौत कुफ़्र व मुनाफ़िक़त पर हुई

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि–अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा में से 12 अफ़राद मुनाफ़िक़ हैं और उनमें से आठ ऐसे हैं जो जन्नत में दाख़िल न होंगे और न उसकी खुश्बू पायेंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाये यानी वो कभी भी जन्नत में दाख़िल न होंगे और उनमें से 8 ऐसे हैं कि उनके शर से निजात के लिये तुम्हारी किफ़ायत आग से जलते हुये दीये की तरह सुर्ख़ फोड़ा करेगा जो उनके कन्धों के दरमियान ज़ाहिर होगा। (मुस्लिम–सहीह–5/284–ह०–7035, 7036)
(मिश्कात–3/461–ह०–5917)
(मुस्नद अहमद–8/85–ह०–18503)

➡ हज़रत अबू बुरदा फ़रमाते हैं कि मैं मुआ़विया के

पास था कि उसकी पीठ में एक पीप व गन्ध से भरा हुआ फोड़ा निकला हुआ था तबीब उसका इलाज कर रहा था और वो शदीद दर्द से तड़प रहा था तो मैंने मुआ़विया से कहा कि अगर हमारा कोई जवान इस तरह चीख़े तो हम तो उस पर बहुत गुस्सा करते हैं। (मुन्ज़री–अत्तरग़ीब वत्तरहीब–अ़रबी–3/–ह०-3904,3412)

➡ हज़रत अ़ली बिन जॉद फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम मुआ़विया इस्लाम पर नहीं मरा।
(इमाम अहमद बिन हम्बल–मसाइल–2/154–रक़म–1866)

➡ हज़रत क़ैस बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ से मिस्र के गवर्नर थे आपने मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान को एक ख़त के जवाब में लिखा कि ऐ मुआ़विया तू एक बुत परस्त और बुत परस्त का बेटा है तू इस्लाम में मजबूरी से दाख़िल हुआ और खुशी से निकल गया तेरे ईमान ने तुझे मुक़द्दम नहीं किया और हम उस दीन के मददगार थे जिससे तू निकल गया और तू दीन के दुश्मनों में दाख़िल हो गया।
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–3–सफ़ा–39, 40)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने अमीर की इताअ़त से बालिश्त भर भी बाहर निकला तो वो जाहलियत की मौत मरेगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/379–ह०–7053)

और मुआ़विया हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की इताअ़त से बाहर निकल गया था और बाग़ी हो गया था

रसूलुल्लाह ने मुआ़विया को बद्दुआ़ दी और वो कुबूल हुई

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा था कि इतने में नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तशरीफ़ लाये और मुझसे फ़रमाया कि जाओ और मुआ़विया को बुला लाओ मैं गया फिर लौटकर आया और मैंने कहा वो खाना खाते हैं आपने मुझसे फिर फ़रमाया कि जाओ और मुआ़विया को बुला लाओ तो मैं गया फिर लौटकर आया और मैंने कहा कि वो खाना खाते हैं फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह उसका पेट कभी न भरे। (मुस्लिम–सहीह–5/73–ह०–6628)
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6/सफ़ा–158)

➡ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ये दुआ़ कुबूल हुई इसके बाद मुआ़विया का पेट कभी नहीं भरा कि वो दिन में सात बार खाना खाता था जिसे एक प्याले में लाया जाता था कि जिसमें बहुत सारा गोस्त होता था और हलवा और बहुत सारे फल भी खाता था और वो कहता था खुदा की क़सम इतना खाने के बाअ़द भी मैं सेर नहीं हुआ अलबत्ता थक गया हूँ। (तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू-अल बिदाया वन निहाया–जि०–4–हि०–8–स०–455) (इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जि०–3-सफ़ा–123, 124) (इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ़–सुबलुल हुदा–उ़र्दू–जि०-10/सफ़ा-798) (बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जि०–6/सफ़ा–159) (शरह–ज़रक़ानी-अलमवाहिबुल लदुनिया-अ़रबी-जि०-12/सफ़ा-42)

➡ कुछ लोग मुआ़विया के दफ़ाअ़ में कहते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बददुआ़ भी रहमत होती है मगर वो आधी हदीस बयान करते हैं और आधी खा जाते हैं और मुकम्मल हदीस ये है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह मैं अपनी उम्मत में से जिसके ख़िलाफ़ बद्दुआ़ करूँ और वो उसका अह्ल न हो तो ऐ अल्लाह मेरी बद्दुआ़ को उसके लिये पाकीज़गी और गुनाहों से सफ़ाई और कुर्बत का ज़रिया बनादे क़यामत के दिन ऐ अल्लाह उसे अपना कुर्ब अ़ता करना।
(मुस्लिम–सहीह–5/73–ह०–6627)
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6–सफ़ा–159)

तो माअ़लूम हुआ कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बद्दुआ़ उसके हक़ में रहमत होती है जो उसका अह्ल न हो और जो उसका अह्ल है तो बद्दुआ़ उसके हक़ में रहमत नहीं होती बल्कि वो अपनी तकमील को पहुँचती है जैसा कि मुआ़विया के हक़ में की गई बद्दुआ़ पूरी हुई और मुआ़विया का पेट कभी नहीं भरा इसी तरह से सैंकड़ों हदीसें मौजूद हैं कि जिनमें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने कई लोगों के लिये बद्दुआ़ की और वो अपनी तकमील को पहुँची।

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन माअ़क़िल फ़रमाते हैं मैंने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ फ़जिर की नमाज़ पढ़ी तो आपने दुआ़ कुनूत पढ़ी और उसमें ये कलिमात कहे ऐ अल्लाह मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान और अम्र बिन आस को हलाक करदे।
(इब्ने अबी शैबा–2/552–ह०–7123)

➡ एक मर्तबा अबू सुफ़ियान बिन हर्ब गधे पर सवार आ रहा था अमीर मुआ़विया उसे खींच रहा था और यज़ीद उसे हांक रहा था तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सवार होने वाले और खींचने वाले और हांकने वाले पर अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत हो।
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–7–हिस्सा–2–सफ़ा–196)

➡ जब हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से मिस्र के गवर्नर हुये तो आपने मुआ़विया के पास एक ख़त भेजा जिसमें लिखा था कि ये ख़त मुहम्मद बिन अबू बक्र की तरफ़ से मुआ़विया गुमराह की तरफ़ भेजा जाता है और ऐ मुआ़विया मौला अ़ली हर लिहाज़ से सबसे अफ़ज़ल हैं और तू तू है और तू लईन इब्ने लईन है और तू और तेरा बाप हमेशा हुजर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लिये मुसीबतों के ख़्वाहां रहे और नूरे खुदा को बुझाने के लिये कोशां रहे तेरा बुरा हो तू खुद को हज़रत मौला अ़ली के बराबर ख़्याल करता है हज़रत मौला अ़ली हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के वसी और आपके बेटों के बाप हैं और सब मुसलमानों के मौला हैं और तू उनका दुश्मन और दुश्मन का बेटा है पस तू बातिल के साथ जिस हद तक कुव्वत रखता है दुनिया से फ़ायदा हासिल कर ले और अम्र बिन आस तुझे गुमराही में और बढ़ा देंगे अ़नक़रीब तुझे माअ़लूम हो जायेगा कि अच्छी आ़क़िबत किसके लिये है।
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–3–सफ़ा–32, 33)

➡ हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल हमीद जो कि सिक़ा रा'वी

हैं मुहद्दिसीन ने इनसे रिवायत ली हैं और ये सियाह सित्ता के रिजाल में से हैं आप ऐअ़लानियाँ मुआ़विया की तौहीन किया करते थे।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जि०–1 –सफ़ा–550)

–: मुआ़विया बाग़ी था :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम मस्जिदे नबवी की ताअ़मीर के लिये एक एक ईंट उठाकर ला रहे थे जबकि हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दो दो ईंटें उठा कर ला रहे थे अचानक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का गुज़र उनके पास से हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनके सर से गुबार झाड़ते हुये फ़रमाया अफ़सोस ऐ अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा और अम्मार उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलायेंगे और वो इन्हें दोज़ख़ की तरफ़ बुलायेंगे पस ये सुनकर हज़रत अम्मार अक्सर कहा करते थे कि मैं फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।
(बुख़ारी–सहीह–3/227–ह०–2812)
(बुख़ारी–सहीह–1/336–ह०–447)
(मुस्लिम–सहीह–5/420-ह०–7320, 7322)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1112-ह०-3800)
(मिश्कात–3/442–ह०–5878)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/691–ह०–6315)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/237–ह०–158,160)

➡ मुल्ला अ़ली क़ारी हनफ़ी मिस्कातुल मसाबीह की शरह

मिरकातुल मफ़ातीह में लिखते हैं कि मैं कहता हूँ कि अमीर मुआ़विया पर वाजिब था कि वो अपनी बग़ावत से रुजूअ़ करके ख़लीफ़ा-ए-बरहक़ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की इताअ़त की तरफ़ आ जाता और उनकी मुख़ालिफ़त छोड़ देता और ख़िलाफ़ते मनफ़िया की तलब तर्क देता मगर उसने ऐसा नहीं किया इससे तो ज़ाहिर होता है कि अमीर मुआ़विया बातिन में बाग़ी था और ज़ाहिर में सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिये ख़ूने ऊ़स्मान को ढाल बनाये हुये था चुनांचा ये हदीस जो बुख़ारी व मुस्लिम दोंनों में मौजूद है कि हज़रत अम्मार को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा उनकी पोशीदा चीज़ को ज़ाहिर करने वाली है अमीर मुआ़विया के अ़मल व र'वैये की वजह से कुरान व हदीस महजूर व मतरुक हो गये यानी अमीर मुआ़विया ने कुरान व हदीस दोनों को छोड़ दिया तर्क कर दिया और अपनी पीठ के पीछे डाल दिया (मुल्ला अ़ली क़ारी-मिरकातुल मफ़ातीह शरह -मिस्कातुल मसाबीह-ऊ़र्दू-11/45-ह०-5878)

➡ शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़तावा अ़ज़ीज़ी में लिखते हैं कि मुहिक़्क़ीन अहले हदीस ने दरयाफ़्त किया है कि मुआ़विया के हरकात शायबा नफ़्सानी से खाली न थे यानी उसमें नफ़्स का लालच शामिल था इसलिये मुआ़विया मुरतकिबे कबीरा और बग़ावत क़रार दिया जाये। (फ़तावा अ़ज़ीज़ी-ऊ़र्दू-सफ़ा-250)

मुआ़विया ने अहले शाम समेत हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की बैअ़त नहीं की फिर उनकी सिर्फ़ मुख़ालिफ़त ही नहीं की बल्कि उन पर क़त्ले उस्मान में इआ़नत (मदद) और उस पर रज़ामन्दी का इल्ज़ाम भी लगाया मगर अल्लाह तआ़ला ने उनको इस इल्ज़ाम से

बचा लिया और बनू उमय्या मौला अ़ली की तनक़ीस और उनके बारे में नाज़ेबा अल्फ़ाज़ इस्तेअ़माल करते रहे मगर इससे लोगों के दिलों में हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत बढ़ती ही गई और आपकी क़दरो मन्ज़िलत में इज़ाफ़ा होता गया बनू उमय्या हज़रत मौला अ़ली को गालियाँ देते रहे मगर वो उनका कुछ न बिगाड़ सके बल्कि उनकी शान पहले से ज़्यादा बुलन्द होती गई।

➡ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं इमाम बर हक़ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) थे और अमीर मुआ़विया बाग़ी था। (फ़त्हुल बारी–शरह सहीह बुख़ारी–रक़्म–उ़र्दू–जिल्द-1–सफ़ा–585, 586–रक़्म–428)

➡ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि हज़रत अम्मार बिन यासिर को बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तो ये हदीस इस बात पर दलालत करती है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) इमाम बरहक़ थे और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मुआ़विया के साथियों ने क़त्ल किया। (फ़त्हुल बारी–शरह सहीह बुखारी–रक़्म–उ़र्दू–जिल्द–10–सफ़ा–367–रक़्म–6588)

➡ शाह अ़ब्दुल अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि उ़ल्मा–ए–अह्ले सुन्नत का मसलक है कि अमीर मुआ़विया और उसके साथी बाग़ी थे अमीर मुआ़विया ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) जो ख़लीफ़ा बर हक़ और इमाम मुत्लक़ थे के ख़िलाफ़ बग़ावत व खुरुज किया और हदीस ऐ अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तुम उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाओगे और वो तुम्हें दोज़ख़ की तरफ़ बुलायेंगे ये हदीस जो तवातुर के

साथ शुहरत रखती है। (अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी–तकमीलुल ईमान–उ़र्दू–सफ़ा–177)

➡ शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुर्रशीद नुअ़मानी अपनी किताब हज़रत अ़ली और क़िसासे उ़स्मान में लिखते हैं कि इमाम इब्ने माजा हनफ़ी ने मुआ़विया को ज़ालिम और बाग़ी क़रार दिया है क्योंकि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में ख़लीफ़ा–ए–राशिद थे और उनसे बग़ावत करना जुर्म था। (हज़रत अ़ली और क़िसासे उ़स्मान–उर्दू–सफ़ा–33)

➡ इमाम अहले सुन्नत अल्लामा अबू शकूर मुहम्मद सालमी अपनी किताब में लिखते हैं कि मौला अ़ली से जंग करने की वजह से मुआ़विया बाग़ी था इसलिये कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि 'और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उन दोंनों मे सुलह करा दिया करो फिर अगर उनमें से एक (गिरोह) दूसरे पर ज़्यादती व सरकशी करे तो उस (गिरोह) से लड़ो जो ज़्यादती का मुरतकिब हो रहा है हत्ता कि वो हुक्मे इलाही की तरफ़ लौट आये' (सूरह–हुजुरात–49/9) पस जो हक़ पर न हो वो बाग़ी है और मुआ़विया बाग़ी था और दलील ये है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा (और जंगे सिफ़्फ़ीन में अमीर मुआ़विया के गिरोह ने आपका क़त्ल किया था) हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा ने अपने असहाबे तलामिज़ा से फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि अहले शाम अह्ले बैत से बुग्ज़ क्यों रखते हैं तो उन्होंने कहा जी नहीं तो फिर आपने फ़रमाया इसलिये कि हम ये अ़क़ीदा रखते हैं कि अगर हम उस ज़माने में होते तो हम मुआ़विया

के मुक़ाबले में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की मदद करते और हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की हिमायत में मुआ़विया से जंग करते।
(तम्हीद अबू शकूर सालमी–उ़र्दू–सफ़ा–370)

➡ शहादते उ़स्मान (अ़लैहिस्सलाम) के बाअ़द ख़िलाफ़त का हक़ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम का था जैसा कि अहले सुन्नत वल जमाअ़त का इस पर इत्तेफ़ाक़ था मगर इसके बावुजूद अमीर मुआ़विया का हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हाथ पर बैअ़त न करना व मुल्के शाम में अपनी हुक्मरानी का ऐअ़लान करना खुली हुई बग़ावत थी और मुआ़विया व उसका गिरोह बाग़ी था और मुआ़विया ज़ालिम बादशाह था।
(अशरफुल हदाया–शरह हदाया–उ़र्दू–जिल्द–9–सफ़ा–253)

मुआ़विया की ख़ता इज्तिहादी नहीं बल्कि ख़ताए मज़मूम थी

बाअ़ज़ लोग अमीर मुआ़विया के दिफ़ाअ़ में इस अम्रे बग़वत को अमीर मुआ़विया की इज्तिहादी ख़ता कहते हैं जबकि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस की रौशनी में एक बाग़ी को मुजतहिद कैसे कहा जा सकता है जिसने इमामे बर हक़ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के ख़िलाफ़ न सिर्फ़ खुरुज किया बल्कि वो उस खुरुज से तौबा करने के बजाय मरते दम तक अपने इस फ़ेअ़ले गुनाहे अ़ज़ीम पर राज़ी रहा और अपने इक़्तिदार का नाजाइज़ फ़ायदा उठाया और लोगों पर जुल्म व क़त्लो ग़ारत और कुरानो सुन्नत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की और एक जाबिर बादशाह की तरह अपनी हुकूमत के निज़ाम को चलाया।

➡ इमाम बदरुद्दीन ऐ़नी हनफ़ी सहीह बुखारी की हदीस 7083 कि अगर एक मुसलमान दूसरे के ख़िलाफ़ तलवार उठाये.....की शरह में लिखते हैं कि मैं कहता हूँ कि अमीर मुआ़विया की ख़ता को इज्तिहादी ख़ता कैसे कह सकते हैं और उसके इज्तिहाद पर दलील क्या है जबकि उसको ये हदीस पहुँच चुकी थी कि अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा और हज़रत अम्मार को मुआ़विया के गिरोह ने जंगे सिफ़्फ़ीन में क़त्ल किया (इमाम बदरुद्दीन ऐ़नी-शरह सहीह बुखारी-अ़रबी-जि० -24-सफ़ा-286)

मुआ़विया तो इज्तिहाद का अह्ल ही नहीं था क्योंकि जब उसे ये हदीस पहुँच चुकी थी कि ऐ अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तो जब मुआ़विया को ये माअ़लूम हो चुका था कि हज़रत अम्मार इमामे बरहक़ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ हैं तो उसे चाहिये था कि वो अपनी ख़ता पर रुजूअ़ करता और तौबा करता और मौला अ़ली से जंग न करता मगर मुआ़विया ने ऐसा नहीं किया बल्कि हज़रत अम्मार के क़त्ल के बाद मुआ़विया ने कहा कि मैंने हज़रत अम्मार का क़त्ल नहीं किया बल्कि अम्मार का क़त्ल तो अ़ली ने ही किया है तो उसकी ख़ता इज्तिहादी ख़ता नहीं थी बल्कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हदीस के मुताबिक़ वो बाग़ी और सहाबी-ए-रसूल के क़त्ल का मुरतकिब है जिसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वो हमेशा जलता रहेगा।

➡ मुहम्मद बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) कहते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) जब शहीद हो गये तो अम्र बिन आस के पास

अम्र बिन हज़्म आये और फिर उन्होंने कहा कि हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) शहीद हो गये हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया था कि अम्मार को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा ये सुन कर अम्र बिन आस घबराकर उठे और मुआ़विया के पास गये मुआ़विया ने पूछा तुम्हें क्या हुआ है तो अम्र बिन आस ने कहा कि हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) शहीद हो गये हैं तो मुआ़विया ने कहा अम्मार शहीद हो गये हैं लेकिन तुम्हारी ये हालत तुम क्यों घबरा रहे हो अम्र बिन आस ने कहा कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना था कि अम्मार को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तो मुआ़विया ने कहा कि तुम खुद ही अपने पेशाब में गिरते हो क्या हमने उन्हें क़त्ल किया है उन्हें तो अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) और उनके साथियों ने क़त्ल किया है और उन्होंने ही अम्मार बिन यासिर को हमारे नेज़ों के दरमियान ला डाला हम तो अपने बचाव के लिये लड़ रहे थे जिसमें वो क़त्ल हो गये जब हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को इस बात की ख़बर हुई तो आपने फ़रमाया कि अगर मैंने उनका क़त्ल किया है तो फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत हम्ज़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को क़त्ल किया है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनको कुफ़्फार के मुक़ाबले में भेजा था। (मुस्नद अहमद–7/340–ह०–17931)

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/723–ह०–5659)

(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–3–हिस्सा–2–सफ़ा–234)

(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उ़र्दू–सफ़ा-117)

(मुख़्तसर सीरते रसूल–उ़र्दू–सफ़ा–787)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस फ़रमाते हैं कि मुआ़विया जब जंगे सिफ़्फ़ीन से फ़ारिग़ होकर आ रहा था तो मैं उसके और अम्र बिन आस के दरमियान चल रहा था कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र अपने वालिद अम्र बिन आस से कहने लगे कि अब्बा जान क्या आपने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को हज़रत अम्मार के मुताअ़ल्लिक़ ये कहते हुये नहीं सुना कि अफ़सोस ऐ अम्मार तुझे एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा तो अम्र बिन आस ने मुआ़विया से कहा क्या आप इसकी बात सुन रहे हैं तो मुआ़विया ने कहा कि तुम हमेशा ऐसी ही परेशान कुन ख़बरे लेकर आते हो क्या हमने उन्हें क़त्ल किया है उन्हें तो उन लोगों ने क़त्ल किया है जो उन्हें लेकर आये थे। (मुस्नद अहमद–3/504–ह०–6499)

➡ सय्यद नसीरुद्दीन गीलानी फ़रमाते हैं कि इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ख़लीफ़ा बरहक़ थे इस पर इज्माअ़–ए–उम्मत है और मुआ़विया ने हज़रत मौला अ़ली के ख़िलाफ़ जो र'वैया इख़्तियार किया वो किसी लिहाज़ से पसंदीदा नहीं था मुआ़विया के उस रवैये को इज्तिहादी ख़ता क़रार देना ग़ौरो फ़िक्र का मक़ाम है किसी शरअ़ई मसले में इज्तिहादी ख़ता का मसला कुछ और है मगर दुनियावी व मुल्की उमूर में ऐसी इज्तिहादी ख़ता को जो मूजिबे फ़ित्ना बने उसे इज्तिहादी ख़ता व अज्रो सवाब क़रार देना नाइंसाफ़ी है और हम अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के इस तरज़े अ़मल को इज्तिहादी कारनामा समझने से क़ासिर हैं हज़रत मौलाना अ़ब्दुर्रहमान जामी फ़रमाते हैं कि एक जमाअ़त ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की बैअ़त से इन्कार किया और उस जमाअ़त ने सरकशी में ख़ता की और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम)–

हक़ पर थे और उनसे जंग करना नापसंदीदा ख़ता थी क्योंकि उस वक़्त हक़ मौला अ़ली की तरफ़ था और उनसे जंग करना ख़ता-ए-इज्तिहादी नहीं बल्कि ख़ता-ए-मुन्कर थी। (नामो नसब-उ़र्दू-सफ़ा-533)

जो लोग मुआ़विया के दिफ़ाअ़ में कहते हैं कि मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) और मुआ़विया के दरमियान जो जंग हाइल हुई थी वो खूने उ़स्मान (अ़लैहिस्सलाम) का बदला लेने की वजह से हुई थी तो मैं उनसे ये कहना चाहता हूँ कि जब मुआ़विया की हर मुल्क में मुकम्मल हुकूमत हो गई और बीस साल मुआ़विया की मुकम्मल हुकूमत रही तो फिर उसने खूने उ़स्मान (अ़लैहिस्सलाम) का बदला क्यों नहीं लिया हालांकि हक़ीक़त ये है कि मुआ़विया हुकूमत का बहुत ही ज़्यादा लालची था और खूने उ़स्मान के क़िसास को वो महज़ ढाल बनाये हुये था मुआ़विया अपनी हुकूमत के मुस्तहकम न होने से पहले खूने उ़स्मान के क़िसास का मुतालबा करता रहा और जब मुआ़विया की हुकूमत मुस्तहकम हो गई तो मुआ़विया ने हज़रत उ़स्मान अ़लैहिस्सलाम के खून का बदला नहीं लिया क्या ये मुआ़विया का ढोंग नहीं था

और जो लोग ये कहते हैं कि मुआ़विया की ख़ता इज्तिहादी थी तो मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि ये कौन सा इज्तिहाद था इज्तिहाद तो दीनी मसाइल व अहकाम में होता है जब कोई मसला कुरानो सुन्नत में न मिले या फिर उस पर इज्माअ़ क़ायम न हो तब इज्तिहाद की सूरत पैदा होती है नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील और दुनियावी मालो मताअ़ और हुकूमत व मन्सब के हुसूल के लिये ख़लीफ़ा-ए-राशिद से बग़ावत और जुल्म व तशद्दुद और क़त्लो ग़ारत करना इज्तिहाद नहीं है-

बल्कि ये हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम और अहले अत्हार से बुग्ज़ व अ़दावत और दुनियावी मालो मताअ़ और हुकूमत का हिर्स व लालच है जबकि मुज्तहिद पर वाजिब है कि जब उसे अपनी ख़ता का इ़ल्म हो जाये तो उस पर रुजूअ़ करना लाज़िम है और अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के शहीद होने के बाअ़द मुआ़विया को माअ़लूम हो गया था कि हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम हक़ पर हैं और मुआ़विया बातिल पर तो फिर मुआ़विया ने रुजूअ़ क्यों नहीं किया और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की जमाअ़त जन्नत की तरफ़ बुलाने वाली है और मुआ़विया की जमाअ़त दोज़ख़ की तरफ़ बुलाने वाली है तो ये सब कुछ जानने के बावुजूद न तो मुआ़विया ने रुजूअ़ किया और न ही तौबा की तो मुआ़विया मुज्तहिद कैसे हो गया

इज्तिहाद सिर्फ़ आ़लिमे दीन कर सकता है जिसे कुरानो सुन्नत का इ़ल्म हो और वो शरअ़ई मसाइल में इज्तिहाद करे या फिर हाकिम हो जो अपने इज्तिहाद से कोई फ़ैसला करे और मुआ़विया न तो आ़लिमे दीन था और न ही हाकिम क्योंकि उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) थे और मुआ़विया बाग़ी था।

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब हाकिम अपने इज्तिहाद से कोई फ़ैसला करे फिर अगर वो फ़ैसला सहीह हो तो उसे दो गुना सवाब मिलता है और अगर फ़ैसला करते वक़्त ग़लत कर जाये तो एक अज्र मिलता है।
(बुख़ारी–सहीह–6/528–ह०–7352)

अमीर मुआ़विया हुकूमत का हरीस और लालची था

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है उन्होंने फरमाया कि मैं हज़रत हफ़्सा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम लोगों के इज्तिमाअ़ में शिर्कत करो वो तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहे हैं और मुझे अंदेशा है कि तुम्हारे न जाने से मज़ीद इख़्तिलाफ़ होगा उनके ज़्यादा इसरार करने पर मैं इज्तिमाअ़ में गया जब लोग मुआ़विया की बैअ़त करके चले गये फिर मुआ़विया ने खुत्बा देते हुये कहा कि इस ख़िलाफ़त के मौजूअ़ पर जिसको कोई बात करनी हो तो वो अपना सर उठाये यक़ीनन हम उससे व उसके बाप से ज़्यादा ख़िलाफ़त के हक़दार हैं। (बुख़ारी–सहीह–4/249–ह०–4108)

हज़रत अ़ली का मुख़ालिफ़ बाग़ी गिरोह शैतान का गिरोह है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि हम शरीफुन्नसब हैं और हमारी नस्ल अम्बिया की नस्ल है और हमारा गिरोह अल्लाह का गिरोह है और हमारा मुख़ालिफ़ गिरोह यानी बाग़ी गिरोह शैतान का गिरोह है और जो हमें और हमारे दुश्मनों को बराबर समझे वो हममें से नहीं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/383–ह०–1160)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

सितारे ज़मीन वालों के लिये ग़र्क़ होने से बचाने वाले हैं और मेरे अहले बैत मेरी उम्मत को इख़्तिलाफ़ से बचाने वाले हैं जब कोई अ़रब का क़बीला अगर इनकी मुख़ालिफ़त करेगा वो शैतान की जमाअ़त क़रार पायेगा
(हाकिम-अल मुस्तदरक-2/294-ह०-4715)
(कंजुल उ़म्माल-6/403-ह०-34189)

बाग़ी फ़िरक़े का रसूलुल्लाह से कोई तआ़ल्लुक़ नहीं

➡हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली अ़नक़रीब एक बाग़ी फ़िरक़ा तुमसे क़िताल करेगा जबकि तुम हक़ पर होगे और उस वक़्त जो तुम्हारी मदद न करे तो उसका मुझसे कोई तआ़ल्लुक नहीं।
(कंजुल उ़म्माल-6/290-ह०-32967)

रसूलुल्लाह का अ़ली के मुख़ालिफ़ीन बाग़ी गिरोहों के बारे में ख़बर देना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत करेगी और तुम मेरे दीन पर क़ायम रहोगे व तुम मेरे तरीक़े पर जिहाद करोगे और जो तुमसे मुहब्बत करेगा वो मुझसे मुहब्बत करेगा और जिसने तुमसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और ऐ अ़ली तुम्हारी ये दाढ़ी खून से रंगीन हो जायेगी।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/282-ह०-4676, 4686)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मौला अ़ली से फ़रमाया कि तुम मेरे बाअ़द मशक़्क़त में मुब्तिला होगे तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ की कि क्या उन हालात में मेरा ईमान सलामत होगा तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अपने दीन पर सलामत रहोगे।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/278–ह०–4677)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/361–ह०–561)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/279)

जंगे जमल व जंगे सिफ़्फ़ीन के बारे में रसूलुल्लाह की पेशीनगोई

➡हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को नाकिसीन (बैअ़त को तोड़ने वाले यानी असहाबे जमल तल्हा, ज़ुबैर व आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) व क़ासितीन (बग़ावत करने वाले यानी अह्ले सिफ़्फ़ीन मुआ़विया वग़ैराह व मारिक़ीन (दीन से निकल जाने वाले यानी ख़वारिज) से जिहाद करने का हुक्म दिया था। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/277–ह०–4674)

➡हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम नाकिसीन व क़ासितीन और मारिक़ीन से गुज़र गाहों में और दरियाई रास्तों में और

पहाड़ी रास्तों में जिहाद करोगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/277–ह०–4675)

रसूलुल्लाह का फ़रमान कि अ़ली कुरान की तावील पर क़िताल करेंगे

➡ हज़रत अबू ज़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है तुम्हारे दरमियान में एक ऐसा शख़्स मौजूद है जो मेरे बाअ़द लोगों से तावीले कुरान पर क़िताल करेगा जैसे मैंने मुश्रिक़ीन से तन्ज़ीले कुरान पर क़िताल किया और वो हज़रत अ़ली हैं और वो लोग लाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने वाले होंगे उस वक़्त उनको क़त्ल करना लोगों पर शाक़ (मुश्किल, दुश्वार, नागवार) गुज़रेगा हत्ता कि वो अल्लाह के एक वली पर ताअ़न करेंगे और हज़रत अ़ली के फ़ेअ़ल पर नाराज़ होंगे जैसे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) कश्ती तोड़ने के मुआ़मले में और गुलाम को क़त्ल करने और दीवार को सीधा करने में ख़िज्र (अ़लैहिस्सलाम) से नाराज़ हुये थे हालांकि सारे काम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मर्ज़ी के मुताबिक़ ही होंगे। (कंजुल उ़म्माल–6/290–ह०–32966)
(कंजुल उ़म्माल–7/59–ह०–36347)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/111)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह थे कि–

आपका जूता मुबारक टूट गया तो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम उन जूतों को पैबन्द लगाने लगे इसलिये वो ज़रा पीछे रह गये और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) थोड़ा चले फिर फ़रमाया कि तुममें से एक शख़्स ऐसा है जो कुरान की तावील पर इस तरह लड़ेगा और क़िताल करेगा जिस तरह से मैंने कुरान के नुजूल पर क़िताल किया था तो लोग अपने अपने सर ऊँचे करने लगे उनमें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ भी थे उन्होंने अ़र्ज़ किया कि क्या वो आदमी मैं हूँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं फिर हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया क्या वो आदमी मैं हूँ तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वो जो जूतों को पैबन्द लगाने वाला है यानी अ़ली हैं फिर हमने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को ये खुश ख़बरी सुनाई लेकिन उन्होंने इस बात पर सर न उठाया और ज़रा सी भी खुशी का इज़हार न किया बल्कि यूँ लगता था जैसे वो ये बात पहले ही हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुन चुके थे।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248–ह०–4621)
(मुस्नद अहमद–5/103–ह०–11309, 11795)
(इब्ने अबी शैबा–9/507–ह०–32745)
(फ़ज़ाइले सहाबा–1/354–ह०–1071, 1083)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/123–ह०–6937)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/233–ह०–156)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/290–ह०–32964, 32965)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/278)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/76–ह०–209)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल ऊ़क़बा–1/139)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की इताअ़त मुआ़विया पर वाजिब थी

➡ हज़रत इरबाज़ बिन सारिया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें नमाज़ पढ़ाई फिर आपने अपना रुख़े अनवर हमारी तरफ़ किया और हमें वाअ़ज़ व नसीहत फ़रमाई जिससे आँखें अश्कबार हो गईं और दिल ख़ौफ़े खुदा से डर गये फिर आपने हमें वसीअ़त फ़रमाई कि तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करना और अपने हुक्काम के अहकाम को सुनना और इताअ़त करना ख़्वाह वो कोई हबशी गुलाम ही क्यों न हो क्योंकि तुममें से जो शख़्स मेरे बाअ़द ज़िन्दा रहेगा तो वो बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ देखेगा पस तुम पर मेरी व हिदायत याफ़्ता खुल्फ़ाए राशिदीन की इताअ़त लाज़िम है पस तुम उसे मज़बूती से पकड़लो।

(इब्ने माजा–सुनन–1/42–ह०–43)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/242–ह०–2676)
(अबू दाऊद–सुनन–4/506–ह०–4607)
(मिश्कात–1/91–ह०–165)
(मुस्नद अहमद–7/125–ह०–17275)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ ईमान वालो अल्लाह की इताअ़त करो व रसूल की इताअ़त करो और अपने में से (अहले हक़) साहिबाने अम्र की (यानी अपने अमीर की इताअ़त करो) फिर अगर तुम किसी मसले में बाहम इख़्तिलाफ़ कर बैठो तो उसे (मुस्तक़िल पक्के और मज़बूत फ़ैसले के लिये) अल्लाह व उसके रसूल की तरफ़ लौटा दो अगर तुम–

अल्लाह पर और योमे आख़िरत ईमान रखते हो तो यही (तुम्हारे हक़ में) बेहतर और अन्जाम के लिहाज़ से बहुत अच्छा है। (सूरह–निसा–4/59)

पस मज़कूरा कुरानो हदीस की रौशनी से ये बात सराहतन वाज़ेह तौर पर साबित हुई कि मुआ़विया पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की इताअ़त वाजिब थी और जो बात नसे कुरान और हदीस से साबित हो जाये वो दलीले क़तई होती है और इसका इन्कार करना कुफ़्र है मगर मुआ़विया ने ऐसा नहीं किया बल्कि मुआ़विया ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की इताअ़त करने के बजाए उनसे बग़ावत की जिसके नतीजे में सहाबा किराम और ताबईन हज़रात नाहक़ क़त्ल हुये और अब भी अगर कोई मुआ़विया को बाग़ी और क़त्ताल न जाने तो वो पक्का मुनाफ़िक़ और नासबी है।

मौला अ़ली की इताअ़त रसूलुल्लाह की इताअ़त है

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और जिसने अ़ली की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने अ़ली की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की (हाकिम–अल मुस्तदरक-4/247-ह०-4617)
(कंजुल उ़म्माल–6/290–ह०–32970)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/47)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली मेरा भाई है और मेरा वसी है और ख़लीफ़ा है इनकी बात सुनो और इनकी इताअ़त करो। (कंजुल ऊ़म्माल–7/62–ह०–36371)

जो अ़ली से जुदा हुआ
वो अल्लाह से जुदा हुआ

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जो तुमसे जुदा हुआ वो मुझसे जुदा हुआ और जो मुझसे जुदा हुआ वो अल्लाह से जुदा हुआ।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/288–ह०–4703)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/48)

अहले बैत अत्हार का दामन
छोड़ने वाला यक़ीनन गुमराह है

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म और हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं तुममें दो ऐसी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम लोग इनको मज़बूती से थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर एक को भी छोड़ दिया तो यक़ीनन गुमराह हो जाओगे इनमें से एक दूसरे से बड़ी अ़ज़मत वाली है एक अल्लाह तआ़ाला की किताब कुरान जो आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है इसमें हिदायत व नूर है तो अल्लाह तआ़ाला की किताब कुरान

को मज़बूती से थामे रहो और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत हैं मैं तुमको अहले बैत के बाब में खुदा की याद दिलाता हूँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अह्ले बैत की निस्बत ये जुमला तीन बार इरशाद फ़रमाया और कुरान व अहले बैत कभी आपस में जुदा न होंगे हत्ता कि ये दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास इकट्ठे आयेंगे और जो भी इनकी पैर‘वी करेगा तो वो हिदायत पर होगा और जो इनको छोड़ देगा वो यक़ीनन गुमराह हो जायेगा।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1105–ह०–3785, 3788)
(मुस्लिम–सहीह–6/93–ह०–6225, 6227)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226–ह०–4576)
(मिश्कात–3/549–ह०–6140)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/343–ह०–2612)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/63–ह०–2680)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/505–ह०–867)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/704–ह०–3439)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/327–ह०–990)
(मुस्नद अहमद–8/399–ह०–19479)
(मुस्नद अहमद–1/1370–ह०–19265)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/182–ह०–14957)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/284–ह०–123)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144–ह०–79)
(कंजुल उ़म्माल–1/259–ह०–1657)
(कंजुल उ़म्माल–7/58–ह०–36340)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से मुख़ातिब होकर

फ़रमाया ऐ अ़ली जिस ने तुझे छोड़ा उसने मुझे छोड़ा और जिसने मुझे छोड़ा उसने अल्लाह को छोड़ा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/250–ह०–4624)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/318–ह०–962)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/290–ह०–32971, 32972)

जिसने मौला अ़ली से जंग की गोया उसने रसूलुल्लाह जंग की

➡हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली, फ़ातिमा हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) तुम जिससे लड़ोगे मैं भी उससे लड़ूँगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं भी उससे सुलह करुँगा। (मिश्कात–3/553–ह०–6154)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1142–ह०–3870)
(इब्ने माजा–सुनन–1/82–ह०–145)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/294–ह०–4714)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/30–ह०–2619, 2620)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/60–ह०–5015)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/516–ह०–886)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/191–ह०–14990)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/449–ह०–1350)
(इब्ने अबी शैबा–9/534–ह०–32845)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/158–ह०–6977)
(कंजुल ऊ़म्माल–7/293–ह०–37618)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/401–ह०–34159)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/486)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल ऊ़क़बा–1/62)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/103)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अ़ली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन की तरफ़ देखकर फ़रमाया मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ और मैं उसके साथ जंग का ऐअ़लान करता हूँ जो तुम्हारे साथ जंग करेगा और मैं उसके लिये सलामती का पैग़ाम हूँ जो तुम्हारे साथ सलामती से रहेगा। (हाकिम–4/294–ह०–4713)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/31–ह०–2621)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/191–ह०–14989)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/48–ह०–1350)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसे क़यामत के दिन यहूदियों के साथ जमाअ़ करेगा चाहे वो रोज़े नमाज़ का पाबन्द ही क्यों न हो और खुद को मुसलमान गुमान करता हो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/233–ह०–4002)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/195–ह०–15009)

अहले हक़ मुसलमानो की जमाअ़त से अलग होने वाला दोज़ख़ी

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का फ़रमान है कि अ़ली मुझसे से मैं अ़ली से हूँ और अ़ली से बुग्ज़ रसूलुल्लाह से बुग्ज़ अ़ली से मुहब्बत रसूलुल्लाह से मुहब्बत और जिसका मैं मौला उसका अ़ली मौला और अ़ली इताअ़त रसूलुल्लाह की इताअ़त और रसूलुल्लाह की इताअ़त अल्लाह तआ़ला–

की इताअ़त है और मुअ़ाविया को ये सब कुछ माअ़लूम था फिर भी उसने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ रखा और न उनको मौला तस्लीम किया और न ही उन्हें अमीरुल मोमिनीन माना और न ही उनकी इताअ़त की बल्कि वो बाग़ी हो गया और मुअ़ाविया ये भी जानता था कि अ़ली हक़ पर हैं लेकिन मुअ़ाविया ने हक़ का साथ न देकर बातिल और गुमराही की राह इख़्तियार की और हज़रत मौला अ़ली की अहले हक़ जमाअ़त से अलग हो होकर वो दोज़ख़ी हो गया।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
और जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करे उसके बाअ़द कि उस पर हिदायत की राह वाज़ेह हो चुकी थी और मुसलमानों की राह से जुदा राह की पैर'वी करे तो हम उसे उसी (गुमराही) की तरफ़ फेरे रखेंगे जिधर को वो (खुद) फिर गया है और बिल (आख़िर) उसे दोज़ख़ में डालेंगे वो बहुत ही बुरा ठिकाना है।(सूरह-निसा-4/115)

➡ हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसको तुम देखो कि वो मुसलमानों की जमाअ़त से अलग हो गया है या वो मेरी उम्मत में फूट डालना चाहता है तो वो जो भी हो उसे क़त्ल करदो बिला शुबा जमाअ़त पर अल्लाह का हाथ होता है और शैतान उस शख़्स के साथ होता है जो जमाअ़त से अलग हो जाये और शैतान उसे लात मारकर हाँकता है।
(नसाई-सुनन-6/60-ह०-4025)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह-

के रसूल हम जाहलियत और शर के ज़माने में थे फिर अल्लाह तआ़ला ने हमें ख़ैर और बरकत से सरफ़राज़ फ़रमाया क्या अब इस ख़ैर के बाअ़द फिर कोई शर का वक़्त आयेगा तो आपने फ़रमाया हाँ फिर मैंने अ़र्ज़ की क्या उस शर के बाअ़द फिर कोई ख़ैर का ज़माना आयेगा तो आपने फ़रमाया हाँ लेकिन उस ख़ैर में कुछ धुआँ होगा तो मैंने अ़र्ज़ किया वो धुआँ क्या होगा तो आपने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द ऐसे इमाम (हुक्मरान व रहनुमा) व ऐसे लोग पैदा होंगे जो मेरी सुन्नत व तरीक़े के अ़लावा दूसरे तरीक़े इख़्तियार करेंगे और उनके दिल शैतानों के दिल होंगे और तुम उनमें अच्छी और बुरी चीज़े देखोगे मैंने अ़र्ज़ किया क्या उस ख़ैर के बाअ़द फिर कोई शर का ज़माना आयेगा तो आपने फ़रमाया हाँ दोज़ख़ की तरफ़ बुलाने वाले लोग होंगे तो जो लोग उनकी बात मानेंगे वो उनको दोज़ख़ में झोंक देंगे फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि आप हमें उनके कुछ औसाफ़ बयान फ़रमांदें आपने फ़रमाया कि वो लोग हमारी क़ौम से ही होंगे और हमारी ही ज़बान बोलेंगे फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर मैं उन लोगों का ज़माना पाऊँ तो मेरे लिये क्या हुक्म है आपने फ़रमाया तुम ऐसे हालात में मुसलमानों की जमाअ़त व उनके इमाम को लाज़िम पकड़ना और तुम अपने अमीर का हुक्म सुनना और उसकी इताअ़त करना चाहे तुम्हारी पीठ पर कोढ़े मारे जायें और तुम्हारा माल छीन लिया जाये फिर भी तुम अपने अमीर का हुक्म सुनना व उसकी इताअ़त करना और तुम उन तमाम फ़िरक़ों से अलग रहना अगरचा तुम्हें दरख़्त की जड़ ही क्यों न चबाना पड़े यहाँ तक कि उसी हालत में तुम्हें मौत आ जाये।

(बुख़ारी–सहीह–3/677–ह०–3606, 7084)
(मुस्लिम–3/718–ह०–4785) (मिश्कात–3/234–ह०–5382)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स जमाअ़त से जुदा हुआ और हुकूमत को बदलना चाहे तो वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसके पास अल्लाह की बारगाह में पेश करने के लिये कोई हुज्जत न होगी। (हाकिम–4/217–ह०–4561)

➡ हज़रत अबू बुरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जहन्नम में एक वादी है जिसे हबहब कहा जाता है उसमें हर क़िस्म के बाग़ी और सरकश रहेंगें। (मिश्कात–3/359–ह०–5689)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने (मुसलमानों के हुक्मरान की) इताअ़त से हाथ खींचा वो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला के सामने इस हाल में हाज़िर होगा कि उसके हक़ में कोई दलील न होगी और जो शख़्स इस हाल में मरा कि उसकी गर्दन में किसी (मुसलमान हुक्मरान) की बैअ़त नहीं थी तो वो जाहलियत की मौत मरेगा। (मुस्लिम–3/721–ह०–4793)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि ज़रुर बिल ज़रुर कुछ लोग मुझसे इतनी मुहब्बत करेंगे यहाँ तक कि वो लोग मेरी मुहब्बत की वजह से दोज़ख में जायेंगे और ज़रुर बिल ज़रुर कुछ लोग मुझसे बुग्ज़ रखेंगे हत्ता कि वो–

लोग मुझसे बुग्ज़ रखने की वजह से दोज़ख में जायेंगे। (इब्ने अबी शैबा–9/523–ह०–32796)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/334-ह०-952,964)

मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उससे क़िताल कुफ़्र है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द व हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उससे क़िताल कुफ़्र है यानी किसी मुसलमान से जंग करना या किसी मुसलमान का क़त्ल करना कुफ़्र है। (बुख़ारी–सहीह–1/106–ह०–48)
(मुस्लिम–सहीह–1/177–ह०–221)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53–ह०–69)
(इब्ने माजा–सुनन–3/273–ह०–3939, 3940, 3941)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058–ह०–1983)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/413–ह०–2634,2635)
(नसाई–सुनन–6/132–ह०–4109)
(मिश्कात–3/62–ह०–4814)

तो जब अ़ाम मुसलमान से लड़ना कुफ़्र है तो तमाम मुसलमानों के वली और मौला और जन्नत के सरदार अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से जंग करना कुफ़्रे ऐ़न है और मुअ़ाविया ने तो अपनी हुकूमत में बेशुमार सहाबा किराम और ताबईन हज़रात और बाअ़ज़ अह्ले बैत अत्हार का क़त्ल कराया जो उसके कुफ़्रे क़तई व सरीह होने की मुस्तहकम दलील है जिसमें किसी क़िस्म का कोई इहतिमाल नहीं है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक होगा व उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (सूरह–निसा–4/93)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर फ़रमाया कि तुम्हारी जान व माल और इज़्ज़तें तुम पर उसी तरह हराम हैं जैसे आज के दिन की हुरमत है जैसे इस महीने की हुरमत है जैसे इस शहर की हुरमत है और तुम मेरे बाअ़द कुफ़्र में मत लौट जाना कि तुम एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो। (मुस्नद अहमद–6/880–ह०–16819)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/178–ह०–5982)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/497–अ़रबी–ह०–2193)
(इब्ने माजा–सुनन–03/274–ह०–3942, 3943)
(बुख़ारी–सहीह–6/388–ह०–7080)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे।
(मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह

तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो हालते शिर्क में मर गया या जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया हो और एक रिवायत में है कि उ़बादा बिन सामित रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला उसका कोई अ़मल कुबूल नहीं करेगा न निफ़िल न फ़र्ज़ (अबू दाऊद–सुनन–4/277-ह०-4270) (इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ हथियार उठाये वो हममें से नहीं (बुख़ारी-सहीह-6/385-ह०-7071) (इब्ने माजा–सुनन–2/278-ह०-2575,2576,2577) (तिर्मिज़ी–सुनन–1/811-ह०-1459)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई भी अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे क्योंकि वो नहीं जानता कि मुम्किन है कि शैतान उसके हाथ से वार करादे फिर वो दोज़ख़ के गढ़े में जा गिरे। (बुख़ारी–सहीह–6/385–ह०–7072)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि तुममें से कोई जब अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा करता है तो फ़रिश्ते उस पर लाअ़नत करते हैं। (तबरानी–मुअ़जम औसत–3/322–ह०–4169)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र और हज़रत उ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अम्मार को क़त्ल करने वाला व उसका माल सल्ब करने वाला जहन्नमी होगा। (मुस्नद अहमद–3/504–ह०–6499) (अल बानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–3/520-ह०-3524) (अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–उ़र्दू–4/482–ह०–5217)

माअ़लूम हुआ कि मुसलमानों का क़त्ल करने व कराने वाला काफ़िर और दोज़ख़ी है और मुआ़विया ने सैंकड़ों क़त्ल कराये इसलिये मुआ़विया काफ़िर और दोज़ख़ी है।

मुआ़विया का अ़ली को ख़लीफ़ा न मानना और कुरान की बेहुरमती करना

➡ जंगे सिफ़्फ़ीन में जब मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ौज मुआ़विया की फ़ौज पर भारी पड़ने लगी और मुआ़विया को ये लगने लगा कि अ़नक़रीब हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ौज ग़ालिब आ जायेगी तो अमीर मुआ़विया ने अम्र बिन आस से मश्वरा किया कि अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़तह क़रीब है अब क्या किया जाये और किस हीले से काम लिया जाये अम्र बिन आस ने कहा कि सिवाए इसके और कोई तदबीर नहीं है कि कुरान मजीद को नेजों के ऊपर बाँध लिया जाये और लोगों के पूछने पर ऐअ़लान किया जाये कि हमने अपने और अ़ली के दरमियान कुरान को हकम (मुन्सिफ़) बनाया है ये मंज़र देखकर लोग हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के गिर्द जमाअ़ हो गये और कहा कि बेशक ये तो उन्होंने इन्साफ़ की बात कही है चुनांचा अम्र बिन आस मुआ़विया की तरफ़ से और अबू मूसा

अश्अरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ से हकम बनकर आये हज़रत अ़ली ने तहरीर में अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबू तालिब लिखा तो उन लोगों ने कहा अगर हम आपको अमीरुल मोमिनीन तसलीम कर लेते तो फिर जंग किस बात की होती हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर की और अमीरुल मोमिनीन का लफ़्ज़ हटा कर सिर्फ़ अ़ली बिन अबू तालिब लिखा जिस तरह सुलह हुदैबिया के मौक़ेअ़ पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' लिखने पर कुफ़्फ़ारों ने ऐतराज़ किया था और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ''रसूलुल्लाह'' को हटाकर सिर्फ़ ''मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह'' लिखने का हुक्म मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को दिया था। (जवामेउल कलिम-मल्फ़ूज़ात ख़्वाजा बन्दा नवाज़ गेसू दराज़-उ़र्दू-सफ़ा-68)
(तारीख़े तबरी-उ़र्दू-जिल्द-3-हिस्सा-2-सफ़ा-240, 241)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी-तज़किरातुल ख़वास-उ़र्दू-सफ़ा-123)
(नसाई-ख़साइसे अ़ली-1/271-ह०-190)

➡ जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उ़म्राह करने का इरादा किया तो अह्ले मक्का ने आपको मक्के में दाख़िल होने से रोक दिया यहाँ तक कि आपने कुछ शराइत के साथ सुलह करली और जब मुआ़हिदा लिखा गया तो उसमें लिखा ये वो मुआ़हिदा है कि जिस पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सुलह की तो मुश्रिकीने मक्का ने कहा कि अगर हमें ये यक़ीन होता कि आप वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं तो फिर हम आपको किसी चीज़ से नहीं रोकते फिर आपने फ़रमाया मुआ़हिदे से लफ़्ज़े रसूलुल्लाह मिटा दो। (बुख़ारी-4/335-ह०-4251)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान, अम्र बिन आस उक़बा बिन अबी मुईत, हबीब बिन मुस्लिमा, अ़ब्दुल्लाह बिन सरह और ज़ह्हाक बिन क़ैस ये सब बेदीन लोग हैं जो कुरान के मुख़ालिफ़ चलने वाले हैं जब मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान के गिरोह ने कुरान मजीद को नेज़ों पर उठाया तो हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अफ़सोस कि उन्होंने कुरान मजीद को नेज़ों पर उठाया जबकि ये लोग कुरान को किसी और वक़्त में हाथ भी नहीं लगाते थे और ये तक नहीं जानते थे कि इसमें क्या लिखा हुआ है और उन्होंने तुम्हें सिर्फ़ धोका और फ़रेब देने के लिये कुरान को उठाया है।
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–3–हिस्सा–2–सफ़ा–242)

–: मुआ़विया बदतरीन बादशाह :–

➡ हज़रत सफ़ीना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि बनू उमय्या कहते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ख़लीफ़ा नहीं थे और दाअ़वा करते हैं कि ख़िलाफ़त उनमें है हालांकि वो झूट बोलते हैं बल्कि वो बादशाह हैं और बदतरीन बादशाहों में से हैं और बदतरीन बादशाहों में मुआ़विया पहला बादशाह है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/530–ह०–4646)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/111–ह०–2226)
(इब्ने अबी शैबा–011/62–ह०–37157)

अमीर मुआ़विया की बैअ़त
गुमराही पर मबनी थी

मुहिब्बाने मुआ़विया अपने बातिल अ़क़ीदे और अपनी

मनफ़ी सोच से ये कहते हैं कि जब लोगों ने मुआ़विया की बैअ़त करली थी तो फिर उसे किस बिना पर ग़लत ठहराया जा सकता जबकि अमीर मुआ़विया की बैअ़त करना लोगों की मजबूरी थी अगर वो ऐसा न करते तो उनके जानो माल महफ़ूज़ न रहते क्योंकि मुआ़विया व उसके हुक्मरान ज़ालिम थे इसलिये लोगों ने अपने जान व माल को महफ़ूज़ रखने और उसके जुल्म के ख़ौफ़ की वजह से मुआ़विया की बैअ़त की थी।

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फरमाते हैं कि बुस्र बिन अरताह जब मुआ़विया की बैअ़त के लिये मदीने आया (और मुआ़विया ने उसे हुक्म दिया था कि जो मेरी बैअ़त से इन्कार करे उसे क़त्ल कर देना) तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैं जानती हूँ कि ये गुमराही की बैअ़त है।
(इमाम बुख़ारी–तारीख़े सग़ीर–सफ़ा–141)
(सुलह इमाम हसन–उ़र्दू–सफ़ा–15)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
यही वो लोग हैं कि जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़फ़िरत के बदले अ़ज़ाब कैसा अजीब है ये उनका हौसला कि दोज़ख़ का अ़ज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार हैं। (सूरह–बक़राह–2/175)

मुआ़विया जाहलियत की मौत मरा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मुसलमानों के

अमीर की इताअ़त से निकल गया और जमाअ़त छोड़ दी और मर गया तो वो जाहलियत की मौत मरा और जिसने मेरी उम्मत के अच्छों और बुरों दोनों को मारते हुये खुरुज किया (बग़ावत, जंग और क़िताल का रास्ता इख़्तियार किया) और किसी मोमिन का लिहाज़ न किया और न ही उसने किसी मुआ़हिदे का ख़्याल व लिहाज़ किया तो उसका मुझसे कोई तअ़ाल्लुक़ नहीं है और न ही मेरा उससे कोई तअ़ाल्लुक़ है।
(मुस्लिम–सहीह–3/720–ह०–4786, 4788)

एक ख़लीफ़ा के होते हुये दूसरे की बैअ़त ली जाये तो दूसरे को क़त्ल कर दो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दो ख़लीफ़ों के लिये बैअ़त ली जाये तो उनमें से दूसरे को क़त्ल करदो। (मुस्लिम–सहीह–3/724–ह०–4799)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरी दौर में ऐसा फ़ित्ना आयेगा कि मोमिन कहेगा कि ये मेरी तबाही (का सामान) है फिर वो छट जायेगा फिर एक और आयेगा तो मोमिन कहेगा कि ये अस्ल तबाही है तो जो शख़्स ये चाहता है कि उसे आग़ से दूर कर दिया जाये और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाये तो उसकी मौत इस हाल में हो कि वो अल्लाह तआ़ाला और आख़िरत पर यक़ीन रखता हो और वो आख़िरी दम तक अपने ईमान की हिफ़ाज़त करे और–

वो लोगों के पास वही (चीज़, बात व दाअ़वत) लेकर जाये जिसे वो खुद अपने लिये पसन्द करता हो और जो शख़्स अपने इमाम की बैअ़त करे तो इस्तिताअ़त रखते हुये उसकी इताअ़त करे फिर अगर दूसरा आ जाये और उससे इमामत छीनना चाहे तो उस दूसरे की गर्दन उड़ा दो। (मुस्लिम–सहीह–उ़र्दू–3/713–ह०–4776)
(मुस्नद अहमद–उ़र्दू–3/506–ह०–6503)
(इब्ने अबी शैबा–उ़र्दू–11/521–ह०–38264)
(अबू दाऊद–सुनन–उ़र्दू–4/263–ह०–4248)

➡हज़रत मुहम्मद बिन ज़ियाद फ़रमाते हैं कि मुआ़विया ने मरने से पहले अपनी ज़िन्दगी में अपने बेटे यज़ीद के लिये बैअ़त ली तो मर'वान ने कहा ये हज़रत अबू बक्र व हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) का तरीक़ा है तो हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा कि ये क़ैसर बादशाहे रोम का तरीक़ा है और ये कुरान की आयत तेरे बारे में ही नाज़िल हुई कि और जिसने अपने वालिदैन से कहा कि ''तुमसे बेज़ारी है तुम मुझे ये वाअ़दा देते हो (क़ब्र से दोबारा ज़िन्दा करके) निकाला जाऊँगा हालांकि मुझसे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकीं अब वो दोंनों (माँ बाप) अल्लाह से फ़रियाद करने लगे (और लड़के से कहा) तू हलाक हो गया (ऐ लड़के) ईमान ले आ बेशक अल्लाह का वाअ़दा हक़ है तो वो (लड़का जवाब में ये) कहता है ये बातें अगले लोगों झूटे अफ़सानों के सिवा कुछ भी नहीं'' (सूरह–अहक़ाफ़–046/17)

और जब ये ख़बर उम्मुल मोमिनीन हज़रत सय्यदा आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को पहुँची तो आपने फ़रमाया कि वो झूट बोल रहा है अस्ल बात

ये है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मर‘वान के बाप पर उस वक़्त लाअ़नत फ़रमाई थी जब मर‘वान अभी अपने बाप की पुश्त में था चुनांचा मर‘वान अल्लाह तआ़ाला की लाअ़नत का एक हिस्सा है (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/615-ह०-8483) (नसाई–सुनन कुबरा–10/257–ह०–11427) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–उ़र्दू–जिल्द–26–सफ़ा–259)

जबकि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दो ख़लीफ़ों के लिये बैअ़त ली जाये तो उनमें से दूसरे को क़त्ल करदो पस माअ़लूम हुआ कि मुआ़विया मलऊ़न और यज़ीद लईन ये दोनों मरदूद वाजिबुल क़त्ल थे।

➡ अमीर मुआ़विया ने मर‘वान बिन हकम को मक्का मुअ़ज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा का गवर्नर बनाया उसने एक बार खुत्बा दिया और उसने खुत्बे में यज़ीद बिन मुआ़विया का बार बार ज़िक्र किया ताकि मुआ़विया के बाअ़द यज़ीद लईन की बैअ़त का रास्ता हमवार किया जाये तो इस पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र ने ऐतराज़ के तौर पर कुछ कहा तो मर‘वान ने कहा इसे पकड़लो तो हज़रत अ़ब्दुर्रहमान अपनी बहन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के घर में चले गये जिसकी वजह से लोग उन्हें पकड़ न सके। (बुख़ारी–सहीह–4/772–ह०–4827) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–उ़र्दू–जिल्द–26–सफ़ा–259)

अमीर मुआ़विया ने खुल्फ़ा–ए–राशिदीन की इत्तेबाअ़ नहीं की थी जैसा कि हर ख़लीफ़ा–ए–राशिद के विसाल के वक़्त आ़किल व बालिग़ और ख़िलाफ़त के क़ाबिल

औलाद मौजूद थी मगर उनमें से किसी भी ख़लीफ़ा-ए-राशिद ने अपने बेटे को अपने बाअ़द अपना जानशीन नहीं बनाया जबकि अमीर मुआ़विया ने अपनी मौत से कई साल पहले अपने बेटे यज़ीद लईन को अपना जा-नशीन नामज़द कर दिया और ये खुल्फ़ा-ए-राशिदीन की इत्तेबाअ़ से इन्हिराफ़ था और अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की इताअ़त और उनकी बैअ़त से इन्कार करना ये मुआ़विया की खुली बग़ावत थी और ऐसे बाग़ी के लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ''जब एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती और सरकशी करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती का मुरतकिब हो रहा है यहाँ तक कि वो हुक्मे इलाही की तरफ़ लौट आये'' (सूरह-हुजुरात-49/9)

मौला अ़ली हक़ पर थे और मुआ़विया बतिल पर था

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत में दो गिरोह होंगे और उन दोनों के दरमियान से तेज़ी से दीन से बाहर हो जाने वाले निकलेंगे उन्हें वो गिरोह क़त्ल करेगा जो उन दोनों गिरोह में ज़्यादा हक़ का अह्ल होगा। (मुस्लिम-सहीह-2/409-ह०-2459)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी व अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अम्मार जब तू देखे कि अ़ली एक रास्ते पर चल रहे हैं और लोग दूसरे रास्ते पर तो तुम हज़रत अ़ली का-

साथ देना वो तुम्हारी रहनुमाई हक़ व हिदायत के रास्ते की तरफ़ करेंगे। (कंजुल ऊ़म्माल–6/290–ह०–32969)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ व बातिल में जुदाई करने वाले हैं

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे जब ऐसा हो तो तुम हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब अ़लैहिमस्सलाम का साथ देना क्योंकि वो हक़ व बातिल में जुदाई करने वाले होंगे।
(कंजुल ऊ़म्माल–6/289–ह०–32961)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ को वाज़ेह करने वाले हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत में जब इख़्तिलाफ़ होगा तो ऐ अ़ली तुम उस वक़्त उनके सामने हक़ को वाज़ेह करोगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248-ह०-4620)

मौला अ़ली हादी व महदी हैं

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम हज़रत अ़ली से दोस्ती करोगे तो तुम अ़ली को हादी व महदी (राहनुमा, हिदायत करने वाला) पाओगे और वो तुम्हें सीधे रास्ते पर ही चलायेंगे। (कंजुल ऊ़म्माल–6/290–ह०–32963)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/73–ह०–195)

अ़ली हिदायत के अ़लम और अल्लाह की रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली हिदायत के अ़लम ईमान के मीनारे और मेरे औलिया के इमाम और मेरे फ़रमां बरदारों के नूर हैं और रोज़े क़यामत मेरे झन्डे को उठाने वाले होंगे और अ़ली मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं।

(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75–ह०–206)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/400–ह०–1135)
(कंजुल उ़म्माल–7/78–ह०–36479)

मौला अ़ली को जिसने मज़बूती से थामा वो कभी गुमराह न होगा

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अनस अ़रब के सरदार को बुला लाओ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने पूछा कि क्या आप अ़रब के सरदार नहीं हैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं औलादे आदम का सरदार हूँ और हज़रत अ़ली अ़रब के सरदार हैं फिर जब हज़रत मौला अ़ली आये तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अन्सार की जमाअ़त क्या मैं तुम्हें न बतलाऊँ कि अगर तुमने अ़ली को मज़बूती से थामा तो

कभी गुमराह न होगे पस तुम अ़ली से मेरी मुहब्बत की वजह से मुहब्बत करो और इनकी ताअ़ज़ीम व तकरीम करो क्योंकि जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझसे ये कहा है और जो कुछ भी मैंने कहा है वो अल्लाह के हुक्म से कहा है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251–ह०–4626)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/105–ह०–14682)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125–ह०–14753)
(कंजुल उ़म्माल–6/293–ह०–14682)
(कंजुल उ़म्माल–7/74–ह०–36448)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/377–ह०–2683)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/90–ह०–2749)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/738–ह०–1468)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/63)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/129)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/72)

➡हज़रत जरी बिन कुलैब आ़मिरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) सिफ़्फ़ीन की जानिब र'वाना हुये तो मैं मदीना मुनव्वरा आ गया क्योंकि ये लड़ाई मुझे पसंद नहीं थी फिर मैं मदीना में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम किन लोगों में से हो तो मैंने कहा कि मैं कूफ़ा वालों में से हूँ फिर आपने पूछा कि तुम यहाँ किस मक़सद से आये हो मैंने कहा कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम सिफ़्फ़ीन की जानिब र'वाना हुये हैं जबकि ये लड़ाई मुझे अच्छी नहीं लग रही है इसलिये मैं यहाँ चला आया फिर आपने मुझसे पूछा क्या तुमने हज़रत अ़ली की बैअ़त की है तो मैंने कहा जी हाँ फिर आपने फ़रमाया कि तुम लौट जाओ–

और हज़रत अ़ली के लश्कर में शरीक हो जाओ खुदा की क़सम न अ़ली खुद गुमराह हैं और न ही उनके साथ रहने वाला गुमराह हो सकता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280–ह०–4680)
(इब्ने अबी शैबा–9/520–ह०–32786)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं कभी गुमराह नहीं हुआ और न ही गुमराही की तरफ़ मुझे लाया गया और मैं अपने रब की वाज़ेह दलील पर हूँ जो रब तआ़ला ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये क़ायम की थी और मेरे लिये भी वाज़ेह फ़रमाई थी और मैं बिला शुबा सीधे रास्ते पर हूँ। (कंजुल उ़म्माल–7/82–ह०–36499)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स ये पसंद करता हो कि वो मेरी जैसी ज़िन्दगी गुज़ारे और मेरी जैसी मौत उसे मिले और दायमी जन्नत उसका ठिकाना हो तो वो हज़रत अ़ली से मुहब्बत करे क्योंकि वो तुम्हें न ही हिदायत से निकालेंगे और न ही किसी गुमराही में दाख़िल करेंगें। (कंजुल उ़म्माल–6/289–ह०–32956)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259–ह०–4642)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/646–ह०–4927)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95–ह०–14639)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली खुद भी हिदायत याफ़्ता हैं और हिदायत देने वाले भी हैं और ये तुम्हें–

सिराते मुस्तक़ीम पर क़ायम रखेंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/282–ह०–4685)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और मैं और तुम एक ही नस्ल से हैं।
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/50–ह०–6888)
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०–32940, 32941)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/82–ह०–14582)

हक़ अ़ली के साथ अ़ली हक़ के साथ

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये दुआ़ मांगी ऐ अल्लाह अ़ली पर रहम फ़रमां और ऐ अल्लाह अ़ली जिधर को रुख़ करें हक़ का रुख़ भी उधर को हो जाये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/173–ह०–3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252–ह०–4629)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ व हिदायत के कामिल व बेहतरीन नमूना थे आपने कभी भी हक़ व हिदायत का और हक़ व हिदायत ने कभी आपका साथ नहीं छोड़ा जिस तरह रुह और जिस्म का मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ होता है उसी तरह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हक़ व हिदायत से मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ था और ये सारा फ़ैज़ दुआ़–ए–मुस्तफ़ा के असर व निस्बते मुस्तफ़ा के सबब से था।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है

कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआला रहमत फ़रमाये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ पर कि उन्होंने मुझे अपनी लड़की ब्याह दी और मुझे हिजरत के घर ले आये और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया और अल्लाह तबारक व तआला रहमत फ़रमाये हज़रत उ़मर पर कि वो हक़ बात कहते हैं अगरचा किसी को नागवार लगे और हक़ ने उ़मर को ऐसे हाल में छोड़ा कि कोई उसका दोस्त नहीं सिवाए अल्लाह व रसूल के और अल्लाह तआला रहमत फ़रमाये हज़रत उस्मान पर कि फ़रिश्ते उससे हया करते हैं और अल्लाह तआला रहमत फ़रमाये हज़रत अ़ली पर और ऐ अल्लाह हक़ हमेशा अ़ली के साथ रहे वो जहाँ कहीं भी हों।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1073–ह०–3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252–ह०–4629)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/483–ह०–5906)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/51–ह०–806)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/206–ह०–550)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/355–ह०–546)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली हक़ के साथ हैं और हक़ अ़ली के साथ है (कंजुल उ़म्माल–6/293-ह०-33018) (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/116)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें बेहतर लोगों की ख़बर न दूँ सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्यों नहीं तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेहतर वो है जो पाक है

और वाअ़दों को पूरा करने वाले हैं और रब तआ़ला मुत्तक़ी परहेज़गार को पसंद फ़रमाता है कि इतने में हज़रत मौला अ़ली गुज़रे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हक़ अ़ली के साथ है हक़ अ़ली के साथ है ये जुमला आपने दो बार फ़रमाया। (अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/58–ह०–1047)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं अ़ली हक़ पर हैं जो इनकी पैर'वी करेगा वो हक़ की पैर'वी करेगा और जो इनकी पैर'वी नहीं करेगा वो हक़ को छोड़ देगा।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/129–ह०–14768)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली का मुसलमानों पर इस क़दर हक़ है जिस क़दर वालिद का बेटे पर हक़ होता है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/64)

मुआ़विया को हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का जवाबी ख़त

➡ एक मर्तबा मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को एक ख़त लिखा जिसका मज़मून ये है ऐ अबुल हसन (हज़रत अ़ली) मेरे बहुत से फ़ज़ाइल हैं मेरा बाप दौरे जाहलियत में सरदार था और मैं इस्लाम में बादशाह हो गया हूँ और मेरा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ रिश्ता है मैं मोमिनीन का मामू हूँ और कातिबे वही हूँ (जबकि मुआ़विया कातिबे वही नहीं था बल्कि मुन्शी था और वो

भी बहुत थोड़े वक़्त के लिये था और कातिबे वही तो हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) थे (मुअ़जम औसत–1/241-ह०-315)(हाकिम–5/87-ह०-5778) और मुआ़विया मुन्शी था मुआ़विया के बारे में मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में लफ़्ज़े कातिबे वही नहीं लिखा हुआ है बल्कि सिर्फ़ कातिब लिखा है और कातिब के माअ़ने मुन्शी होता है) (मुस्लिम–हदीस-6409) पस हज़रत अ़ली ने जवाब में लिखा कि ऐ जिगर चबाने वाली के बेटे मुझ पर फ़ख़्र करता है जबकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जो नबी व रसूल हैं वो मेरे भाई और ससुर हैं जबकि हम्ज़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सय्यदुश्शुहदा मेरे चचा हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) मेरी ज़ोजा हैं और उसकी जान मेरी जान से मिली हुई है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के दोंनों नवासे हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) मेरे बेटे हैं और तुममें से कौन है कि जिसका हिस्सा मेरे हिस्से जैसा हो फिर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने कहा कि इस ख़त को कहीं छुपा दो कि कहीं अह्ले शाम इस ख़त को पढ़कर हज़रत अ़ली की तरफ़ माइल न हो जायें।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/61–ह०–36366)

अ़ली के साथ जंग में शामिल न होने का इब्ने उ़मर को अफ़सोस

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि मुझे कभी किसी बात पर इतना अफ़सोस नहीं हुआ जितना मुझे इस बात पर अफ़सोस है कि मैं अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम)

के साथ मिलके मौला अ़ली के मुख़ालिफ़ीन बाग़ीयों से क़िताल नहीं किया। (हाकिम–5/345–ह०–6360) (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–97/346–ह०–12054)

हज़रत अम्मार को जंगे सिफ़्फ़ीन में अबुल ग़ादिया ने शहीद किया

➡ हज़रत कुलसूम बिन जब्र फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम लोग अ़ब्दुल आअ़ला बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ामिर के पास बैठे हुये थे कि वहाँ मौजूद अबुल ग़ादिया नामी एक शख़्स ने पानी मंगवाया चुनांचा चाँदी के एक बर्तन में पानी लाया गया लेकिन उसने पानी पीने से इन्कार कर दिया और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हदीस बयान की कि मेरे बाद काफ़िर या गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो और मैंने हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को नेज़ा मारकर क़त्ल किया है और अफ़सोस कि ये वो ही हाथ हैं तो इन हाथ से मैं चाँदी के बर्तन में पानी कैसे पिऊँ जबकि इन्हीं हाथों ने हज़रत अम्मार बिन यासिर को शहीद किया था।
(मुस्नद अहमद–6/880–ह०–16818, 16819)
(मुस्नद अहमद–3/517–ह०–6538, 6929)

रसूलुल्लाह ने हज़रत अम्मार के लिये शैतान से तहफ़्फ़ुज़ की दुआ़ फ़रमाई

➡ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अम्मार बिन यासिर के लिये शैतान से तहफ़्फ़ुज़ की दुआ़ फ़रमाई थी। (बुख़ारी–सहीह–3/757–ह०–3743)
(मिश्कात–3/568–ह०–6200)

हज़रत मौला अ़ली से बुग्ज़ व अ़दावत रखने वाला मुनाफ़िक़

बिला शको शुबाह मुआ़विया काफ़िर मुनाफ़िक़ और अहले बैते रसूल का दुश्मन था जिसने बुग्ज़े अहले बैते में ऐसे उमूर अन्जाम दिये जो इंतिहाई मज़मूम व नारे दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी हैं मुआ़विया ने अहले बैते रसूल और आपके असहाब और दीगर सहाबा व ताबईन को बेशुमार तकलीफ़े दीं और क़त्लो ग़ारत और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तबर्रा व लाअ़न ताअ़न और मिम्बरों से गालियाँ दीं और दिलवाईं और ये सब उमूर अमीर मुआ़विया के काफ़िर, मुनाफ़िक़ व दोज़ख़ी होने की मुस्तहकम सरीह और वाज़ेह दलील हैं जो कुरान व अहादीस और कुतुबे तारीख़ से साबित हैं

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया करते थे कि किसी मुनाफ़िक़ की हज़रत अ़ली से मुहब्बत नहीं हो सकती और कोई मोमिन हज़रत अ़ली से बुग्ज़ नहीं रख सकता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075–ह०–3717)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/283–ह०–32875)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली से मुहब्बत सिर्फ़ मोमिन ही करेगा और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़ ही रखेगा और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़

रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त और मुझसे बुग्ज़ रखने वाला अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखने वाला है और उसके लिये हलाकत है जो अ़ली से बुग्ज़ रखे (मुअ़जम औसत–3/626–ह०–4751)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे अ़हद फ़रमाया कि तुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और तुझसे बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ ही होगा। (मुस्लिम–सहीह–1/84–ह०–240)
(इब्ने माजा–सुनन–1/72–ह०–114)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083–ह०–3736)
(मिश्कात–3/534–ह०–6088, 6100)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/314–ह०–948)
(मुस्नद बज़्ज़ार–2/182–ह०–560)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/229–ह०–286)
(इब्ने अबी शैबा–9/500–ह०–32727)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/110–ह०–6924)
(कंजुल उ़म्माल–6/294–ह०–33026)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/169–ह०–100)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/173)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अहले बैत से बुग्ज़ रखा वो मुनाफ़िक़ है।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1126)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली मेरे इल्म का दरवाज़ा हैं और जो दीन मुझे अ़ता फ़रमांकर मबऊ़स किया गया मेरे बाअ़द अ़ली उस दीन को मेरी उम्मत के लिये वज़ाहत करने वाले हैं और मेरे बाअ़द शरीअ़त को लोगों के लिये खोलकर बयान करने वाले हैं और अ़ली की मुहब्बत ईमान है और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़त है और अ़ली की तरफ़ देखना और उनसे मुहब्बत करना इ़बादत है।
(कंजुल उ़म्माल–6/291–ह०–32978)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/91–ह०–4000)

➡हज़रत जाबिर व अबू ज़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को मौला अ़ली के बुग्ज़ से पहचानते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075–ह०–3717)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259–ह०–4643)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/174)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/313–ह०–4151)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/126–ह०–14759)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/323–ह०–979, 1086)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(कंजुल उ़म्माल–7/59–ह०–36346)

उस ज़माने में सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मुनाफ़िक़ों और मोमिनों की पहचान इस तरह किया करते थे कि जिसके चेहरे पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से मरोड़ व सिकुड़न आ जाये तो वो मुनाफ़िक़ है और जिसका चेहरा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से खुशी और मसर्रत से खिल उठे वो मोमिन है और क़यामत के दिन मोमिनों–

और मुनाफ़िक़ों की पहचान उनके चेहरों से की जायेगी

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और उन दोंनों यानी जन्नत व जहन्नम के दरमियान एक दीवार होगी और आअ़राफ़ पर यानी उस दीवार की बुलन्दियों पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को यानी जन्नतियों व दोज़ख़ियों को उनकी अ़लामतों से पहचान लेंगे। (सूरह-आअ़राफ़-7/46)

➡हज़रत शाअ़लबी ने इस आयत की तफ़्सीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से बयान किया है कि आअ़राफ़ पुलसिरात पर एक बुलन्द जगह है हज़रत अ़ब्बास, हज़रत अ़ली हज़रत जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) खड़े होकर अपने चाहने वालों को सफ़ेद नूरानी चेहरों से और बुग्ज़ रखने वालों को सियाह चेहरों से पहचान लेंगे।
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/569)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया ऐ अली तू और तुझसे मुहब्बत करने वाले रोज़े क़यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन क़यामत के दिन मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा सियाह चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-1/474-ह०-941)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-1/319-ह०-998)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/125-ह०-14749)

तमाम मुनाफ़िक़ीन हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत मैं अपने हाथों से मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरों को हौज़े कौसर से दूर भगा दूँगा जिस तरह कोई शख़्स अपनी चरागाह से अजनबी ऊँटों को भगा देता है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163) (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/383-ह०-1157) (कंजुल उ़म्माल–7/78-ह०-36479, 36484)

➡ हज़रत अ़ली बिन अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुआ़विया बिन हुदैज हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देता था और उन पर तबर्रा (लाअ़न ताअ़न) करता था फिर जब मुआ़विया को हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के सामने पेश किया गया तो हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने पूछा कि ऐ मुआ़विया तू हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तबर्रा करता है तो वो मुकर गया फिर हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया खुदा की क़सम अगर तेरी मुलाक़ात हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से हो तो तू उन्हें रसूलुल्लाह के हौज़ पर खड़ा पायेगा और उनके हाथ में एक काँटेदार छड़ी होगी जिसके साथ वो मुनाफ़िक़ों को हौज़े कौसर से पीछे हटा रहे होंगे और ये बात मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने बताई है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/275–ह०–4669) (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/368–ह०–2661, 2692) (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हम (अह्ले बैत) से बुग्ज़ व हसद रखने वाला क़यामत के दिन आग के चाबुकों से हौज़े कौसर से धुतकारा जायेगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/209–ह०–2405)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/195–ह०–15008)
(कंजुल उ़म्माल–6/405–ह०–34203)

तमाम काफ़िर व मुनाफ़िक़ दोज़ख़ी हैं

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ाला मुनाफ़िक़ों व काफ़िरों को दोज़ख़ में जमाअ़ करने वाला है। (सूरह–निसा–4/140)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
अल्लाह तआ़ाला ने मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औ़रतों से आतिशे दोज़ख़ का वाअ़दा फ़रमां रखा है वो उसमें हमेशा रहेंगे वो (आग) उन्हें काफ़ी है और अल्लाह ने उन पर लाअ़नत की है व उनके लिये हमेशा बरक़रार रहने वाला अ़ज़ाब है।
(सूरह–तौबा–9/68)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
मुनाफ़िक़ों व काफ़िरों का ठिकाना दोज़ख़ है।
और वो बुरा ठिकाना है। (सूरह–तौबा–9/73)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया चार ख़सलतें ऐसी हैं कि जिसमें पाई जायें तो वो पक्का मुनाफ़िक़ है

जब बात करे तो वो झूट बोले वाअ़दा करे तो वाअ़दा ख़िलाफ़ी करे और जब मुआ़हिदा करे तो उसे पूरा न करे और जब लड़े तो फ़िस्क़ व फुजूर पर उतर आये। (बुख़ारी–सहीह–3/433–ह०–3178)
(मुस्लिम–सहीह–1/173–ह०–210)
(अबू दाऊद–सुनन–4/559–ह०–4688)
(नसाई–सुनन–7/120–ह०–5023)
(मिश्कात–1/51–ह०–56)

अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान में ये चारों ख़सलतें पाई जाती थीं वो झूटा था उसने खूने उ़स्मान के क़िसास को ढाल बनाया और हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से बग़ावत और खुरुज व क़िताल किया जबकि ये झूट था अस्ल हक़ीक़त ये है वो हुकूमत का तालिब और लालची था और वो हर सूरत हुकूमत को हासिल करना चाहता था ख़्वाह उसे कितने ही क़त्ल ही क्यों न करने पड़ें और उसने ऐसा ही किया हुकूमत व मन्सब पाने की ग़रज़ से उसने हज़रत मौला अ़ली से जंग की और उसको दुनियावी माल व मताअ़ ख़्वाहिश और ओहदा व मन्सब और ऐशो इशरत की ज़िन्दगी की ख़्वाहिश ने उसे नफ़्स का पैरोकार बना दिया था और नफ़्सानी ख़्वाहिशात उस पर ग़ालिब आ गई थी और वो नफ़्सानी ख़्वाहिशात का गुलाम हो गया था

मुआ़विया ने जब किसी से वाअ़दा किया तो कभी पूरा न किया बल्कि हमेशा वाअ़दा ख़िलाफ़ी ही की जब कुछ शराइत पर मुश्तमिल सुलह इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) हुई तो अमीर मुआ़विया ने एक भी शर्त पूरी नहीं की और वाअ़दा ख़िलाफ़ी की उन शराइत में एक शर्त ये थी कि मुआ़विया अपने बाअ़द मुसलमानो को हुकूमत–

सौंप देगा और फिर मुसलमान जिसे चाहें उसे ख़लीफ़ा के लिये मुन्तख़ब कर लेंगे मगर उसने ऐसा नहीं किया बल्कि उसने अपने जीते जी अपने बेटे यज़ीद लईन को अपनी हुकूमत के लिये नामज़द और जानशीन बनाने का ऐअ़लान कर दिया और सुलह इमाम हसन में जो मुआ़हिदा तय हुआ था जिस पर मुआ़विया के दस्तख़त थे उस मुआ़हिदे को पूरा न किया और वो फ़ासिक़ व फ़ाजिर था मुआ़विया ने पूरी ज़िन्दगी ऐअ़लानिया कुरान व सुन्नत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये काम किये लोगों का नाहक़ क़त्ल और जुल्म व ज़्यादती और मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न किया और मुआ़विया ऐअ़लानिया शराब पीता था और अहले बैते रसूल से शदीद बुग्ज़ व अ़दावत रखता था जबकि जिसने अहले बैते रसूल से बुग्ज़ रखा उसने रसूलुल्लाह से बुग्ज़ रखा और जिसने रसूलुल्लाह से बुग्ज़ रखा तो उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा और अहले बैत का दुश्मन रसूलुल्लाह का दुश्मन और रसूलुल्लाह का दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और जो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को मौला न माने वो मोमिन ही नहीं और ऐसा शख़्स काफ़िर व दोज़ख़ी है।

अहले बैत के हक़ को न पहचानने वाला हरामी है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मेरे अहले बैत के हक़ को न पहचाने तो उस में तीन चीज़ों में से एक पायी जाती है या तो वो हरामी है यानी वो ज़िना से पैदा हुआ है या तो वो मुनाफ़िक़ है या फिर वो ऐसा है कि

जिसकी माँ हालते नापाकी में उससे हामिला हुई थी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/237–ह०–1614)
(देलमी–अल फ़िरदौस–2/299–ह०–5955)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/404–ह०–34199)

जो मौला अ़ली को मौला न माने वो मोमिन ही नहीं

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के पास दो बद्दू (अ़रब के खाना बदोश) झगड़ा करते हुये आये तो आपने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि ऐ अबुल हसन इन दोनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमां दें तो आपने उन दोनों के दरमियान फ़ैसला कर दिया तो उनमें से एक ने कहा क्या ये हमारे दरमियान क़ाज़ी हैं इसके बाद हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने उसका गिरेबां पकड़कर फ़रमाया कि तू हलाक हो तुझ पर अफ़सोस है क्या तू नहीं जानता कि ये मेरे और हर मोमिन के मौला हैं और जो इनको मौला न माने वो मोमिन ही नहीं।
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/126)

➡ रिफ़आ़ा बिन इयास अपने वालिद से वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि हम जंगे जमल के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को पैग़ाम भेजा कि वो मुझसे मिलें हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) उनके पास आये तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुमने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि

वसल्लम) की जुबाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ सुने हैं कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख तो हज़रत तल्हा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा जी हाँ फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तो फिर आप मेरे साथ जंग क्यों कर रहे हैं हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि मुझे याद नहीं रहा था फिर हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) वापस चले गये। (कंजुल उ़म्माल–6/166–ह०–31662)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/696–ह०–5594)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/92–ह०–14625)

जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी तसदीक़ की तो मैं उसे विलायते अ़ली की वसीअ़त करता हूँ कि जिसने अ़ली को वली जाना तो उसने मुझे वली जाना और जिसने मुझे वली जाना तो उसने अल्लाह तआ़ला को वली जाना और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा (मजमउज़्ज़वाइद-9/95-ह०-14640)
(कंजुल उ़म्माल–11/611–ह०–32958)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/429–ह०–1751)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली से मुहब्बत सिर्फ़ मोमिन ही करेगा और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़ ही रखेगा और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त और मुझसे बुग्ज़ रखने वाला अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखने वाला है और उसके लिये हलाकत है जो अ़ली से बुग्ज़ रखे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/626–ह०–4751)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/261-ह०-4648)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/474–ह०–940)
(कंजुल उ़म्माल–6/294–ह०–33024)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/76)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/122)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/45)

➡ हज़रत इब्ने हारुन (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के साथ बैठा हुआ था कि अचानक–

नाफ़ेअ़ बिन अज़रक़ आया और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के सर के पास खड़ा हो गया और कहने लगा खुदा की क़सम मैं अ़ली से बुग्ज़ रखता हूँ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने अपना सर उठाकर फ़रमाया कि अल्लाह भी तुझसे बुग्ज़ रखता है इसलिये तू ऐसे शख़्स से बुग्ज़ रखता जो सबक़त ले जाने वाला है और वो दुनिया और इसमें मौजूद तमाम चीज़ों से बेहतर है। (इब्ने अबी शैबा–9/521–ह०–32790)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/175–ह०–107)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुमसे मुहब्बत करने वाला मुझसे मुहब्बत करने वाला है और तुमसे बुग्ज़ रखने वाला मुझसे बुग्ज़ रखने वाला है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/455-ह०–5973)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/239–ह०–6097)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125–ह०–14754)
(मुस्नद बज़्ज़ार–6/488–ह०–2521)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/207–ह०–8304)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जुमाअ़ के दिन खुत्बे में इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि हज़रत अ़ली से मुहब्बत करो क्योंकि इनसे मुहब्बत मोमिन ही करता है और मुनाफ़िक़ इनसे बुग्ज़ रखता है पस जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा तो अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़ाब देगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/352–ह०–1066)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं उस शख़्स को वसीअ़त करता हूँ जो मेरे ऊपर ईमान लाया और मेरी तस्दीक़ की कि वो हज़रत अ़ली की मदद करे पस जिसने हज़रत अ़ली की मदद की उसने मेरी मदद की और जिसने मेरी मदद की तो उसने अल्लाह की मदद की और जिसने अ़ली से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की तो उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा तो उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95–ह०–14640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/429–ह०–1751)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/289–ह०–32948, 32950)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने मुझे ख़बर दी है कि खुश बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से मुहब्बत करता है और बद बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से बुग्ज़ रखता है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/182)
(कंजुल ऊ़म्माल–7/75–ह०–36458)

जिसने अ़ली से दुश्मन रखी उसने अल्लाह से दुश्मन रखी

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपनी कमली में–

ले लिया और दुआ़ की ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत (दुश्मनी) रखे तू उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू उसे दोस्त रख।
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/272–ह०–6915)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/187–ह०–14971)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अ़ली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन की तरफ़ देखकर फ़रमाया मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ और मैं उसके साथ जंग का ऐअ़लान करता हूँ जो तुम्हारे साथ जंग करेगा और मैं उसके लिये सलामती का पैग़ाम हूँ जो तुम्हारे साथ सलामती से रहेगा। (हाकिम–मुस्तदरक–4/294-ह०-4713)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/31–ह०–2621)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/191–ह०–14989)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/48–ह०–1350)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से दुश्मनी रखता है जो अ़ली से दुश्मनी रखे।
(कंजुल उ़म्माल–6/285–ह०–32896)

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासिला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत अ़ली मिम्बर पर खड़े होकर सहाबा किराम से क़सम देकर पूछ रहे थे कि कौन है जिसने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ग़दीरे खुम में जो कुछ कहा है वो आपने सुना है वो गवाही दे तो दो बारह–

आदमी उठे एक रिवायत में है कि सोलह (16) आदमी उठे जिनमें हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अबू सईद और हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) थे उन्होंने ये गवाही दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना ऐ अल्लाह जिसका मैं मौला हूँ अ़ली भी उसका मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख

(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/956–ह०–1966)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/348–ह०–991)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/34–ह०–786)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/362–ह०–563)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/90–ह०–14615, 14629, 1430, 1433)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/117–ह०–6931)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/151–ह०–85, 88, 93)
(कंजुल उ़म्माल–7/69–ह०–34417)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाह में आयीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अबुल हसन कहाँ हैं अ़र्ज़ की वो घर में है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली को बुलाया फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) खाने के लिये बैठे और खाना तनावुल फ़रमाने लगे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मुझे हुज़ूर

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने नहीं बुलाया कि इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ था फिर जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खाने से फ़ारिग़ हुये तो उन सबको अपनी कमली में ले लिया और फ़रमाया ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत रखे तो तू भी उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख (मजमउज़्ज़वाइद–9/187–ह०–14971)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/272–ह०–6915)

➡ हज़रत रियाह बिन हारिस फ़रमाते हैं कि हम हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बैठे थे कि अन्सार से एक ऊँट सवार काफ़िला आया उन्होंने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे मौला आप पर सलामती हो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारा मौला हूँ और क्या तुम अ़रब की क़ौम हो उन्होंने कहा जी हाँ और हमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) मौजूद थे उन्होंने भी कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख। (सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/173)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/160–ह०–3947)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/173–ह०–4053)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि तेरा दोस्त मेरा दोस्त है और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन और मेरा दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है और उसके लिये हलाकत (बर्बादी) है जो मेरे बाअ़द तुम्हारे साथ बुग्ज़ रखे। (तबरी–रियाजुन्नजरा–1/49, 74)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257–ह०–4640)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/361–ह०–1092)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210–ह०–8325)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम उस हज में थे जो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने किया हम उनके साथ आये आप ग़दीरे खुम नामी जगह पर रुके और नमाज़ का हुक्म दिया नमाज़ से फ़राग़त के बाद आपने खुत्बा दिया और फिर हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया क्या मैं ईमान वालों के नज़दीक उनकी जानों से भी ज़्यादा महबूब नहीं हूँ और क्या मैं मोमिनीन पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ नहीं रखता हूँ तो लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली हर उस शख़्स का दोस्त है जो मुझे दोस्त रखता है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह तू उसको दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे है और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख। (इब्ने माजा–1/72–ह०–116)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/192–ह०–4059)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/202–ह०–5052)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144–ह०–79, 80, 94, 95, 98)
(कंजुल उ़म्माल–7/69–ह०–36418, 36420)

➡ हज़रत जरीर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम का हाथ पकड़कर फ़रमाया अल्लाह व रसूल जिसका दोस्त हो तो अ़ली भी उसका दोस्त है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखता हो तू भी उसे दोस्त रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखता हो तू भी उससे दुश्मनी रख ऐ अल्लाह लोगों में से जो शख़्स अ़ली से मुहब्बत करता हो तू उसे अपना महबूब बनाले और जो अ़ली से बुग्ज रखता हो तू भी उससे बुग्ज़ रख।
(कंजुल उ़म्माल–7/72–ह०–36439)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ लोगो क्या मैं हर मोमिन का उसकी जान से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ तो लोगों ने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह हम गवाही देते हैं कि आप हर मोमिन की उसकी जान से ज़्यादा हक़दार हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसका मैं दोस्त हूँ अ़ली भी उसका दोस्त है और उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़े हुये थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जो अ़ली का दोस्त हो तू भी उसका दोस्त हो जा और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।
(कंजुल उ़म्माल–7/58–ह०–36342)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला

अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जिसका मैं वली हूँ अ़ली भी उसका वली हो ऐ अल्लाह जिसका अ़ली वली हो तू भी उसका वली बनजा और जो अ़ली से मुहब्बत करे तो तू भी उससे मुहब्बत कर और जो अ़ली का दुश्मन हो तू भी उसका दुश्मन बन जा और जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली की मदद छोड़ दे तू भी उसकी मदद छोड़ दे।

(कंज़ुल उ़म्माल–6/288-ह०–32943, 32945, 32948)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ाला मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ फिर आपने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है ऐ अल्लाह जो अ़ली से दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तो तू भी उससे दुश्मनी रख और एक रिवायत में है आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मोमिनीन का उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ तो लोगों ने कहा जी हाँ या रसूलल्लाह फिर आपने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।

(कंज़ुल उ़म्माल–7/58-ह०–36340, 36342, 36343,)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व–

ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मैं उससे दोस्ती रखूँगा जो तुमसे दोस्ती रखेगा और मैं उनसे नाराज़ होऊँगा जो तुमसे बुग़्ज़ रखेगा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/628–ह०–4890)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) की जानिब देखकर फ़रमाया कि मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/293–ह०–4713)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया ये मेरा दोस्त है और मैं इसका दोस्त हूँ और मैं उससे दोस्ती रखूँगा जो अ़ली से दोस्ती रखेगा और मैं उससे दुश्मनी रखूँगा जो अ़ली से दुश्मनी रखेगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/96–ह०–2186)

जंगे जमल से मुताअ़ल्लिक़ एक ऐतराज़ और उसका जवाब

बाअ़ज़ लोग मुआ़विया के दिफ़ाअ़ में कहते हैं कि जिस तरह मुआ़विया और हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के दरमियान जंग हाइल हुई थी तो मुआ़विया फ़ेअ़ले गुनाह व ख़ताए मज़मूम का मुरतकिब हुआ तो इस तरह से–

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा, हज़रत तल्हा व हज़रत जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) और हज़रत मौला अ़ली के (अ़लैहिस्सलाम) दरमियान भी जंग हुई तो फिर इस एतबार से क्या हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) भी ख़ता की मुरतकिब थीं तो इसका जवाब ये है कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) का मुआ़मला मुआ़विया के बिल्कुल बर अ़क्स था क्योंकि अमीर मुआ़विया ने ख़लीफ़ा-ए-राशिद की इताअ़त और बैअ़त से इन्कार किया और वो बाग़ी हो गया था और ओहदा व मन्सब और दुनियावी मफ़ाद और हुकूमत के लालच के सबब मुआ़विया ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से जंग की जिसमें सैंकड़ों सहाबा किराम शहीद हुये थे जबकि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) साजिश का शिकार हुईं थीं और मुआ़विया के ही लोगों ने आपको बहका दिया था मगर जब उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हदीस याद आई तो उन्होंने जंग करने से मनाअ़ कर दिया था और फिर आप नादिम हुईं और अपनी ग़लती पर तौबा की जबकि अमीर मुआ़विया को तो पहले से ही रसूलुल्लाह की ये हदीस माअ़लूम थी कि हज़रत अम्मार बिन यासिर को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा इसके बावुजूद भी न तो वो नादिम हुआ और न उसने तौबा की और न ही अपनी बग़ावत से रुजूअ़ किया।

रसूलुल्लाह की पेशीनगाई कि मक़ामे हौअब पर कुत्ते भोंकेंगे

➡ हज़रत क़ैस फ़रमाते हैं कि जब उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) रात के-

वक़्त बनू आ़मिर के चश्मों के क़रीब पहुँची तो वहाँ कुत्ते भौंकने लगे तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा ने पूछा कि ये कौन सा चश्मा है लोगों ने बताया कि ये मक़ामे हौअब का चश्मा है आपने ये सुनते ही फ़रमाया कि मैं अब यहीं से वापस जाऊँगी तो उनके किसी हमराही ने कहा कि आप चलती रहें कि मुसलमान आपको देखेंगे तो हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उनके दरमियान सुलह करादे फिर आपने फ़रमाया कि एक मर्तबा हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया था कि तुममें से एक औ़रत की उस वक़्त क्या हालत होगी जिस पर मक़ामे हौअब के कुत्ते भौंकेंगे।

(मुस्नद अहमद–11/184–ह०–25161)
(मुस्नद अहमद–11/68–ह०–24758)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/245–ह०–4613)
(इब्ने अबी शैबा–11/736–ह०–38926)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/276)
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द-6–सफ़ा-264)
(अल बानी-सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/280-ह०-3544)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–7/337–ह०–12026)
(अशरफुल हदाया–उ़र्दू–जिल्द–9–सफ़ा–253)
(तबक़ात इब्ने साअ़द–उ़र्दू–जिल्द–2–हिस्सा–3–सफ़ा–158)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का नादिम होना

➡ हज़रत क़ैस ताबई बयान फ़रमाते हैं कि जब उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) का आख़री वक़्त आया तो आयशा सिद्दीक़ा ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ये वसीअ़त फ़रमाई कि मुझे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और आपके साथियों के साथ दफ़न न करना बल्कि मुझे आपकी अज़वाजे मुताह्रात के साथ दफ़न करना क्योंकि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की वफ़ात के बाअ़द मुझसे एक नया काम सरज़द हो गया है और इस नये काम से मुराद जमल की जंग में शिर्कत करना था।
(बुख़ारी–सहीह–2/137–ह०–1391)
(इब्ने अबी शैबा–11/736–ह०–38927)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि काश मैं हारिस बिन हिशाम जैसे दस आदमी खो देती मगर मैं हज़रत इब्ने जुबैर के हमराह इस सफ़र (यानी जंगे जमल) में कभी शरीक न होती। (हाकिम–4/243–ह०–4609)
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6–सफ़ा–265)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि काश मैं मर जाती और भूली बिसरी हो जाती यानी मेरा नामो निशान न होता
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6–सफ़ा–265)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अपनी नदामत का इज़हार करते हुये इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाया कि कि तुमको किस चीज़ ने रोका था कि तुम मुझको मेरे सफ़र से रोकते इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि मैंने देखा कि आप पर इब्ने जुबैर ग़ालिब आ गये थे पस आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया बाखुदा अगर तुम मुझे मनाअ़ करते तो मैं कभी न निकलती और ये उस वक़्त का वाक़आ़

है जब आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) मुआ़विया की हिमायत में हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से जंग के लिये निकली थीं और फिर जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की हदीस याद आई तो आप वापस तशरीफ़ ले आईं और आपने जंग करने से इन्कार कर दिया इससे माअ़लूम हुआ कि हक़ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ था।
(अशरफुल हदाया–उ़र्दू–जिल्द–9–सफ़ा–253)

तल्हा व जुबैर का रुजूअ़ करना और मोमिन के क़ातिल की तौबा कुबूल नहीं

➡हज़रत कैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मरवी है कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला की क़सम देता हूँ कि क्या तुम्हें वो दिन याद नहीं जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तुमसे पूछा था क्या तुम अ़ली से मुहब्बत करते हो तो फिर आपने जवाबन कहा था कि अ़ली से मुहब्बत करने में मुझे कौन सी चीज़ मानेअ़ है इस पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया था कि तुम अ़ली के ख़िलाफ़ खुरुज करोगे और तुम उनसे जंग करोगे और उस वक़्त तुम हद से बढ़ने वाले होगे और उस वक़्त तुम ज़ालिम होगे फिर हज़रत जुबैर ने कहा कि हाँ मैंने रसूलुल्लाह से सुना है मगर मैं भूल गया था फिर हज़रत जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि मैं आपसे हरगिज़ जंग नहीं करूँगा फिर आप वापस चले गये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/687–ह०–5573, 5574, 5576)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/277)

➡ रिफ़अ़ा बिन इयास अपने वालिद से वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि हम जंगे जमल के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु को पैग़ाम भेजा कि वो मुझसे मिलें हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) उनके पास आये तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुमने हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ सुने हैं कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख तो हज़रत तल्हा रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने कहा जी हाँ फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तो फिर आप मेरे साथ जंग क्यों कर रहे हैं हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने कहा कि मुझे याद नहीं रहा था फिर हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) वापस चले गये। (कंजुल उ़म्माल–6/166–ह०–31662)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/696–ह०–5594)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/92–ह०–14625)

हज़रत तल्हा इसी जंगे जमल में शहीद हुये और मर‘वान बिन हकम मलऊ़न ने छुपकर एक ऐसा तीर मारा कि जिससे आपकी वफ़ात हुई और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत तल्हा व हज़रत जुबैर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) को मुअ़ाफ़ कर दिया था मगर मुअ़ाविया हरामी लाअ़नती को कभी मुअ़ाफ़ नहीं किया क्योंकि वो ऐसे गुनाहों का मुरतकिब था जिसकी तौबा अल्लाह तअ़ाला भी क़ुबूल नहीं फ़रमाता।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के क़ातिल की तौबा कुबूल करने से इन्कार फ़रमां दिया है।
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/425–ह०–3742)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से पूछा गया कि क्या क़ातिल तौबा कर सकता है तो आपने फरमाया कि क़ातिल की तौबा कैसे कुबूल हो सकती है मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि रोज़े क़यामत मक़्तूल क़ातिल का गिरेबान पकडे हुये आयेगा और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब इसने मुझे क़त्ल किया था तो अल्लाह तआ़ला उस कातिल से फ़रमायेगा तू हलाक हो गया है फिर उसे जहन्नम की तरफ़ भेज दिया जायेगा फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि जब ये आयत '' और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बर दस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है'' (सूरह–निसा–4/93) नाज़िल हुई तो उसके बाअ़द ये आयत मन्सूख़ नहीं हुई तो क़ातिल की तौबा कैसे मुम्किन है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/627–ह०–3029)
(नसाई–सुनन–6/48–ह०–4010)
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/425–ह०–3741)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो शिर्क की हालत में मर गया या जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया हो नीज़ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन को क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला उसका कोई भी अ़मल कुबूल नहीं करेगा न ही निफ़िल न फ़र्ज़। (अबू दाऊद–सुनन–4/277–ह०–4270) (इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे। (मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

तो माअ़लूम हुआ कि किसी मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाले की तौबा कुबूल नहीं होती और मुसलमान का क़ातिल दोज़ख़ी है जिसमें वो हमेशा हमेशा रहेगा और अमीर मुआ़विया बेशुमार सहाबा किराम व ताबईन का क़ातिल है और अमीर मुआ़विया ने तो अह्ले बैत में से बाअ़ज़ अफ़राद का क़त्ल किया है इसलिये अमीर मुआ़विया की तौबा का कुबूल होना मुम्किन ही नहीं।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं तल्हा और जुबैर (रज़िअल्लाहु-

तआ़ला अ़न्हुम) उन लोगों में से होंगे जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि “ और हम वो सारी कुदूरत बाहर खींच लेंगे जो दुनिया में उनके सीनों में (मुग़ालते के बाइस एक दूसरे) से थी और वो जन्नत में भाई भाई बनकर आमने सामने बैठे होंगे”।
(सूरह-हिज्र-15/47)
(इब्ने अबी शैबा-11/755-ह०-38976)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जंगे सिफ़्फ़ीन के मक़्तूलीन सब जन्नती हैं मगर मेरा और मुआ़विया का मुआ़मला बाक़ी है यानी हज़रत अ़ली ने मुआ़विया को कभी मुआ़फ़ नहीं किया।
(इब्ने अबी शैबा-उ़र्दू-11/774-ह०-39035)
(इब्ने अबी शैबा-अ़रबी-7/552-ह०-37880)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन माअ़क़िल फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ फ़जिर की नमाज़ पढ़ी तो आपने दुआ़ कुनूत पढ़ी और उसमें ये कलिमात कहे ऐ अल्लाह मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान और अम्र बिन आस को हलाक करदे।
(इब्ने अबी शैबा-2/552-ह०-7123)

रसूलुल्लाह ने सय्यदा आयशा के साथ नरमी बरतने का हुक्म दिया

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपनी बाअ़ज़ अज़वाज के खुरुज का तज़किरा किया हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) हंस पड़ी आपने

फ़रमाया ऐ हुमैरा सोच लो कहीं वो तुम ही न हो फिर आप हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की जानिब मुतवज्जै होकर फ़रमाया कि जब तुम्हें ऐसे हालात का सामना करना पड़े और जब ऐसा मुआ़मला तुम्हारे सामने आये तो तुम उस पर नरमी करना।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/243–ह०–4610)
(बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6–सफ़ा–265)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/276)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि अ़नक़रीब तुम्हारे और हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के दरमियान एक वाक़अ़ा होगा लिहाज़ा जब इस वाक़अ़े का ज़हूर हो तो तुम उनको अमन की जगह वापस कर देना।
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/277)

ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत आ जायेगी

➡ हज़रत सफ़ीना रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत आ जायेगी।
(अबू दाऊद–सुनन–4/530–ह०–4646)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/111–ह०–2226)
(मिश्कात–3/237–ह०–5395)

➡ बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि जब ये ख़िलाफ़त

बज़ोर तलवार होगी तो वो बादशाह होंगे और बादशाहों की तरह एक दूसरे पर गुस्सा करेंगे और बादशाहों की तरह एक दूसरे पर नाराज़ होंगे।
(बुख़ारी–सहीह–4/392–ह०–4359)

➡ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी इस हदीस की शरह में फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी फिर काट खाने वाली बादशाहत का दौर शुरु होगा।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–फ़त्हुल बारी–अ़रबी–7/677)

➡ हज़रत अबू उ़बैदाह और हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस दीन का आग़ाज़ नबूवत और रहमत से हुआ और फिर ख़िलाफ़त और रहमत होगी फिर ज़ालिम बादशाह होंगे फिर ज़मीन में जुल्म व ज़्यादती और फ़साद होगा और सरकशी व जंग और काट खाने वाली बादशाहत होगी और वो रेशम व शर्मगाहों (ज़िना) और शराब को हलाल समझेंगे उन्हें इसी हालत पर रिज़्क़ दिया जायेगा हत्ता कि वो अल्लाह से जा मिलें।
(मिश्कात–3/230–ह०–5375)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/31–ह०–5616)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/124–ह०–873)

मज़कूरा हदीस इस बात पर दलालत करती है कि अमीर मुआ़विया एक बदतरीन ज़ालिम बादशाह था।

➡ हज़रत सईद कहते हैं कि मैंने हज़रत सफ़ीना (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से कहा कि बनू उमय्या तो ये दाअ़वा करते हैं ख़िलाफ़त उनमें है तो हज़रत सफ़ीना–

(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा वो झूटे हैं बल्कि वो बदतरीन बादशाहों में से बादशाह हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/111–ह०–2226)
(अबू दाऊद–सुनन–4/530–ह०–4646)
(औनुल माअ़बूद–शरह अबू दाऊद–सुनन–7/36)

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर व हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा तो तुममें नबूवत (के असरात) बाक़ी रखेगा फिर अल्लाह तआ़ला उसे उठा लेगा फिर अल्लाह तआ़ला जिस क़दर चाहेगा काटने वाले बादशाह होंगे फिर अल्लाह तआ़ला उसे भी उठा लेगा फिर जुल्मो सितम पर मुश्तमिल जब्रिया बादशाहत होगी और ये भी जब तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा उस वक़्त तक रहेगी फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला उसे भी उठा लेगा फिर ख़िलाफ़त नबूवत की तर्ज़ पर होगी हबीब बयान करते हैं कि जब हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज (रहमतुल्लाहि अ़लैहि) ने ख़िलाफ़त संभाली तो मैंने उन्हें ये हदीस लिखी और कहा मैं उम्मीद करता हूँ कि ज़ालिम बादशाह और जब्रिया बादशाह के बाअ़द आप अमीरुल मोमिनीन हैं वो इससे खुश हुये।
(मुस्नद अहमद–8/116–ह०–18596)
(मिश्कात–3/231–ह०–5378)

➡ ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रही जिसमें उन्तीस साल छः माह खुल्फ़ा–ए–अरबआ़ का ज़माना रहा व छः माह हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) का ज़माना है हज़रत सफ़ीना (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं हिसाब लगालो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त

दो साल, हज़रत उ़मर की ख़िलाफ़त दस साल, हज़रत उ़स्मान की ख़िलाफ़त बारह साल व हज़रत मौला अ़ली की ख़िलाफ़त पाँच साल छः (6) माह रही और हज़रत इमाम हसन की ख़िलाफ़त छः माह रही।
(अबू दाऊद–सुनन–4/530–ह०–4646)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/111–ह०–2226)
(मिश्कात–3/237–ह०–5395)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे बाअ़द ऐसा ज़माना आयेगा कि कुछ लोग मेरी सुन्नत व मेरे तरीक़े के ख़िलाफ चलेंगे और दोज़ख़ की तरफ़ बुलाने वाले लोग होंगे तो जो लोग उनकी बात मानेंगे वो उनको दोज़ख़ में झोंक देंगे फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि आप हमें उनके कुछ औसाफ़ बयान फ़रमांदें आपने फ़रमाया कि वो लोग हमारी क़ौम से ही होंगे और हमारी ही ज़बान बोलेंगे फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर मैं उन लोगों का ज़माना पाऊँ तो मेरे लिये क्या हुक्म है आपने फ़रमाया तुम ऐसे हालात में मुसलमानों की जमाअ़त व उनके इमाम को लाज़िम पकड़ना और तुम अपने अमीर का हुक्म सुनना और उसकी इताअ़त करना चाहे तुम्हारी पीठ पर कोढ़े मारे जायें और तुम्हारा माल छीन लिया जाये फिर भी तुम अपने अमीर का हुक्म सुनना व उसकी इताअ़त करना और तुम उन तमाम फ़िरक़ों से अलग रहना अगरचा तुम्हें दरख़्त की जड़ ही क्यों न चबाना पड़े यहाँ तक कि उसी हालत में तुम्हें मौत आ जाये।
(बुख़ारी–सहीह–3/677–ह०–3606, 7084)
(मुस्लिम–सहीह–3/718–ह०–4785)
(मिश्कात–3/234–ह०–5382)

➡ मुअ़ाविया ये कहता था कि में पहला बादशाह हूँ और इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि अमीर मुअ़ाविया कहता था कि मैं अपनी बादशाहत से राज़ी हूँ।
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–3/157)
(औनुल माअ़बूद–शरह अबू दाऊद–सुनन–7/36)
(इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–9/154)

➡ मुल्ला अ़ली क़ारी फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़त तीस साल रही और आख़िरी ख़लीफ़ा हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) हैं जो छः माह तक ख़लीफ़ा रहे और मुअ़ाविया ख़लीफ़ा नहीं बल्कि सिर्फ़ एक हुक्मरान था।
(मुल्ला अ़ली क़ारी–मिरक़ातुल मफ़ातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह–उ़र्दू-जिल्द-9/सफ़ा-865-हदीस न०-5375 के तहत)

➡ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं कि मुअ़ाविया ख़लीफ़ा नहीं था और उसका तरीक़ा बादशाहों वाला था
(फ़त्हुल बारी शरह बुख़ारी–अ़रबी–जिल्द–12–सफ़ा–409–बुख़ारी की हदीस न०-7001, 7002 के तहत)

हकम की औलाद का रसूलुल्लाह के मिम्बर पर उछलना कूदना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने एक ख़्वाब देखा कि आपके मिम्बर पर बनू हकम उछल कूद रहे हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम बड़े गुस्से की हालत में घर से बाहर निकले और फिर फ़रमाया कि मैंने हकम की औलाद को अपने मिम्बर पर बन्दरों की तरह उछलते कूदते हुये देखा है यानी मेरे बाअ़द ये मेरे मिम्बरों पर बैठेंगे हज़रत अबू हुरैरा

फ़रमाते हैं अल्लाह की क़सम इस ख़्वाब के देखने के बाअ़द आपको किसी ने भी हंसते हुये नहीं देखा आप इतने ग़मगीन हुये कि मुस्तक़बिल में ये होगा।
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–अ़रबी–1/1746–ह०–6461)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–उ़र्दू–5/73–ह०–6430)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/615–ह०–8481)
(इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–8/259)

रसूलुल्लाह ने हकम व उसकी औलाद पर लाअ़नत फ़रमाई

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मरवान के बाप हकम पर उस वक़्त लाअ़नत फ़रमाई थी जब मर'वान अभी अपने बाप की पुश्त में था और मर'वान अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत का एक हिस्सा है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/615–ह०–8483)
(नसाई–सुनन कुबरा–10/257–ह०–11427)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/373–ह०–2674)
(तफ़्सीर इब्ने कसीर–उ़र्दू–जिल्द–26–स०–259)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हकम व उसकी औलाद पर लाअ़नत फ़रमाई। (हाकिम–6/617–ह०–8485)

➡हज़रत अम्र बिन मुर्राह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है आप बयान करते हैं कि हकम बिन अबुल आ़स ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि–

वसल्लम) की बारगाह में आने की इजाज़त तलब की तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसके कलाम व उसकी आवाज़ को पहचान लिया फिर आपने फ़रमाया कि उसको इजाज़त देदो और उस पर अल्लाह की लाअ़नत हो और जो उसकी पुश्त से निकलेगा उस पर भी अल्लाह की लाअ़नत सिवाए मोमिनों के और उसकी पुश्त में से मोमिन कम ही होंगे और वो दुनिया को तरजीह देंगे और आख़िरत को हल्का जानेंगे और ये मक्कार व धोके बाज़ होंगे इनको दुनिया की बहुत दौलत दी जायेगी मगर आख़िरत में इनका कोई हिस्सा न होगा। (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/616–ह०–8484)

उम्मत की हलाकत कुरैश के चन्द लड़को के हाथों से होगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की हलाकत व तबाही कुरैश में से एक क़बीला बनू उमय्या के चन्द लड़कों के हाथों होगी तो मरवा'न ने तआ़ज्जुब से कहा नौजवानों के हाथों से फिर हज़रत अबू हुरैरा ने कहा अगर तू चाहता है तो मैं उनके नाम बता देता हूँ वो फुलां फुलां के बेटे होंगे (बुख़ारी–3/676-ह०-3605)
(बुख़ारी–सहीह–6/381–ह०–7058)
(मुस्लिम–सहीह–5/422–ह०–7325)
(मिश्कात–3/236–ह०–5388)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सूरह नस्र की आयत तिलावत

फ़रमाई ''जब अल्लाह की मदद और फ़तह आये और तुम लोगों को देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं' फिर आपने फ़रमाया कि जिस तरह लोग इसमें दाख़िल होंगे उसी तरह इससे निकल भी जायेंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/640–ह०–8518) (दारमी–सुनन–1/129–ह०–91)

कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ बनू उमय्या के आअ़माल

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी सुन्नत को सबसे पहले बनू उमय्या का एक आदमी बदलेगा।
(इब्ने अबी शैबा–11/39–ह०–37027)
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/409–ह०–3719)

नमाज़े ईदैन से पहले ख़ुत्बा और ईदैन में अज़ान देने की बिदअ़त

➡ बनू उमय्या ने जो सबसे बड़ी बिदअ़त ईजाद की वो ये थी कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर ख़ुत्बे में ऐलानिया लाअ़न ताअ़न करते थे चूंकि लोग इसका सुनना गवारा नहीं करते थे और ख़ुत्बा सुनने से पहले ही उठकर चले जाते थे इसलिये अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने नमाज़े ईदैन से पहले ही ख़ुत्बा पढ़ना शुरु किया इस बिदअ़त को हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने ख़त्म किया आपने अपने तमाम गवर्नरों के नाम फ़रमान जारी किया कि ख़ुत्बे में जो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के मुताअ़ल्लिक़ नाज़ेबा व सख़्त–

अल्फ़ाज़ शामिल कर दिये गये हैं उन्हें फौरन निकाल दिया जाये और उनकी जगह पर कुरान मजीद की ये आयत शामिल कर दी जाये “ बेशक अल्लाह तअ़ाला (हर एक साथ) अ़द्ल व एहसान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबत दारों को देते रहने का और बेहयाई और बुरे कामों से और सरकशी और नाफ़रमानी से मनाअ़ फ़रमाता है वो तुम्हें नसीहत फ़रमाता है ताकि तुम खूब याद रखो” (सूरह–नहल–16/90)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–सफ़ा–347)
(सीरत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़–सफ़ा–139)

➡इमाम जलालुद्दीन सयूती फ़रमाते हैं कि सबसे पहले अमीर मुअ़ाविया ने बैठकर खुत्बा सुनाया इसको इमाम इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया और नमाज़े ईदैन से पहले खुत्बा पढ़ना अमीर मुअ़ाविया ने ईजाद किया इस को इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने रिवायत किया है और सबसे पहले ईद की अज़ान मुअ़ाविया ने ही मुक़र्रर की इसको इमाम इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया।
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–सफ़ा–289)
(इब्ने अबी शैबा–11/14–ह०–36885)
(इब्ने अबी आसिम–किताबुल अवाइल–सफ़ा–131)
(मुस्नद इमाम शाफ़ई–1/178–438)

सबसे पहले ईदैन में बनी मर‘वान ने अज़ान दिलवाई (इब्ने अबी आसिम–किताबुल अवाइल–सफ़ा–127)

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि मर‘वान बिन हकम ने ईद की नमाज़ से पहले खुत्बा पढ़ा तो मैंने मर‘वान से कहा कि तुम लोंगों ने हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि–

वसल्लम) की सुन्नत को ही बदल दिया क्योंकि नमाज़ खुत्बे से पहले है मर‘वान ने कहा जो तरीक़ा पहले था वो तर्क कर दिया गया है।
(बुख़ारी–सहीह–1/585–ह०–956)
(मुस्लिम–सहीह–1/162–ह०–177)

अमीर मुआ़विया ने बुध के दिन जुमआ़ की नमाज़ पढ़ी

➡ अमीर मुआ़विया ने सिफ़्फ़ीन की तरफ़ जाते वक़्त बुध के दिन जुमआ़ की नमाज़ पढ़ाई और मुआ़विया के पैरोकारों ने भी नमाज़ पढ़ी।
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–2–हिस्सा–3–सफ़ा–57)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़्वास–उ़र्दू–सफ़ा–57)

अमीर मुआ़विया नमाज़े वित्र एक रकअ़त पढ़ता था

➡इमाम तहावी शरह मआ़नी उल आसार (तहावी शरीफ़) में लिखते हैं कि हज़रत इकिरमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के साथ अमीर मुआ़विया के पास था हमें बातें करते रात का एक हिस्सा गुज़र गया पस मुआ़विया ने खड़े होकर एक रकअ़त वित्र पढ़ी तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने कहा कि इस हिमार (गधे) ने ये चीज़ कहाँ से ली है।
(शरह मआ़नी उल आसार–तहावी शरीफ़–उ़र्दू–जि०–1–सफ़ा–828–रक़म–1678)
(फ़ैज़ुल बारी–अ़ला सहीह बुख़ारी–अ़रबी–जि०–4–सफ़ा–495–रक़म–3764)

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि मुसलमानों का इस पर इज्माअ़ है कि नमाज़े वित्र तीन रकअ़त है और सलाम तीसरी रकअ़त में फेरा जायेगा और फुक़हा में से एक रकअ़त वित्र का कोई भी क़ायल नहीं है और हदीस पाक में है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक रकअ़त वाली नमाज़ से ने मनाअ़ फ़रमाया।
(तशरीहात बुख़ारी-उ़र्दू-जिल्द-5-सफ़ा-511)

मुआ़विया ने सदक़ा-ए-फ़ित्र की सुन्नत में अपनी राय क़ायम की

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मौजूद थे तो हम हर छोटे बड़े और आज़ाद गुलाम की तरफ़ से एक साअ़ जौ या एक साअ़ खजूर या एक साअ़ मुनक़्क़ा सदक़ा-ए-फ़ित्र निकालते थे लेकिन जब मुआ़विया हज या उ़मराह के लिये यहाँ आया तो उसने लोगों को ख़िताब किया और उसमें उसने ये भी कहा कि मैं समझता हूँ कि शाम से आने वाली गन्दुम का निस्फ़ साअ़ खजूरों के एक साअ़ के बराबर है हज़रत अबू सईद खुदरी ने कहा कि जब तक मैं ज़िन्दा हूँ हमेशा उसी तरह से निकालता रहूँगा जिस तरह अ़हदे नबवी में निकाला करता था।
(मुस्लिम-सहीह-2/323-ह०-2284)

-: मुआ़विया शराबी था :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं एक मर्तबा मैं और मेरे वालिद

अमीर मुअ़ाविया के पास गये तो उसने हमें बिस्तर पर बिठाया फिर खाना खिलाया फिर पीने के लिये शराब लाई गई जिसे पहले अमीर मुअ़ाविया ने पिया फिर वो बर्तन मेरे वालिद को पकड़ा दिया तो वो कहने लगे कि जब से हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इसकी मुमानियत फ़रमाई है तब से मैंने इसे नहीं पिया फिर मुअ़ाविया ने कहा कि मैं कुरैश का खूबसूरत नौ-जवान था और सबसे ज़्यादा उ़म्दाह दांतो वाला था मुझे दूध व अच्छी बातें करने वाले इन्सान के अ़लावा शराब से बढ़कर किसी चीज़ में लज़्ज़त महसूस नहीं होती।
(मुस्नद अहमद-उ़र्दू-10/661-ह०-23329)
(मुस्नद अहमद-अ़रबी-16/473-ह०-22837)
(मुख़्तसर तारीख़ दमिश्क़-अ़रबी-जिल्द-12-सफ़ा-45,46)
(इब्ने असाकिर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-27/127)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-5/37-ह०-8022)

हालांकि अमीर मुअ़ाविया ये जानता था कि शराब पीना हराम है और गुनाहे कबीरा है इसके बावुजूद भी अमीर मुअ़ाविया शराब पीता था और उस पर उसका ये कहना कि शराब से मुझे सबसे ज़्यादा लज़्ज़त मिलती है तो अमीर मुअ़ाविया का ये अ़मल कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ और फ़िस्क़ व फुजूर पर मुश्तमिल था बाअ़ज़ लोग ऐसे शराबी को झूटी, मनगढ़त हदीस के मुताबिक़ हादी व महदी कहते हैं क्या हादी व महदी ऐसा होता है और मुनाफ़िक़ों व नासबियों के मुताबिक़ अगर हादी व महदी ऐसा ही होता है तो ये उन्हें ही मुबारक हो हालांकि अमीर मुअ़ाविया की रिवायत और रसूलुल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ ऐसा शराबी वाजिबुल क़त्ल है।

➡ अमीर मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान रिवायत करता

है कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जो शख़्स शराब पिये तो उसे कोढ़े मारो अगर दोबारा पिये तो दोबारा कोढ़े मारो यहाँ तक कि अगर चौथी बार पिये तो उसे क़त्ल करदो। (मुस्नद अहमद–10/661–ह०–23329)
(मुस्नद अहमद–7/26-हदीस-16972,16984,16994,17012)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
आपसे शराब और जुऐ की निस्बत सुवाल करते हैं तो (आप) फ़रमांदें कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है।
(सूरह–बक़राह–2/219)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
ऐ ईमान वालो बेशक शराब व जुआ और नसब किये गये बुत और फ़ाल के तीर (सब) नापाक और शैतानी काम हैं सो तुम इनसे परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (सूरह–मायदा–5/90)

➡ हज़रत इब्ने ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला ने शराब पीने वाले व पिलाने वाले, बेचने वाले ख़रीदने वाले, अंगूर निचोड़ने वाले, निचुड़वाने वाले, उसके उठाने वाले और जिसकी तरफ़ उठाई जा रही हो उन सब पर लाअ़नत फ़रमाई है। (इब्ने माजा–सुनन–1/100–ह०–3380)
(अबू दाऊद–सुनन–4/868–ह०–3674)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से शहद की शराब के बारे में पूछा गया तो–

आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शराब में नशा हो वो हराम है।
(मुस्लिम–सहीह–5/237–ह०–5211)
(निसाई–सुनन–3/643–ह०–5597, 5598)

➡ हज़रत मिक्दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) एक मर्तबा अमीर मुआ़ाविया के पास गये अमीर मुआ़ाविया ने हज़रत मिक्दाम से कहा क्या अपको माअ़लूम है कि हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) वफ़ात पा गये तो ये सुनते ही हज़रत मिक्दाम ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तो मुआ़ाविया बोला कि क्या आप इसे एक बड़ी मुसीबत समझते हो तो हज़रत मिक्दाम ने जवाब दिया कि मैं इसे एक बड़ी मुसीबत क्यों न समझूं जबकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत हसन को अपनी गोद में बिठाकर फ़रमाया था कि हसन मुझसे है व हुसैन अ़ली से पस वहाँ मौजूद एक असदी शख़्स ने कहा (मआ़ाज़ अल्लाह) कि हसन एक दहकता हुआ अंगारा था जिसे अल्लाह तआ़ाला ने बुझा दिया

फिर हज़रत मिक्दाम ने कहा (ऐ मुआ़ाविया) आज मैं तुम्हें गुस्सा दिलाके रहूँगा और वो कुछ सुनाऊँगा जो तुम्हें बुरा लगे फिर आपने कहा ऐ मुआ़ाविया अगर मैं सच कहूँ तो मेरी तस्दीक़ करना और अगर ग़लत कहूँ तो मेरी तरदीद करना मुआ़ाविया ने कहा ठीक है ऐसा ही करुँगा फिर हज़रत मिक्दाम ने कहा तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने सोना पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है मुआ़ाविया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक्दाम ने कहा तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता–

हूँ क्या तुम जानते हो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने रेशम पहनने से मनाअ़ किया है मुआ़विया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दरिन्दों की खालें पहनने व उन पर सवार होने से मनाअ़ किया है मुआ़विया ने कहा हाँ फिर हज़रत मिक़दाम ने कहा कि अल्लाह की क़सम ऐ मुआ़विया मैंने ये सब काम तेरे घर में होते हुये देखे हैं फिर अमीर मुआ़विया ने कहा कि ऐ मिक़दाम मुझे माअ़लूम था कि तुमसे हरगिज़ बच नहीं सकूँगा। (मुस्नद अहमद–7/141–ह०–17321)
(अबू दाऊद–सुनन–4/193–ह०–4131)
(अबू दाऊद–सुनन अ़रबी–4/432–ह०–4128)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–अ़रबी–3/34–ह०–2628)
(इब्ने असाकिर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–60/187,188)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–158, 159)

हालांकि अमीर मुआ़विया ये जानता था कि दरिन्दों की खालें पहनने व उन पर सवार होने व मर्दों को सोना पहनने से हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने से मनाअ़ फ़रमाया है फिर भी मुआ़विया ख़िलाफ़े सुन्नत काम किया करता था फिर भी नासबी उसे हादी व महदी कहते हैं हालांकि मुआ़विया के हादी व महदी होने वाली हदीस बिल्कुल मनघढ़त व झूटी व मौजूअ़ और मुन्कर है इसका ज़िक्र इन्शा अल्लाह आगे सफ़हात पर आयेगा।

➡ हज़रत अबू शेख़ हुनाई कहते हैं कि मैं एक मर्तबा मुआ़विया के पास चन्द सहाबा किराम की मजलिस में–

बैठा हुआ था तो अमीर मुआ़विया ने उनसे पूछा कि क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दरिन्दों की खालें पहनने व उन पर सवार होने से मनाअ़ फ़रमाया है तो उन्होंने कहा जी हाँ फिर अमीर मुआ़विया ने उनसे पूछा कि क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मर्दों को सोना पहनने से मनाअ़ फ़रमाया है तो उन्होंने कहा जी हाँ।
(मुस्नद अहमद–7/32–ह०–16989, 16958)

माले ग़नीमत के मुआ़मले में कुरानो सुन्नत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी

➡ माले ग़नीमत के तक़सीम के मुआ़मले में भी अमीर मुआ़विया ने कुरान और सुन्नत के सरीह अहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की कुरान व सुन्नत की रु से पूरे माले ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा बैतुल माल में जमाअ़ होना चाहिये और बाक़ी के चार हिस्से उस फ़ौज में तक़सीम होने चाहिये जो लड़ाई में शरीक हुये थे मगर मुआ़विया ने हुक्म दिया कि माले ग़नीमत में से सोना और चाँदी उनके लिये अलग निकाल लिया जाये और बाक़ी माल तक़सीम किया जाये।
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–144)
(हाफ़िज़ इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–जिल्द–8–सफ़ा–29)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–4–सफ़ा–82)

➡ हसन रिवायत करते हैं कि ज़ियाद जो कि कूफ़ा का गवर्नर था उसने अमीर मुआ़विया की तरफ़ से हज़रत हकम बिन अम्र ग़िफ़ारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)–

को खुरासान की तरफ़ एक लश्कर के साथ भेजा पस उन्होंने खुरासान फ़तह कर लिया और उन्होंने कसीर माले ग़नीमत हासिल किया ज़ियाद ने हज़रत हकम को एक ख़त लिखा कि अमीर मुआ़विया ने मेरे पास एक ख़त भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि माले ग़नीमत में से सोना व चाँदी उनके लिये अलग कर लिया जाये इसलिये आप सोना व चाँदी मुजाहिदीन में तक़सीम न करें फिर हज़रत हकम ने ज़ियाद की तरफ़ लिख भेजा कि तुम्हारा ख़त मुझे मिला जिसमें तुमने मुआ़विया के ख़त का ज़िक्र किया है कि माले ग़नीमत में से सोना व चाँदी मुआ़विया के लिये अलग कर लिया जाये जबकि मेरे पास मुआ़विया के ख़त से पहले अल्लाह तआ़ला की किताब मौजूद है और अल्लाह तआ़ला की क़सम अगर ज़मीनो आसमान किसी बन्दे को कुचलने के लिये बाहम मिल जायें और वो बन्दा ख़ौफ़े इलाही रखता हो तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये कोई न कोई निजात की राह पैदा फ़रमां देता है फिर इसके बाअ़द हज़रत हकम ने कुरानो सुन्नत के मुताबिक़ माल को तक़सीम कर दिया हज़रत हकम के इस अ़मल से नाराज़ होकर मुआ़विया ने हज़रत हकम को माअ़जूल कर दिया और गिरफ़्तार करके उनको क़ैद कर दिया और क़ैद में ही उनका इन्तिक़ाल हुआ और वो कहा करते थे कि मेरा इख़्तिलाफ़ फ़ी सबीलिल्लाह है। (हाकिम–अल मुस्तदरक-5/126-ह०-5869) (इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कबीर–अ़रबी–जिल्द–9–सफ़ा–28) (अल कामिल-फ़ी-तारीख़–इब्ने असीर –अ़रबी–जिल्द–3-सफ़ा-324) (इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–5-सफ़ा-229,230)(इमाम ज़हबी–तहज़ीब तहज़ीबुल कमाल–फ़ी असमाइ रिंजाल–अ़रबी–जिल्द–2–सफ़ा–416) (अल्लामा नुअ़मानी–हज़रत अ़ली और क़िसासे उ़स्मान–उ़र्दू–सफ़ा–32)

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है फ़रमाते हैं कि एक जंग में मुआ़विया लोगों का अमीर था हमने उसमें बहुत ग़नाइम हासिल किये उसमें चाँदी के बर्तन भी थे तो मुआ़विया ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि वो उन चाँदी के बर्तनों को लोगों को मिलने वाले अ़तियात (तन्ख़्वाह) के बदले फ़रोख़्त करदे तो लोगों ने उनको ख़रीदने में जल्दी की जब ये बात हज़रत उ़बादा बिन सामित को पहुँची तो वो खड़े हुये और कहा–

कि मैंने हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि आपने सोने के बदले सोने की व चाँदी के बदले चाँदी की और गन्दुम के बदले गन्दुम की व खजूर के बदले खजूर की बैअ़ (फ़रोख़्त) से मनाअ़ फ़रमाया है इल्ला ये कि बराबर बराबर हो या नक़्द बा नक़्द हो फिर जिसने ज़्यादा दिया या ज़्यादा लिया तो उसने सूद का लेन दैन किया ये सुनकर जो लोगों ने लिया था वापस कर दिया फिर जब ये बात मुआ़विया को पहुँची तो वो खुत्बा देने के लिये खड़ा हुआ और उसने कहा सुनो कि लोगों का हाल क्या है कि वो रसूलुल्लाह की हदीस बयान करते हैं मैं भी आपके साथ रहा हूँ लेकिन हमने ये हदीस नहीं सुनी इस पर हज़रत उ़बादा बिन सामित खड़े हो गये और रसूलुल्लाह से जो सुना था वो सारा वाक़आ़ दोहरा दिया और कहा हमने जो रसूलुल्लाह से सुना है वो हदीस हम ज़रुर बयान करेंगे ख़्वाह अमीर मुआ़विया इसे ना पसंद करे चाहे मुआ़विया की ज़िल्लत हो या मुआ़विया की नाक ख़ाक आलूद हो मुझे पर‘वाह नहीं कि मैं उसके लश्कर में उसके साथ एक सियाह रात भी न रहूँ। (मुस्लिम–सहीह–3/322–ह०–4061)

मुआ़विया ने सुन्नत को बदलकर अपनी राय से कई बिदअ़तें शुरु कीं

➡ इमाम जुहरी फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और चारों ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन के अ़हद में सुन्नत ये थी कि न मुसलमान किसी काफ़िर का वारिस हो सकता था और न काफ़िर किसी मुसलमान का वारिस हो सकता था मगर अमीर मुआ़विया ने अपने ज़माना-ए-हुकूमत में मुसलमान को काफ़िर का वारिस क़रार दिया व काफ़िर को मुसलमान का वारिस क़रार न दिया और फिर हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने आकर इस बिदअ़त को ख़त्म किया। (मौलाना मौदूदी-ख़िलाफ़तो मलूकियत-उ़र्दू-सफ़ा-143) (इब्ने कसीर-अल बिदाया वन निहाया-अ़रबी-जिल्द-8-सफ़ा-139) (इब्ने कसीर-अल बिदाया वन निहाया-अ़रबी -जिल्द-9-सफ़ा-232)

➡ इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दियत के मुआ़मले में भी मुआ़विया ने सुन्नत को बदल दिया था सुन्नत ये थी कि मुआ़हिद की दीयत मुसलमान के बराबर होगी मगर मुआ़विया ने उसको निस्फ़ कर दिया और बाक़ी निस्फ़ खुद लेनी शुरु कर दी (इब्ने कसीर-अल बिदाया वन निहाया-अ़रबी-जिल्द-8-सफ़ा-139) (मौलाना मौदूदी-ख़िलाफ़तो मलूकियत-उ़र्दू-सफ़ा-144)

मौला अ़ली से बुग्ज़ की वजह से मुआ़विया ने तलबिया नहीं पढ़ी

➡ हज़रत सईद बिन जुबैर बयान करते हैं कि मैं हज़रत

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) के साथ अ़राफ़ात में था वो फ़रमाने लगे क्या वजह है कि लोगों को लब्बैक पुकारते हुये नहीं सुनता मैंने कहा कि लोग मुआ़ाविया से डरते हैं तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास अपने ख़ैमे से निकले और बुलन्द आवाज़ से पुकारा अल्लाहुम्मा लब्बैक लब्बैक फिर फ़रमाया तआ़ाज्जुब है कि उन्होंने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ रखने की वजह से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की सुन्नत को छोड़ दिया और एक रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि आपने फ़रमाया कि मुआ़ाविया की नाक ख़ाक आलूदा हो और ऐ अल्लाह मुआ़ाविया पर लाअ़नत फ़रमां कि उसने हज़रत अ़ली से बुग्ज़ रखने की वजह से रसूलुल्लाह की सुन्नत को छोड़ दिया। (नसाई–सुनन–4/628–ह०–3009)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–6/352–ह०–9447)

मुआ़ाविया मौला अ़ली पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न करता व कर‘वाता था

➡ अमीर मुआ़ाविया ने जब 41 हिजरी में मुग़ीरा बिन शुअ़बा को कूफ़ा का वाली मुक़र्रर किया तो मुग़ीरा को बुलाकर कहा कि मेरा इरादा ये था कि तुम्हें बहुत सी बातें समझाऊँ मगर मैं छोड़ देता हूँ क्योंकि मुझे तुम्हारी बसीरत व दानाई पर मुझे पूरा भरोसा है कि तुम खूब जानते हो कि किन बातों में मेरी खुशनूदी और हुकूमत की तरक्क़ी है मगर एक बात का ज़िक्र किये बग़ैर नहीं रह सकता कि तुम अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को ग़ाली देना और उनकी मज़म्मत करना और असहाबे अ़ली की ऐ़ब जोई करना और उन्हें अपने से दूर रखना और उनकी कोई बात न सुनना फिर मुग़ीरा बिन शुअ़बा हरामी ने

ऐसा ही किया मुग़ीरा बिन शुअ़बा लईन ने सात बरस चन्द महीने कूफ़ा में हुकूमत की।
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जिल्द–4–हि०–1–सफ़ा–82)

➡एक निहायत मकरुह बिदअ़त मुआ़विया के अ़हद में शुरु हुई कि मुआ़विया खुद और मुआ़विया के हुक्म से उसके तमाम गर्वनर खुत्बों में मिम्बरों पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर सब्बो शत्म की बौछार करते थे यहाँ तक कि मस्जिदे नबवी में मिम्बरे रसूल पर ऐ़न रोज़ाए नबवी के सामने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के महबूब तरीन अ़ज़ीज़ो को गालियाँ दी जाती थीं और हज़रत मौला अ़ली की औलाद और उनके क़रीब तरीन रिश्तेदार अपने कानों से ये गालियाँ सुनते थे और किसी के मरने के बाअ़द उसको गालियाँ देना शरीअ़त के ख़िलाफ़ तो था ही व इन्सानी अख़लाक़ के भी ख़िलाफ़ था और ख़ास तौर पर जुमआ़ के खुत्बे को इस गन्दगी से आलूदा करना तो दीन व अख़लाक़ के लिहाज़ से भी सख़्त घिनौना फ़ेअ़ल था। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी–फ़त्हुल बारी–शरह सहीह बुख़ारी–अ़रबी–जि०–7–सफ़ा–89)
(तारीख़े तबरी–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा–188)
(मौलाना मौदूदी–ख़िलाफ़तो मलूकियत–उ़र्दू–सफ़ा–144)
(इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–8/259)
(इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–9/80)

मुआ़विया ने हज़रत साअ़द को हुक्म दिया कि अ़ली को बुरा कहें

➡हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान–

ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास को हुक्म दिया कि अ़ली को बुरा कहो और पूछा कि तुम हज़रत अ़ली को बुरा क्यों नहीं कहते हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास ने कहा मैं तीन बातों की वजह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हरगिज़ बुरा नहीं कहूँगा जो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाई थीं मैंने सुना है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली से ग़ज़्बा-ए-तबूक पर जाते वक़्त मुख़ातिब होकर फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसा कि हारुन का मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के नज़दीक था पर मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं

और मैंने सुना है ख़ैबर के दिन आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं ऐसे शख़्स को झण्डा दूँगा जो मुहब्बत रखता है अल्लाह व उसके रसूल से और अल्लाह और उसका रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं और उसके हाथों पर अल्लाह तआ़ाला फ़तह देगा तो ये सुनकर हम इंतिज़ार करते रहे और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली को बुलाओ हज़रत अ़ली आये तो उनकी आँखें दुख्तीं थीं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की आँखों पर अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया (पस उनकी आँखों की तमाम तकलीफ़े ख़त्म हो गईं) फिर हज़रत मौला अ़ली को झण्डा दिया गया और अल्लाह तआ़ाला ने हज़रत अ़ली के हाथ पर फ़तह दी और मैंने सुना है जब ये आयत नाज़िल हुई कि बुलायें हम अपने बेटों को और बुलाओ तुम अपने बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों-

को और अपने आपको और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं फिर हम मुबाहला करते हैं और झूठों पर अल्लाह की लाअ़नत भेजते हैं (सू०-आले इमरान-3/61) तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम को बुलाया और फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं।
(मुस्लिम–सहीह–4/559–ह०–6220)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1078–ह०–3724)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/225–ह०–4575)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/61)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/113–ह०–54)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/43–ह०–11)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि आले मर'वान में से एक आदमी को मदीने का आ़मिल बनाया गया उसने हज़रत सह्ल बिन साअ़द को बुलाया और उनको हुक्म दिया कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुरा कहें हज़रत सह्ल बिन साअ़द ने इन्कार कर दिया उसने कहा अगर तुम इस बात से इन्कार करते हो तो यूँ कहो अल्लाह तआ़ला अबू तुराब पर लाअ़नत करे (अबू तुराब हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की कुन्नियत है)
(मुस्लिम–सहीह–4/565–ह०–6229)

मुआ़विया ने अ़ली को बुरा कहा तो साअ़द को मुआ़विया पर गुस्सा आया

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मुआ़विया हज के मौक़ेअ़ पर–

आया तो हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास मुआ़विया के पास आये और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का तज़किरा किया तो मुआ़विया हज़रत अ़ली की ऐ़ब जोई करने लगा और अ़ली को बुरा भला कहने लगा तो हज़रत साअ़द को गुस्सा आ गया और फिर आपने फ़रमाया कि तुम उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ ऐसा कहते हो खुदा की क़सम अगर मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की एक ख़सलत भी मुझमें होती तो वो मुझे दुनिया भर की तमाम चीज़ों से महबूब होती खुदा की क़सम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का मैं दामाद होता और हज़रत मौला अ़ली के बेटे जैसा मेरा बेटा होता तो वो मुझे दुनिया भर की तमाम चीज़ों से महबूब होता और मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है कि जिसका मैं दोस्त हूँ तो अ़ली भी उसके दोस्त हैं और ऐ अ़ली तुम मेरे नज़दीक ऐसे हो जैसे हारुन मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के नज़दीक थे मगर ये कि मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं और मैंने आपको फ़रमाते हुये सुना कि कल मैं झन्डा उस शख़्स को दूँगा जो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को महबूब रखता है और आपने फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है।

(इब्ने माजा–सुनन–1/74–ह०–121)
(इब्ने अबी शैबा–9/504–ह०–32741)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/362–ह०–1093)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/44–ह०–12)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/195–ह०–126)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–2–हिस्सा–3–सफ़ा–36)

➡ बनू उमय्या खुत्बों में मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ देते और उनकी शान में बेअदबी व लाअ़न

ताअ़न करते थे जब इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) और मुआ़विया के दरमियान जिन शराइत पर सुलह हुई थी तो उन शराइत में एक शर्त ये भी थी कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर सब्बो शत्म नहीं किया जायेगा मगर मुआ़विया हरामी लाअ़नती ने एक भी शर्त की तकमील नहीं की और मुसलसल खुत्बों में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को खुत्बों में गालियाँ दी जाती थीं और उनकी बे अदबी व लाअ़न ताअ़न किया जाता रहा फिर हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) ने अपनी हुकूमत इसे ख़त्म किया।

(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उ़र्दू–सफ़ा–245)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–जिल्द–4–हिस्सा–8–सफ़ा–353)
(अल कामिल इब्ने असीर–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–2, 3, 4)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उ़र्दू–सफ़ा–163)
(इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम–उ़र्दू–सफ़ा–155, 156)
(तारीख़े इसलाम–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–315)
(इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा–उ़र्दू–सफ़ा–158)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–सफ़ा–347)

मुआ़विया ने हुज्र से कहा अ़ली पर लाअ़नत करो तो छोड़ दिये जाओगे

➡ हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) वो सहाबी हैं जो मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बहुत मुहब्बत करते थे और ये जंगे सिफ़्फ़ीन व जंगे जमल में मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत हुज्र बिन अ़दी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) व उनके साथियों को गिरफ़्तार करके शाम पहुँचा दिया गया तो मुआ़विया की तरफ़ से उनके सामने दो बातें रखी गईं और उनसे मुतालबा किया गया कि अगर वो अ़ली (अ़लैहिस्सलाम)

से बेज़ारी का इज़हार करदें और अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर वो लोग लाअ़नत करें तो जिस शख़्स ने ऐसा किया उसे छोड़ दिया जायेगा और जिसने ऐसा न किया उसे क़त्ल कर दिया जायेगा इसके जवाब में हुज्र बिन अ़दी और उनके साथियों ने कहा कि जिस बात की तरफ़ तू हमें दाअ़वत दे रहा है उसके मुक़ाबले में तलवार की धार पर ठहरना हमारे लिये बहुत आसान है अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और आपके वसी मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को राज़ी करना हमें आग में दाख़िल होने से ज़्यादा महबूब है पस कुछ लोगों ने इन्कार किया तो वो क़त्ल हो गये और कुछ लोगों ने क़त्ल हो जाने के डर की वजह से उनका मुतालबा मन्जूर कर लिया तो वो बच गये हुज्र बिन अ़दी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ सात अफ़राद को क़त्ल कर दिया गया।

(इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–5–सफ़ा–242)
(तारीख़े इस्लाम–इमाम ज़हबी–अ़रबी–जि०–4-सफ़ा–194)
(तारीख़े इब्ने ख़ल्दून–उ़र्दू–जि०–2–सफ़ा–489)
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जि०–3-सफ़ा-24)
(तारीख़े मदीना दमिश्क़–इब्ने अ़साकिर–अ़रबी–जि०–12–सफ़ा–222)
(मुख़्तसर–तारीख़े दमिश्क़–अ़रबी–जि०–6–सफ़ा–241)
(अल कामिल–फ़ी तारीख़–अ़रबी–3/335)
(तारीख़े तबरी–उ़र्दू–जि०–4–हि०–1–सफ़ा–98, 99)

मुआ़विया के सामने मुआ़विया के लोग हज़रत अ़ली को गालियाँ देते थे

➡ हज़रत अ़ली बिन अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि अमीर मुआ़विया बिन अबू

सुफ़ियान के सामने मुआ़विया बिन हुदैज हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ देता था और उन पर तबर्रा (लाअ़न ताअ़न) करता था
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/275–ह०–4669)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/368–ह०–2661)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/383–ह०–2692)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163)

➡हालांकि रसूलुल्लाह ने वफ़ात याफ़्ता लोगों को गाली देने से मनाअ़ फ़रमाया है हज़रत कुतबाह बिन मालिक फ़रमाते हैं कि एक उम्रा में से एक अमीर ने हज़रत अ़ली को गाली दी तो हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उससे कहा कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने आ़म मुर्दों को गाली देने से मनाअ़ किया है और तू तो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गाली दे रहा है जबकि वो तो शहादत पा गये।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/603–ह०–4839, 4840, 4841)

बनू उमय्या अहले बैत को गालियाँ देते थे और लाअ़न ताअ़न करते थे

➡हज़रत अबूबक्र बिन ख़ालिद बिन उ़र्फ़ुताह से मर‘वी हैं कि बनू उमय्या का एक गिरोह हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की तनक़ीस करता था और मिम्बरों पर आपको गालियाँ देता था।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–सफ़ा–414)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/457–ह०–773)

➡हज़रत अबू याह्या फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन

और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को मर'वान गालियाँ दे रहा था और हज़रत हसन हज़रत हुसैन को ख़ामोश करा रहे थे और मर'वान ये कह रहा था कि (मआ़ज़ अल्लाह) अहले बैत मलऊ़न हैं हज़रत इमाम हसन नाराज़ हुये और फिर आपने फ़रमाया ऐ मर'वान तूने कहा कि अहले बैत मलऊ़न हैं अल्लाह तबारक व तआ़ला की क़सम कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की ज़बान से तेरे ऊपर लाअ़नत की थी इस हालत में कि तू अपने बाप की पुश्त में था।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/373–ह०–2674)

➡ हज़रत उ़मैर बिन इस्हाक़ बयान करते हैं कि मदीने में मर'वान छः 6 साल तक हम पर गवर्नर मुक़र्रर रहा और वो हर जुमआ़ को हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर सब्बो शत्म करता था।
(इब्ने असाकिर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–अ़रबी–जिल्द–21 –सफ़ा–129–व–जिल्द–57–सफ़ा–243)
(इमाम ज़हबी–तारीख़े इस्लाम–अ़रबी–जिल्द–5-सफ़ा-231)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–477)
(इब्ने कसीर–अल बिदाया वन निहाया–अ़रबी–जिल्द–11-सफ़ा–318)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ालिम कहते हैं कि अमीर मुआ़विया ने मुग़ीरा बिन शुअ़बा को कूफ़ा का गवर्नर बनाया एक मर्तबा मुग़ीरा बिन शुअ़बा कूफ़ा की जामाअ़ मस्जिद में बैठा हुआ था और उसके दायें बायें अह्ले कूफ़ा बैठे हुये थे कि इतने में हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) भी आ गये फिर कुछ देर बाअ़द मुग़ीरा बिन शुअ़बा से इजाज़त लेकर कुछ लोगों ने तक़रीर की

व उसमें हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ दीं और उनकी शान में गुस्ताख़ी की तो हज़रत सईद ने मुग़ीरा से पूछा कि ये लोग किसको गालियाँ दे रहे हैं तो मुग़ीरा ने कहा अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को तो हज़रत सईद ने मुग़ीरा से कहा कि तुम्हारी मौजूदगी में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ दी जा रही हैं और उनको बुरा भला कहा जा रहा है और तुम लोगों को मनाअ़ नहीं कर रहे हो और मैं इस बात का गवाह हूँ कि मेरे कानों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है और मेरे दिल ने उसे महफ़ूज़ कर लिया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मौला अ़ली अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, तल्हा, जुबैर, व अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ व साअ़द बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ये सब जन्नत में होंगे और नवां मुसलमान भी जन्नत में होगा और वो मैं हूँ और दसवें ख़ुद सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हैं।

(मुस्नद अहमद–1/654–ह०–1644)
(मुस्नद अहमद–1/649–ह०–1629)
(अबू दाऊद–सुनन–4/535–ह०–4650)
(अबू दाऊद–सुनन–4/533–ह०–4649)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/174–ह०–6996)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/326–ह०–8134)

➡ और एक रिवायत में है कि मुग़ीरा बिन शुअ़बा ने ख़ुत्बा दिया और अ़ली पर सब्बो शत्म किया इस पर हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से ये बात सुनी कि आपने फ़रमाया ऐ हिरा पहाड़ थम जा–

तुझ पर इस वक़्त नबी व सिद्दीक़ व शुहदा मौजूद हैं और उस वक़्त उस पहाड़ पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और हज़रत अ़ली अबू बक्र, ऩमर, ऩस्मान, तलहा, जुबैर, व अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ व साअ़द बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मौजूद थे।
(नसाई–सुनन कुबरा–7/331–ह०–8148)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/333–ह०–8151)
(अबू दाऊद–सुनन–4/532–ह०–4648)

मुआ़विया ने अ़ली पर सब्बो शत्म न करने की शर्त को नहीं माना

➡ सुलह इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के शराइत में एक शर्त ये थी कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर सब्बो शत्म न किया जाये तो अमीर मुआ़विया ने ये शर्त मानने से इन्कार कर दिया और हज़रत मौला अ़ली पर सब्बो शत्म से बाज़ रहने को मन्जूर न किया फिर हज़रत इमाम हसन ने मुआ़विया से कहा कि तुम मेरी मौजूदगी में हज़रत मौला अ़ली को सब्बो शत्म न करना अमीर मुआ़विया ने ये शर्त मान ली मगर बाअ़द में अमीर मुआ़विया ने ये शर्त भी पूरी नहीं की।
(इब्ने असीर–अल कामिल फ़ी तारीख़–ऊ़र्दू–जिल्द-1-सफ़ा –2, 3) (तारीख़ अबुल फ़िदा–ऊ़र्दू–163)
(इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम–ऊ़र्दू–सफ़ा–155,156)

:– शराइते सुलह इमाम हसन :–

➡हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने जिन शर्तों की बुनियाद पर अमीर मुआ़विया को हुकूमत सुपुर्द की उन

में से चन्द शराइत का तज़किरा यहाँ किया जा रहा है हालांकि हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने बारह 12 शराइत पर मुश्तमिल एक मुअ़ाहिदे के तहत सुलह करते हुये मुअ़ाविया को हुकूमत देदी और खुद हुकूमत से दस्त बरदार हो गये।

1-कि मुअ़ाविया अल्लाह तअ़ाला की किताब व अल्लाह के रसूल की सुन्नत और खुल्फ़ा-ए-राशिदीन के तरीके़ के मुताबिक़ निज़ामे हुकूमत चलायेंगे।

2-कि मुअ़ाविया अपने बाअ़द किसी को हुकूमत के लिये जानशीन मुक़र्रर नहीं करेंगे बल्कि ख़लीफ़ा के चुनाव के लिये मुसलमानों पर छोड़ देंगे कि मुसलमान हुकूमत के लिये जिसे चाहें उसे मुन्तख़ब करलें।

3-हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की जमाअ़त के लोग जो सुलह के बाअ़द हथियार डाल चुके हैं उनके ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की इन्तिकामी कार्यवाही नहीं की जायेगी।

4-आले मुहम्मद के लिये माले ग़नीमत का पाँचवाँ हिस्सा जो अल्लाह तअ़ाला ने कुरान में मुक़र्रर किया बादस्तूर जारी रहेगा जैसा कि खुल्फ़ा-ए-राशिदीन से मिलता रहा

5-हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर बनू उमय्या के मिम्बरों से होने वाले सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न का सिलसिला हमेशा के लिये ख़त्म कर दिया जायेगा।

6- शाम, ईराक़ मक्का व मदीना और यमन सब जगहों के लिये अमान होगी।

7- हज़रत मौला अ़ली के असहाब व अन्सार जहाँ भी रहें उनकी जान नामूस और औलाद महफ़ूज़ रहेंगी।

8-हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) और ख़ानदाने रसूल में से किसी को भी नुक़सान पहुँचाने या हलाक करने की अमीर मुआ़विया कोशिश नहीं करेंगे न खुफ़िया तौर पर और न ऐलानियाँ और इनमें से किसी को किसी जगह डराया धमकाया व दहशत में मुब्तिला नहीं किया जायेगा। (तारीख़ अबुल फ़िदा–उ़र्दू–सफ़ा–163)
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़वास–उर्दू–सफ़ा–245)
(तारीख़ इब्ने कसीर–उ़र्दू–जिल्द–4–हिस्सा–8–सफ़ा–353)
(अल कामिल इब्ने असीर–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–2, 3, 4)
(इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम–उ़र्दू–सफ़ा–155,156)
(तारीख़े इस्लाम–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–314,315)
(इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा–उ़र्दू–सफ़ा–158)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–सफ़ा–347)

मुआ़विया ने एक भी शर्त पूरी नहीं की

➡ जबकि अमीर मुआ़विया ने अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर व अ़ब्दुर्रहमान बिन समुराह को एक सादा कागज़ पर मुहर लगाकर भेजा और उसमें ये लिखा था कि इस काग़ज़ पर जो शर्तें आप चाहें लिख लें हमें सुलह के लिये आपकी सारी शर्तें मंजूर हैं हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) को जब मुहर लगा हुआ कागज़ मिला तो हज़रत इमाम हसन ने मुआ़विया को जो शर्तें पहले लिखी थीं उनमें चन्द शर्तों का इज़ाफ़ा कर दिया मगर अफ़सोस उन शराइत पर अ़मल नहीं किया गया और जब हज़रत इमाम हसन की मुआ़विया से मुलाक़ात हुई तो हज़रत इमाम हसन ने मुआ़विया से कहा कि तुम–

उन शराइत को पूरा करो जिस पर तुमने मुहर लगाई है तो मुअ़ाविया ने इन्कार कर दिया और मुअ़ाविया ने हज़रत इमाम हसन की एक भी शर्त को पूरा न किया।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–फ़त्हुल बारी शरह सहीह बुख़ारी –अ़रबी–जिल्द–13–सफ़ा–70)
(इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा–उ़र्दू-सफ़ा-159,160)
(इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम–उ़र्दू–सफ़ा–156)
(तारीख़े तबरी–उर्दू–जिल्द–4–हिस्सा–1–सफ़ा–26)
(अल कामिल इब्ने असीर–उ़र्दू–जिल्द–1-सफ़ा–2, 3, 4)
(तारीख़ अबुल फ़िदा–उ़र्दू–सफ़ा–163)
(तारीख़े इस्लाम–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–315)

अमीर मुअ़ाविया अह्ले बैत अत्हार से इस क़दर बुग्ज़ व अ़दावत रखता था कि वो खुद अह्ले बैत को गालियाँ देता था और अपने लोगों से गालियाँ दिलवाता था और मिम्बरों से लाअ़न ताअ़न करता और करवाता था जो कि कुतुबे अहादीस और कुतूबे तवारीख़ से ये वाज़ेह तौर पर हम साबित कर चुके हैं और ये उसके काफ़िर होने की सरीह दलील है क्योंकि जिसने हज़रत मौला अ़ली को गाली दी उसने रसूलुल्लाह को गाली दी और जिसने रसूलुल्लाह को गाली दी तो उसने अल्लाह तअ़ाला को गाली दी और अल्लाह तअ़ाला को गाली देने वाला काफ़िर ही होगा हालांकि गुज़िश्ता सफ़ाहात पर अल्हम्दु लिल्लाह कुरानो सुन्नत और तवारीख़ की किताबों से मैंने मुअ़ाविया को काफ़िर साबित किया है।

मुग़ीरा बिन शुअ़बा, ज़ियाद बिन अबी, मर‘वान बिन हकम और बुस्र बिन अरताह वग़ैराह ने मुसलमानों पर इन्तिहाई जुल्म किये और लोगों का नाहक़ खून बहाया और ये सब मुअ़ाविया के गवर्नर थे और मुअ़ाविया के

हुक्म से ही इन गवर्नरों ने मुसलमानों पर जुल्मो सितम और लोगों के नाहक़ क़त्ल किये मस्जिदों के मिम्बरों पर हज़रत मौला अ़ली पर सब्बो शत्म और लाअ़न ताअ़न यहाँ तक कि नमाज़े ईदैन से पहले इसलिये खुत्बा देना शुरु किया ताकि लोग हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम पर सब्बो शत्म और लाअ़न ताअ़न को लोग सुनें और कोई बग़ैर सुने ही अपने घर न जाये चूँकि जब बाअ़द नमाज़ खुत्बे में हज़रत मौला अ़ली पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न किया जाता था तो मुहिब्बाने अ़ली खुत्बा सुने बग़ैर ही अपने अपने घर चले जाते थे इसलिये मुआ़विया और उसके गवर्नरों ने नमाज़े ईदैन से पहले खुत्बा देना शुरु किया।

जिसने हज़रत अ़ली को गाली दी उसने अल्लाह तआ़ला को गाली दी

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को गाली दी उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी उसने अल्लाह को गाली दी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/246–ह०–4616)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/266,267,533)

➡ हज़रत इब्ने अबी मुलैका रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं शाम का रहने वाला एक शख़्स आया और वो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के सामने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देने लगा तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हुमा) ने उसको कंकरी मारकर फ़रमाया ऐ अल्लाह के दुश्मन तूने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को तकलीफ़ पहुंचाई है फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई 'बेशक जो लोग जो अल्लाह व उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की लाअ़नत है और अल्लाह ने उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है'।
(सूरह–अहज़ाब–33/57) (हाकिम–4/247–ह०–4618)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना कि अबू बक्र व ज़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को बुरा न कहो और हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को बुरा न कहो और अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुरा न कहो क्योंकि जिसने अ़ली को बुरा भला कहा या गाली दी उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी तो उसने अल्लाह को गाली दी और जिसने अल्लाह को गाली दी तो अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब देगा।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/131, 132)

➡ हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह जदली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझसे कहा कि क्या रसूलुल्लाह (सल्ल ल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गालियाँ दी जाती हैं तो मैंने कहा कि ये कैसे हो सकता है कि कोई रसूलुल्लाह को गालियाँ दे तो हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कहा क्या हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ नहीं दी जातीं और–

उनको भी जो अ़ली से मुहब्बत करते हैं फिर हज़रत उम्मे सलमा ने फ़रमाया कि मैं गवाही देती हूँ कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत अ़ली से मुहब्बत करते थे और मैंने रसूलुल्लाह को ये फ़रमाते हुये सुना जो अ़ली को गाली देता है वो मुझे गाली देता है और जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने मुझे गाली दी (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/296-ह०-4615)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–7/252–ह०–9364)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/254–ह०–344)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/518–ह०–889)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/123–ह०–14740)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/295–ह०–6977)
(कंजुल उ़म्माल–7/75–ह०–36460)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/267)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/47)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) का एक रास्ते से गुज़र हुआ वहाँ कुछ लोग हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ दे रहे थे तो आपने फ़रमाया कौन अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल को गालियाँ दे रहा है तो इस पर लोगों ने कहा कि कौन अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल को गालियाँ दे सकता है और अल्लाह व रसूल को गालियाँ देने वाला काफ़िर व मुशरिक़ है तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली को कौन गालियाँ दे रहा था तो लोगों ने कहा हाँ ये काम हो रहा था तो आपने फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआ़ाला को गवाह बनाकर ये कहता हूँ कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने मुझे गाली दी और जिसने

मुझे गाली दी उसने अल्लाह को गाली दी और जिसने अल्लाह को गाली दी तो अल्लाह तअ़ाला उसे नथुनों के बल दोज़ख़ में डालेगा। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/46) (तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–1–हिस्सा–2–सफ़ा–359)

➡हज़रत इस्हाक़ बिन काअ़ब बिन उज्राह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली को गाली न दो क्योंकि वो अल्लाह तअ़ाला की पहचान की दलील हैं। (तबरानी–मुअ़जम औसत–7/251–ह०–9361)

जिसने अ़ली को बुरा कहा तो उसने अल्लाह व उसके रसूल को बुरा कहा

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा और जिसने मुझे बुरा भला कहा तो उसने अल्लाह तअ़ाला को बुरा भला कहा। (मिश्कात–3/538–ह०–6101)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/332–ह०–1011)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/156–ह०–91)
(कंजुल उ़म्माल–6/285–ह०–32900)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421)

➡हज़रत उर्वाह बिन जुबैर रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु के सामने एक शख़्स ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुरा भला कहा तो हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि तुम

हज़रत अ़ली को बुरा भला न कहो बल्कि उनका ज़िक्र ख़ैर के साथ करो अगर तुम इस तरह हज़रत अ़ली के बारे में बदजुबानी करोगे तो तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को तकलीफ़ दोगे।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/360–ह०–1089)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/48)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली को बुरा न कहो क्योंकि वो अल्लाह तआ़ला की ज़ात में ग़र्क़ इन्सान हैं और हज़रत अ़ली के सीने में ज़ाते बारी तआ़ला का इरफ़ान मौजज़न है यानी हज़रत मौला अ़ली को हक़ सुबहानहू व तआ़ला की कामिल माअ़रिफ़त हासिल है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/148–ह०–324)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/123–ह०–14743)
(कंजुल उ़म्माल–6/294–ह०–33017)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77–ह०–215, 225)

जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने अल्लाह व रसूल को तकलीफ़ दी

➡ हज़रत मुस्अ़ब बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हज़रत अ़ली को तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/356–ह०–1078)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/453–ह०–766)
(कंजुल उ़म्माल–6/285–ह०–32898)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/44)

➡ हज़रत अम्र बिन शास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) सुलह हुदैबिया वालों में शुमार होते हैं आप फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के साथ यमन की तरफ़ र'वाना हुये तो दौराने सफ़र हज़रत मौला अ़ली की तरफ़ से मुझे कुछ ज़्यादती महसूस हुई तो जब हम वापस आये तो मैंने मस्जिद में बाअ़ज़ सहाबा किराम के सामने हज़रत अ़ली की शिकायत का इज़हार किया जब ये बात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तक पहुंची तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने नाराज़गी के साथ मुझे देखा और मुझसे फ़रमाया कि ऐ अम्र खुदा की क़सम तूने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई है फिर मैंने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ इस बात से कि आपको तकलीफ़ पहुंचाऊँ फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248–ह०–4619)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/324–ह०–981)
(इब्ने अबी शैबा–9/516–ह०–32771)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/109–ह०–6923)
(कंजुल उ़म्माल–7/73–ह०–36445)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/44)

➡ एक शख़्स हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की मौजूदगी में हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शान में गुस्ताख़ी करने लगा तो हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि क्या तुम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और हज़रत अ़ली को जानते हो सिवाए ख़ैर व भलाई के हज़रत अ़ली का तज़किरा मत करो क्योंकि अगर तुमने हज़रत मौला अ़ली को अज़ि़यत पहुंचाई–

तो गोया तुमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को अज़िय़त पहुंचाई (कंजुल उ़म्माल-7/66-ह०-36394)

➡ हज़रत अम्र बिन शास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने अ़ली को अज़िय़त दी उसने मुझे अज़िय़त दी और जिसने मुझे अज़िय़त दी उसने अल्लाह तआ़ला को अज़िय़त दी। (तबरी-रियाजुन्नज़रा-1/45)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने मुए मुबारक पकड़े हुये थे और फ़रमां रहे थे कि जिसने मेरे बालों में एक बाल को भी तकलीफ़ पहुंचाई तो उस पर जन्नत हराम है।
(कंजुल उ़म्माल-6/518-ह०-35351)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने मुए मुबारक पकड़े हुये फ़रमाया ऐ अ़ली जिस ने तुझे मेरे एक बाल के बराबर भी अज़िय़त दी उसने मुझे अज़िय़त दी और ऐसे शख़्स पर अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आसमान के बराबर लाअ़नत फ़रमाई है और अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स का राहे खुदा में माल ख़र्च करना कुबूल नहीं फ़रमाता है और न ही उसका इंसाफ़ करना कुबूल फ़रमाता है जो हज़रत अ़ली को अज़िय़त पहुंचाये। (कंजुल उ़म्माल-6/518-ह०-35352)
(कंजुल उ़म्माल अ़रबी-12/349-ह०-35352)

हज़रत मौला अ़ली को गाली देने वाले हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे

➡ हज़रत अ़ली बिन अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुआ़विया बिन हुदैज हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देता व उन पर लाअ़न ताअ़न करता था फिर जब मुआ़विया को हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश किया गया तो इमाम हसन ने पूछा ऐ मुआ़विया तू हज़रत मौला अ़ली पर तबर्रा करता है तो वो मुकर गया फिर इमाम हसन ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम अगर तेरी मुलाक़ात हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से हो तो तू उन्हें रसूलुल्लाह के हौज़ पर खड़ा पायेगा और उनके हाथ में एक काँटेदार छड़ी होगी जिसके साथ वो मुनाफ़िक़ों को हौज़े कौसर से पीछे हटा रहे होंगे और ये बात मुझे रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने बताई है।
(हाकिम–4/275–ह०–4669) (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/368–ह०–2661, 2692)

अ़ली मग़फ़िरत का दर‘वाज़ा हैं जो इससे निकल गया वो काफ़िर है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली मग़फ़िरत का दर‘वाज़ा हैं जो इसमें दाख़िल हुआ वो मोमिन है और जो इससे निकल गया वो काफ़िर है
(कंज़ुल उ़म्माल–6/285–ह०–32907)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)

रसूलुल्लाह का फ़रमान अ़ली मुझसे है मैं अली से हूँ

➡ हज़रत जुबशी बिन जुनादा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरा पैग़ाम अ़ली ही पहुँचायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73–ह०–119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075–ह०–3719)
(इब्ने अबी शैबा–9/502–ह०–32734)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/332–ह०–1010)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/246–ह०–382)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/704–ह०–3431)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/16–ह०–3511)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/137–ह०–74)

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा चार असहाब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुये उनमें से एक ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की शिकायत करते हुये अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आपने नहीं देखा कि हज़रत अ़ली ने ऐसा किया है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे मुँह फेर लिया फिर दूसरा उठा उसने भी हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में यही कहा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उससे भी मुँह फेर लिया फिर इसी तरह तीसरे व चौथे शख़्स ने भी उठकर हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में

वो ही बात दोहराई तो फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनकी तरफ़ मुतवज्जै हुये उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चेहरे मुबारक से गुस्सा ज़ाहिर हो रहा था आपने फ़रमाया कि तुम अली से क्या चाहते हो आपने ये जुमला तीन मर्तबा फ़रमाया फिर फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और अ़ली मेरे बाअ़द हर मोमिन के वली हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072–ह०–3712)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/228–ह०–4579)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/128–ह०–265)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/259–ह०–350)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/340–ह०–1035)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/114–ह०–6929)
(इब्ने अबी शैबा–9/519–ह०–32784)
(कंजुल उ़म्माल–6/284–ह०–32880)
(कंजुल उ़म्माल–7/73–ह०–36444)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/153–ह०–89)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की बुराई न करो क्योंकि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है।

(कंजुल उ़म्माल–6/288–ह०–32939)

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली

मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाद अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(तिर्मिज़ी–2/1072–ह०–3712, 3725)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/676–ह०–4842)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/574–ह०–6085)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225–ह०–20388)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95–ह०–14638,14732)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/391–ह०–1175)
(इब्ने अबी शैबा–9/519–ह०–32782)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/155–ह०–90)
(कंजुल उ़म्माल–7/70–ह०–36421, 36454)

➡ हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम मेरे दामाद हो और मेरी औलाद के बाप हो और तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ।
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/208–ह०–138)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73–ह०–119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075–ह०–3716)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने उहद के दिन जब अलविया वालों को क़त्ल किया तो हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने

अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि-व आलिहि वसल्लम) बेशक यही अस्ल ग़मगुसारी है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आप दोनों से हूँ।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/472–ह०–934)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/371–ह०–1119)
(कंजुल उ़म्माल–7/74–ह०–36449)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/127)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/64)

➡ इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072–ह०–3712)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/264–ह०–4652)
(मिश्कात–3/535–ह०–6090)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/94–ह०–14636, 14637)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/366–ह०–1104)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/126, 157)
(कंजुल उ़म्माल–6/288–ह०–32937, 32942, 32877)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/218)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/30–ह०–68)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/423)

मज़कूरा अहादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि मुआ़विया अपनी साहबियत पर क़ायम न रह सका और काफ़िर व मुरतद हो गया क्योंकि जब मुआ़विया-

को ये माअ़लूम था कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी तो उसने अल्लाह को गाली दी जिसने अ़ली को बुरा कहा उसने मुझे बुरा कहा और जिसने मुझे बुरा कहा उसने अल्लाह तआ़ला को बुरा कहा और जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ दी और ये सब कुछ जानते हुये भी अमीर मुआ़विया ने ये सारे काम अन्जाम दिये यहाँ तक कि बाअ़ज़ अहले बैत अत्हार और सहाबा किराम व ताबईन हज़रात का क़त्ल कराया तो ऐसे उमूरे गुनाह के मुरतकिब मुआ़विया को अल्लाह तआ़ला उसे नथुनों के बल दोज़ख़ में डालेगा और उस पर जन्नत हराम है और उस पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत है और मुआ़विया के लिये अल्लाह तआ़ला ने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

रसूलुल्लाह को जो गाली दे उसे क़त्ल करने का हुक्म

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि एक नाबीना शख़्स थे उनकी एक लौंडी थी जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को गालियाँ देती थी और बुरा भला कहती थी तो वो उसे मनाअ़ करते थे मगर वो फिर भी नहीं मानती थी एक रात उसने फिर रसूलुल्लाह को गालियाँ दीं और बुरा भला कहा तो उन्होंने उस लौंडी का क़त्ल कर दिया तो जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह से उस लौंडी के क़त्ल का ज़िक्र किया गया तो आपने पूछा कि उसका क़त्ल क्यों–

और किसने किया तो वो नाबीना शख़्स खड़े हुये और सारी बात बयान कर दी तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस लौंडी का क़त्ल ज़ाया है यानी रसूलुल्लाह को गाली देने और बुरा भला कहने की सज़ा सिर्फ़ क़त्ल है और उस पर न कोई क़िसास है न कोई दीयत है और रसूलुल्लाह को गाली देने वाले को क़त्ल करने वाले क़ातिल का ये अ़मल उसकी ग़ैरते ईमानी का इज़्हार और बाइसे अज्र और फ़ज़्ल होगा (अबू दाऊद–सुनन–4/338–ह०–4361)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर‘वी है कि एक अ़ौरत नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गालियाँ देती थी व आपके बारे में नाज़ेबा अल्फ़ाज़ बोलती थी तो एक शख़्स ने उसका गला घोंट दिया हत्ता कि वो मर गई तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसके खून को ज़ाया क़रार दिया (अबू दाऊद–सुनन–4/339–ह०–4362)

रसूलुल्लाह ने काफ़िर व मुरतद को क़त्ल करने का हुक्म फ़रमाया

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी भी मुसलमान का खून हलाल नहीं है सिवाए तीन जुर्मों के एक वो जो इस्लाम लाने के बाअ़द कुफ़्र करे और दूसरा वो शादी शुदा होने के बाअ़द ज़िना करे व तीसरा वो जिसने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और जो शख़्स अपने दीन से फिर जाये उसे क़त्ल कर दो यानी जो इस्लाम के बाअ़द कुफ़्र करे या दीन से फिर

जाये या फिर किसी जान को नाहक़ क़त्ल करे।
(मुस्नद अहमद–10/339–ह०–22365)
(बुख़ारी–सहीह–6/270–ह०–6878)
(मुस्लिम–सहीह–3/476–ह०–4377)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/58–ह०–2158)
(मिश्कात–2/393–ह०–3446, 3466)
(इब्ने माजा–सुनन–02/264–ह०–2533, 2534)
(नसाई–सुनन–6/59–ह०–4024)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/92–ह०–3760)

➡ हज़रत अ़रफ़जा बिन शुरैह अशजई (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द बहुत से फ़ित्ने व फ़साद होंगे और जिस शख़्स को तुम देखो कि वो मुसलमानों की जमाअ़त से अलग हो गया है या मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की उम्मत में फूट डालना चाहता है तो वो जो भी हो उसे क़त्ल करदो बिला शुबा जमाअ़त पर अल्लाह का हाथ होता है और शैतान उस शख़्स के साथ होता है जो जमाअ़त से अलग हो जाये और शैतान उसे लात मारकर हाँकता है।
(नसाई–सुनन–6/60–ह०–4025)

मुअ़ाविया के चार काम ऐसे जो उसे हलाक करने वाले हैं

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अमीर मुअ़ाविया के चार अफ़अ़ाल ऐसे हैं कि अगर कोई शख़्स उनमें से किसी एक फ़ेअ़ल का भी इरतिकाब करे तो वो फ़ेअ़ल उसके हक़ में मुहलिक

हो यानी उसे हलाक करने वाला है कि इस उम्मत पर मुआ़विया का तलवार सूंत लेना और बग़ैर मश्वरे के हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लेना जबकि उम्मत में सहाबा किराम मौजूद थे और मुआ़विया का अपने बेटे यज़ीद-को अपना जानशीन बनाना जबकि वो शराबी था और मुआ़विया का ज़ियाद लाअ़नती को अपने ख़ानदान में शामिल करना हालांकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का साफ़ हुक्म मौजूद है कि औलाद उसकी है जिसके बिस्तर पर वो पैदा हुआ और ज़ानी के लिये कंकर पत्थर हैं और मुआ़विया का हुज्र बिन अदी व उनके साथियों का क़त्ल करना।
(इब्ने कसीर-अ़रबी-अल बिदाया वन निहाया-जिल्द-8-सफ़ा-130)

मुआ़विया की फ़ज़ीलत में एक भी हदीस सहीह सनद से साबित नहीं

फ़िरक़ा परस्त मुनाफ़िक़ नासबी मुल्ला अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान की फ़ज़ीलत में झूटी मनघढ़त और मौज़ूअ़ हदीसें बयान करते हैं जबकि अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में एक भी हदीस सहीह सनद से साबित नहीं है मुहिब्बाने मुआ़विया इस हद तक गिर गये कि मुआ़विया लाअ़नती को हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के मद्दे मुक़ाबिल समझते हैं उसके क़सीदे पढ़ते हैं उसका उ़र्स मनाते हैं जबकि मुआ़विया काफ़िर मुरतद जहन्नमी है और उसकी कोई फ़ज़ीलत नहीं है इमाम बुख़ारी ने दीगर सहाबा के मनाक़िब व फ़ज़ाइल बयान किये मगर मुआ़विया की एक भी फ़जीलत बयान नहीं की इमाम नसाई फ़रमाते हैं कि मुआ़विया की कोई फ़ज़ीलत नहीं है सिवाए एक के कि मुआ़विया का पेट कभी न भरे-

अमीर मुआ़विया फ़तह मक्का के दिन मजबूरी और डर की वजह से इस्लाम लाया और जब मजबूरी और डर ख़त्म हो गया तो इस्लाम से निकल गया चन्द उ़ल्माऐ सू मुआ़विया की झूटी फ़ज़ीलत बयान करते हैं जबकि मुआ़विया की हक़ीक़त इसके बरअ़क्स है कि मुआ़विया पक्का मुनाफ़िक़ बेदीन काफ़िर और दुश्मने अहले बैत और दुश्मने सहाबा है।

➡ अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ये फ़तह मक्का के दिन मजबूरी व डर की वजह से इस्लाम लाया यानी इस्लाम उसके दिल में रचा बसा नहीं था जब मजबूरी और डर ख़त्म हो गया तो इस्लाम से निकल गया।
(तारीख़े मसऊ़दी–उ़र्दू–जिल्द–2–हिस्सा–3–सफ़ा–39, 40)
(हज़रत अ़ली और क़िसासे उ़स्मान–उ़र्दू–सफ़ा–9)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–उ़र्दू–सफ़ा–405)

➡ इमाम बुख़ारी के उस्ताद इमाम इस्हाक़ बिन राहविया फ़रमाते हैं कि अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में कोई भी हदीस रसूलुल्लाह से साबित नहीं और इमाम इब्ने जोज़ी फ़रमाते हैं कि इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ने फ़रमाया कि मुआ़विया की फ़ज़ीलत में कोई भी सहीह हदीस साबित नहीं पस इसी नुक़्ते के पेशे नज़र इमाम बुख़ारी ने अपने शेख़ की तहक़ीक़ पर ऐतमाद किया है इसलिये इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में किताबुल मनाक़िब में मुआ़विया के बाब में मनाक़िबे मुआ़विया नहीं लिखा बल्कि सिर्फ़ ज़िक्रे मुआ़विया लिखा है (इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–3/132) (फ़त्हुल बारी शरह सहीह बुख़ारी–अ़रबी–7/104–रक़म–3765,3766–के तहत) (फ़ैज़ुल बारी उ़र्दू तरजुमा–फ़त्हुल बारी-5/501)(इब्ने क़य्यिम-मनारुल मुनीफ़-अ़रबी-सफ़ा-110)

➡इमाम बदरुद्दीन ऐनी फ़रमाते हैं कि अमीर मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत में कई हदीसें मौजूद हैं लेकिन उनमें एक भी हदीस ऐसी नहीं जो सनद के ऐतबार से सहीह हो इमाम बुख़ारी ने बुख़ारी शरीफ़ में फ़ज़ाइले मुअ़ाविया या मनाक़िबे मुअ़ाविया का उ़नवान क़ायम नहीं किया क्योंकि इस बाब में वो चीज़ नहीं जो अमीर मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत पर दलालत करती हो और इमाम इस्हाक़ बिन राहविया और इमाम नसाई व दूसरे उ़ल्माए हदीस ने इस बात की तसरीह फ़रमाई इसलिये इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में किताबुल मनाक़िब में मुअ़ाविया के बाब में मनाक़िबे मुअ़ाविया नहीं लिखा बल्कि सिर्फ़ ज़िक्रे मुअ़ाविया लिखा है।
(उ़म्दतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी–अ़रबी–16/343-रक़्म –3765, 3766 के तहत)

➡ अल्लामा इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं कि मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत में कोई भी सहीह हदीस नहीं है।
(मिनहाजुस्सुन्नते नबविया–अ़रबी–जिल्द–7–सफ़ा–371)

➡अल्लामा इब्ने तैमिया के शगिर्द अल्लामा इब्ने क़य्यिम फ़रमाते हैं कि अमीर मुअ़ाविया की शान में कई हदीसें हैं मगर एक लफ़्ज़ भी सहीह सनद से साबित नहीं है।
(मनारुल मुनीफ़-फ़ी सहीह व ज़ईफ़-अ़रबी-सफ़ा-109,110)

➡ अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी फ़रमाते हैं कि मैं इमाम हाकिम के पास गया और जब वो फ़िरक़ा कर्रामिया से छिप रहे थे तो मैंने उन्हें मश्वरा दिया कि आप अपनी किताब में अमीर मुअ़ाविया के फ़ज़ाइल में कुछ लिख दें तो आप इससे निजात पा जायेंगे तो इमाम हाकिम ने फ़रमाया कि मुझसे ये नहीं हो सकता मुझसे ऐसा नहीं

हो सकता (क्योंकि मुआ़विया की जब कोई फ़ज़ीलत ही नहीं तो मैं उसकी फ़ज़ीलत के मुताअ़ल्लिक़ कैसे लिख सकता हूँ)। (अल बिदाया वन निहाया-उ़र्दू-11/607) (इब्ने कसीर-अल बिदाया वन निहाया-अ़रबी-15/561)

➡ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़त्हुल बारी में बुख़ारी शरीफ़ के बाब ज़िक्रे मुआ़विया की शरह में लिखते हैं कि इमाम बुख़ारी ने सहीह बुख़ारी में अमीर मुआ़विया के मुताअ़ल्लिक़ बाब के उ़नवान में सिर्फ़ ज़िक्रे मुआ़विया लिखा है और फ़ज़ीलत व मनक़बत जैसे अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं किये क्योंकि उस हदीस से कोई फ़ज़ीलत माअ़लूम नहीं होती-

इमाम इब्ने जोज़ी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद से उनके वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल का मुकालमा भी ज़िक्र किया है उन्होंने अपने वालिद इमाम अहमद बिन हम्बल से पूछा कि हज़रत मौला अ़ली और अमीर मुआ़विया के इख़्तिलाफ़ के बारे में आपकी क्या राय है तो इमाम अहमद बिन हम्बल ने फ़रमाया मेरे बेटे खूब समझ लो कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के बहुत ज़्यादा दुश्मन थे उन दुश्मनों ने हज़रत मौला अ़ली के ऐबों को तलाश करना चाहा मगर नाकाम रहे चुनांचा उन दुश्मनों ने अपने मक़सद को पूरा करने के लिये हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के मुक़ाबिले पर मुआ़विया को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया-

इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल के इस जवाब में ये इशारा है कि कुछ लोगों ने मुआ़विया के लिये बेबुनियाद फ़ज़ाइल घढ़ लिये जिनकी कोई हक़ीक़त व अस्लीयत नहीं है अमीर

मुआ़विया की फ़ज़ीलत में कई अहादीस आयी हैं मगर उन अहादीस में कोई भी हदीस उसूले मुहिद्दिसीन पर इस्नादी हैसियत से सहीह नहीं हैं। (फ़त्हुल बारी शरह सहीह बुख़ारी–अ़रबी–7/104–रक़्म–3765,3766–के तहत) (इमाम इब्ने जोज़ी–किताब अल मौजूआ़त–अ़रबी–2/24) (हज़रत अ़ली और क़िसासे उ़स्मान–सफ़ा–14,15) (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–सफ़ा–433) (नामो नसब–सफ़ा–514)

➡ शेख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं कि जान लीजिये कि मुहिद्दिसीने किराम ने फ़रमाया कि अमीर मुआ़विया के फ़ज़ाइल में कोई सहीह हदीस नहीं और ऐसा ही इमाम जलालुद्दीन सयूती ने कहा है। (लमआ़तु त्तनक़ीह फ़ी शरह मिश्कातुल मसाबीह-9/775)

➡ शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया मदनी हनफ़ी लिखते हैं कि अमीर मुआ़विया के बारे में जो अहादीस वारिद हुईं अगरचा वो मशहूर थीं लेकिन इमाम बुख़ारी की शर्त पर नहीं थीं इसलिये इमाम बुख़ारी ने उ़नवान बदल दिया इमाम इस्हाक़ बिन राहविया ने फ़रमाया कि मुआ़विया के मनाक़िब में कोई भी सहीह हदीस नहीं है (तशरीहात बुख़ारी–5/511)

➡ अल्लामा इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं कि मुआ़विया की कोई फ़ज़ीलत सहीह हदीस में नहीं है और एक मुक़ाम पर आप लिखते हैं कि एक गिरोह ने अमीर मुआ़विया के लिये फ़ज़ाइल घढ़े हैं और उन्होंने इस सिलसिले में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अहादीस रिवायत की हैं जो सबकी सब झूट हैं। (मिनहाजुस्सुन्नते नबविया–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा–400)

➡ इमाम नसाई से पूछा गया कि अमीर मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत में कोई सहीह हदीस है तो आपने जवाब में फ़रमाया कि तुम मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत पूछते हो वो अगर बराबर सराबर छूट जाये तो ग़नीमत है इस पर इमाम नसाई को इस क़दर मारा पीटा गया कि जान से हाथ धोना पड़े। (तशरीहात बुख़ारी–5/511)

➡ इसी तरह इमाम हाकिम को अज़्ज़ियत दी गई क्योंकि इमाम हाकिम ने मुअ़ाविया की फ़ज़ीलत में कोई हदीस बयान नहीं की लोगों ने उन पर निहायत जुल्म किया और शदीद तकलीफ़ें दी अबू अ़ब्दुर्रहमान बयान करते हैं कि इमाम हाकिम के पास गया जबकि वो लोगों के के जुल्म की वजह से अपने घर में नज़रबंद थे लोगों ने उनका मस्जिद की तरफ़ निकलना बंद कर दिया था और उनका मिम्बर तोड़ डाला था उन्हें बाहर निकलने से मनाअ़ किया था पस मैंने इमाम हाकिम से कहा कि अगर आप मुअ़ाविया के फ़ज़ाइल में कुछ बयान करदें तो आप इस मुसीबत से छुटकारा पा सकते हैं तो आप ने फ़रमाया कि मैं ऐसा नहीं कर सकता।
(इब्ने जोज़ी–अल मुन्तज़िम–अ़रबी–जिल्द–15–सफ़ा–110)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–17/175)
(किताबुल वाफ़ी बिल वफ़ायात–जिल्द–3–सफ़ा–260)

➡ अहमद बिन ज़करिया बयान करते हैं कि मैं इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक के पास मौजूद था कि एक शख़्स ने अमीर मुअ़ाविया का ज़िक्र कर दिया तो इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक ने फ़रमाया ख़बरदार मुअ़ाविया के ज़िक्र से मेरी मजलिस ख़राब न करो। (मीज़नुल एअ़तिदाल–उ़र्दू–4/312)(इमाम ज़हबी–मीज़नुल एअ़तिदाल–अ़रबी–4/610–रक़्म–5044)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–9/570)

➡ मुआ़विया चालीस साल तक हुकूमत व इक़्तिदार में रहा बीस साल जुज़ी इक़्तिदार व बीस साल कुल्ली इक़्तिदार और कुल्ली इक़्तिदार में मुआ़विया की शानो फ़ज़ीलत में झूटी रिवायात व मौजूअ़ अहादीस वुजूद में आयीं और बाअ़द में भी बनू उमय्या की हुकूमत रही तो बाअ़द में भी मुआ़विया की फ़ज़ीलत में झूटी हदीसें वज़अ़ की गईं इमाम ज़हबी फ़रमाते हैं कि मुआ़विया के पीछे कसीर मख़लूक़ ऐसी रही है जो मुआ़विया से मुहब्बत करती थी और उसके बारे में गुलू करती थी और उसको फ़ज़ीलत देती थी।
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–3/128)

➡अल्लामा शिबली नुअ़मानी फ़रमाते हैं कि बनू उमय्या के ज़माने में मस्जिदों में आले फ़ातिमा की तौहीन और जुमआ़ में मिम्बरों पर हज़रत मौला अ़ली पर लाअ़न ताअ़न किया जाता था और बनू उमय्या के ज़माने में हज़ारों हदीसें मुआ़विया के फ़ज़ाइल में वज़अ़ की गईं लेकिन मुहद्दिसीने किराम ने ऐलानियां मुनादी कर दी कि ये सब झूटी रिवायतें हैं।
(अल्लामा शिबली नुअ़मानी–सीरतुन नबी–1/69)

अमीर मुआ़विया के दौरे हुकूमत में हदीसों के घढ़ने का सिलसिला शुरु हुआ और मुआ़विया के चाहने वालों व उससे मुहब्बत करने वालों ने मुआ़विया की फ़ज़ीलत में मतन घढ़े और बाअ़ज़ औक़ात मतन में मुआ़विया की फ़ज़ीलत में कुछ इज़ाफ़ा कर दिया जाता था और बाअ़ज़ औक़ात सहीह सनद और बाअ़ज़ औक़ात ग़ैर सहीह सनद को शामिल कर दिया जाता था इस तरह बेशुमार मौजूअ़ व बातिल अहादीस वुजूद में आईं और बाअ़ज़ औक़ात मुहद्दिसीने किराम भी धोका खा गये

और मौज़ूअ़ और बातिल अहादीस को अपनी कुतुब में नक़ल कर दिया चुनांचा ज़ईफ़ हदीस फ़ज़ाइले आअ़माल में शराइत के साथ कुबूल की जाती हैं लेकिन अहकाम, अ़क़ाइद और मसाइल में कुबूल नहीं की जाती लेकिन मौज़ूअ़ और बातिल हदीस किसी भी सूरत में क़ाबिले कुबूल नहीं होती और अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में एक भी हदीस ज़बाने मुस्तफ़ा से सादिर नहीं हुई और कुतुबे अहादीस में कई ऐसी हदीसें हैं जो मौज़ूअ़ घढ़ी हुई हैं और मुहद्दिसीने किराम भी इन्सान होते हैं और उनसे भी ग़लतियों का सादिर होना मुम्किन है क्योंकि कुरान के अ़लावा कोई ऐसी किताब नहीं जो ग़लती से पाक हो और उसमें झूटी रिवायात न हो।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
बेशक कुरान बड़ी बा इ़ज़्ज़त किताब है बातिल इसके पास न उसके सामने आ सकता है और न ही इसके पीछे से ये बड़ी हिकमत वाले बड़ी हम्द वाले (रब) की तरफ़ से उतारा हुआ है (सूरह-हामीम सज्दा-41/4142)

पस मालूम हुआ कि कुरान जिस शान की हामिल किताब है ऐसी शान की हामिल कुरान के अ़लावा कोई भी किताब नहीं है तो फिर मुम्किन है कि मुआ़विया के दौरे हुकूमत में मुआ़विया की फ़ज़ीलत में मौज़ूअ़ हदीसें घढ़ी गईं और अमीर मुआ़विया के फ़ज़ाइल वज़अ़ किये गये अगर मौज़ूअ़ हदीसें न होतीं तो मौज़ूअ़ हदीस पर आइम्मा मुहद्दिसीन किताबें न लिखते और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ये पेशीन गोई न फ़रमाते कि मेरे बाअ़द ऐसे लोग होंगे जो झूटी हदीसें बयान करेंगे और आपने झूटी हदीसें बयान करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वईद भी फ़रमाई।

झूटी अहादीस रिवायत करने वाले चन्द रावियों का तज़किरा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जो झूटी हदीसें बयान करेंगे पस तुम उनसे बचते रहना कि कहीं ऐसा न हो वो तुम्हें गुमराह कर दें और फ़ित्ने में डाल दें। (मुस्लिम–सहीह–1/58-ह०-16) (इमाम बैहक़ी–दलाइले नुबुव्वाह–उ़र्दू–जिल्द–6–सफ़ा–344)

➡हज़रत मुजाहिद बयान करते हैं कि बुशैर बिन काअ़ब हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के पास आये और हदीसें सुनाने लगे तो इब्ने अ़ब्बास ने उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया और न ही उनकी तरफ़ देखा तो बुशैर बोले कि ऐ इब्ने अ़ब्बास आपको क्या हुआ है कि आप मेरी बात नहीं सुनते मैं हदीसें बयान करता हूँ और आप सुनते नहीं तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि एक वक़्त था जब हम किसी शख़्स से ये सुनते थे कि रसूलुल्लाह ने यूँ फ़रमाया है तो उसी वक़्त हम उस तरफ़ देखते थे और अपने कान लगा देते थे फिर जब लोग बुरी व अच्छी राह चलने लगे यानी ग़लत रिवायतें शुरु हो गईं तो हम लोगों ने सुनना छोड़ दिया मगर जिस हदीस को हम पहचानते हैं और हमको सहीह माअ़लूम होती है तो उसको सुन लेते हैं।
(मुस्लिम–सहीह–1/60–ह०–21)

➡हज़रत याह्या बिन सईद क़त्तान बयान करते हैं कि हमने (बाअ़ज़) नेक लोगों को हदीस से बढ़कर किसी–

और चीज़ में झूट बोलते हुये नहीं पाया।
(मुस्लिम–सहीह–1/67–ह०–40)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक बयान फ़रमाते हैं कि बक़िय्या बिन वलीद ज़बान के सच्चे हैं लेकिन वो हर आने जाने वाले से हदीस ले लेते हैं (ख़्वाह वो अपने क़ौल में सच्चा हो या झूटा)(मुस्लिम–सहीह–1/67-ह०-40)

➡ हज़रत सुफ़ियान बयान करते हैं कि मैंने जाबिर को तक़रीबन तीस हज़ार अहादीस बयान करते हुये सुना है और मैं उनमें से एक भी हदीस बयान करना हलाल नहीं समझता अगरचा मुझे बदले में कुछ भी मिले।
(मुस्लिम–सहीह–1/71–ह०–59)

➡ हज़रत सुफ़ियान फ़रमाते हैं कि पहले लोग जाबिर से हदीसें रिवायत करते थे जब तक उसने बद ऐतक़ादी ज़ाहिर न की थी फिर जब उसने अपनी बद ऐतक़ादी ज़ाहिर की तो लोगों ने उससे रिवायत लेना तर्क कर दी
(मुस्लिम–सहीह–1/73–ह०–54)

➡ हज़रत रक़ाबा कूफ़ी फ़रमाते हैं कि अबू जाअ़फ़र हिकमत आमेज़ कलाम को हदीस बनाकर नक़्ल करता था जबकि वो रसूलुल्लाह की हदीस न होती थी और वो उनको रसूलुल्लाह से रिवायत करता था।
(मुस्लिम–सहीह–1/75–ह०–65)

➡ हज़रत यूनुस बिन उ़बैद फ़रमाते हैं कि अम्र बिन उ़बैद (जो हजरत हसन बसरी की मजलिस में हाज़िर रहा करता था) वो हदीस (की रिवायत) में झूट बोला करता था। (मुस्लिम–सहीह–1/75–ह०–66)

➡ इमाम इब्ने हिब्बान फ़रमाते हैं कि अबान बिन अबू अ़याश सालेह और इ़बादत गुज़ार बन्दों में से था मगर झूटा ऐसा था कि उसने कई हदीसें रिवायत करने का दाअ़वा किया मगर उनमें से एक भी हदीस ऐसी नहीं कि जिस पर ऐतमाद किया जाये।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–1/94)
(तहज़ीबुल कमाल–फ़ी असमाइ र्रिजाल–अ़रबी–2/20)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया आख़िरी ज़माने में ऐसे दज्जाल और फ़रेबी कज़्ज़ाब होंगे जो तुम्हारे पास ऐसी हदीसें लायेगे जो न तुमने सुनी होंगी न तुम्हारे आबा ने तुम उनसे दूर रहना कहीं वो तुम्हें गुमराह न कर दें और तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें (मुस्लिम–सहीह–1/58–ह०–16)
(कंजुल उ़म्माल–5/432–ह०–29024)

झूटी हदीस बयान करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब की वईद

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर झूठ न बोलो बिला शुबा जिसने मुझ पर झूठ बोला वो दोज़ख़ में जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–1/148–ह०–106)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/431–ह०–2661)
(मुस्लिम–सहीह–1/55–ह०–02, 03, 04, 05, 06)

➡ हज़रत अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई मुझ पर ऐसी बात कहे जो मैंने न कही हो तो वो अपना ठिकाना आग में बनाले। (इब्ने माजा–सुनन–1/39–ह०–34)
(दारमी–सुनन–1/201–ह०–243)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ पर झूट बोले वो अपना ठिकाना दोज़ख़ में बनाले।
(बुख़ारी–सहीह–3/606–ह०–3461)
(मिश्कात–1/102–ह०–198)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ऐसी बात कहे जो न अल्लाह की किताब में हो और न रसूलुल्लाह की सुन्नत में हो तो वो जब अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करेगा तो उसे पता नहीं होगा कि उसका दीन क्या है।
(दारमी–सुनन–1/164-ह०-160)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी का झूठा होने के लिये यही काफ़ी है कि वो हर सुनी हुई बात को बयान कर दे (मुस्लिम–सहीह–1/56–ह०–7, 8, 9, 10)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी आदमी के गुनाहगार होने के लिये यही बात काफ़ी है कि वो हर सुनी सुनाई बात को बयान कर दे। (अबू दाऊद–सुनन–4/749-ह०-4992)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
यक़ीनन अल्लाह तआ़ला झूठों को हिदायत नहीं देता। (सूरह–जुमर–39/3)

फ़िरऔ़न के ख़ानदान में से एक मर्द मोमिन ने कहा जो अपना ईमान छुपाये हुये था क्या तुम एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करना चाहते हो कि वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह निशानियाँ लेकर आया है अगर वो झूठा है तो उसके झूठ का बोझ उसी पर होगा और अगर वो सच्चा है तो जिस क़दर अ़ज़ाब का वो तुमसे वाअ़दा कर रहा है तो वो तुम्हें पहुँच कर रहेगा वेशक अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूठा है। (सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/28)

मुआ़विया कातिबे वही नहीं था

➡ इमाम मुस्लिम ने सहीह मुस्लिम में मुआ़विया की फ़ज़ीलत में एक हदीस नक़ल की है जो मौज़ूअ़ और बातिल है और इमाम मुस्लिम भी धोका खा गये और वो हदीस ये है कि अबू सुफ़ियान ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि मुझे तीन चीज़ें अ़ता फ़रमादें उनमें से एक ये कि मुझे अमीर बनादें ताकि मैं कुफ़्फ़ारों से जिहाद करूँ...आपने फ़रमाया हाँ लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अबू सुफ़ियान को कभी अमीर नहीं बनाया और इस हदीस के मुताबिक़ (मआ़ज़ अल्लाह) हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से वाअ़दा ख़िलाफ़ी का अम्र सादिर होगा जबकि रसूलुल्लाह से वाअ़दा ख़िलाफ़ी होना नामुम्किन है और इस हदीस में–

दूसरी बात ये कि अबू सुफ़ियान ने रसूलुल्लाह से अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप मेरी बेटी उम्मे हबीबा (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से निकाह करलें.... तो आपने फ़रमाया हाँ जबकि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने उम्मे हबीबा से निकाह हिजरत के दौरान किया था जब आप हब्शा में थीं और मुअर्रिख़ीन के नज़दीक ये रिवायत मुतवातिर व मशहूर है और अमीर मुआ़विया व अबू सुफ़ियान ये दोनों फ़तह मक्का के दिन इस्लाम लाये और इससे बहुत पहले ही रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का उम्मे हबीबा से निकाह हो चुका था और तीसरी बात अबू सुफ़ियान ने ये अ़र्ज़ की कि आप मेरे बेटे अमीर मुआ़विया को कातिब बना दीजिये तो आपने फ़रमाया हाँ जबकि पहली दोनों बातें झूटी साबित हुईं तो तीसरी बात सहीह कैसे हो सकती है और अगर तीसरी बात सहीह मान भी ली जाये तो इस हदीस में सिर्फ़ कातिब का ज़िक्र है कातिबे वही का ज़िक्र नहीं है और कातिब का माअ़ना मुन्शी होता है और ये रिवायत बाअ़ज़ मुहद्दिसीन के नज़दीक मौजूअ़ है इमाम ज़हबी ने इस हदीस को मुन्कर कहा है और अल्लामा इब्ने क़य्यिम लिखते हैं इस हदीस का ग़लत होना कोई मख़्फ़ी नहीं और अबू मुहम्मद ने कहा कि ये बिला किसी शक के मौजूअ़ है। (मुस्लिम–ह०–6409)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–7/137)
(ज़ादुल मआ़द–उ़र्दू–1/130,131)

➡ हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जंगे यमामा के बाअ़द मेरे पास पैग़ाम भेजा और उस वक़्त हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अबू बक्र सिद्दीक़ के पास मौजूद थे तो हज़रत

अबूबक्र ने कहा कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) मेरे पास आये हैं और उन्होंने मुझसे कहा कि जंगे यमामा में बहुत से क़ारी शहीद हो गये हैं और मुझे अंदेशा हुआ कि अगर किसी और जंग में क़ारी शहीद हो गये तो इस तरह कुरान का बहुत सा हिस्सा जाता रहेगा इसलिये आप कुरान को जमाअ़ करने का हुक्म फ़रमायें हज़रत ज़ैद बिन साबित फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने मुझसे फ़रमाया कि आप अ़क्लमंद और नौजवान शख़्स हैं और आप रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की वही लिखा करते थे इसलिये आप कुरान इकट्ठा करें और उसे एक जगह जमाअ़ करें ज़ैद बिन साबित बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम अगर वो मुझे पहाड़ को मुन्तकि़ल करने पर मामूर फ़रमाते तो वो मुझ पर कुरान के जमाअ़ करने के हुक्म से ज़्यादा आसान होता फिर इस काम के लिये अल्लाह तआ़ला ने मेरा सीना खोल दिया और मैंने कुरान को तलाश करना शुरु किया और मैंने खजूर की शाखों और पत्थर की सिलों और लोगों के सीनों (हाफ़िज़ों) से कुरान इकट्ठा किया हत्ता कि मैंने सूरह तौबा का आख़िरी हिस्सा ‘लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फुसिकुम......’ आख़िर तक सिर्फ़ अबू खुज़ैमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास पाया फिर वो सहीफ़ा (कुराने करीम का नुस्ख़ा) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पास रहा और उनके विसाल के बाअ़द वो सहीफ़ा हज़रत उ़मर फ़ारुक़ के पास रहा फिर आपकी बेटी हज़रत हफ़्सा के पास।

(बुख़ारी–सहीह–5/54–ह०–4986)
(मिश्कात–1/718–ह०–2220)
(हाकिम–5/87–ह०–5778)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/241–ह०–315)

➡अमीर मुआ़विया मुन्शी था (वो भी कुछ वक़्त के लिये क्योंकि फ़तह मक्का के मौक़ेअ़ पर मुआ़विया इस्लाम लाया था) अमीर मुआ़विया हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अ़रबों के दरमियान ख़तो किताबत करता था और हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कातिबे वही थे।
(इब्ने हजर अस्क़लानी–अल असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा-अ़रबी–जिल्द-6-सफ़ा-121)(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–122, 123)

➡ हज़रत अनस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के विसाल के बाअ़द इन चार अफ़राद अबू दरदा और मुआ़ज़ बिन जबल और अबू ज़ैद व ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) के अ़लावा किसी ने भी कुरान को जमाअ़ नहीं किया।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/747–ह०–7735)

मज़कूरा अहादीस की रौशनी में ये बात वाज़ेह तौर पर साबित हुई कि अमीर मुआ़विया कातिबे वही नहीं था और अमीर मुआ़विया कातिबे वही कैसे हो सकता है क्योंकि मुआ़विया फ़तह मक्का के मौक़ेअ़ पर इस्लाम लाया और अमीर मुआ़विया के इस्लाम लाने से पहले 21 साल तक वही–ए–इलाही (कुरान) नाज़िल होता रहा तो ये कुरान कौन लिख रहा था और मुआ़विया न तो मुहाजिरीन में से था और न अन्सार में से था और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के ज़माने में जब कुरान को जमाअ़ किया गया तो अबू बक्र सिद्दीक़ ने ये ज़िम्मेदारी हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को दी और अगर अमीर

मुआ़विया कातिबे वही होता तो मुआ़विया को भी कुरान को जमाअ़ करने के काम में शामिल किया जाता मगर ऐसा नहीं हुआ और ये बात मुआ़विया के कातिबे वही होने की तरदीद करती है और अहादीस में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के कातिबे वही होने का ज़िक्र इस बात पर दलालत करता है कि ज़ैद बिन साबित कातिबे वही थे और मुआ़विया कातिबे वही नहीं था।

–: मुआ़विया फ़क़ीय नहीं था :–

अगर कोई शख़्स ये कहे कि मुआ़विया फ़क़ीय था और फ़क़ीय होना भी फज़ीलत की बात है जबकि वो फ़क़ीय नहीं था अगर वो फ़क़ीय होता तो एक रकअ़त नमाज़े वित्र नहीं पढ़ता व बुध को जुमअ़ा नहीं पढ़ता, नमाज़े ईदैन में अज़ान नहीं दिलवाता नमाज़ से पहले खुत्बा न पढ़वाता और दौराने हज तल्बिया कहता वग़ैराह लेकिन अगर मान लिया जाये कि अमीर मुआ़विया फ़क़ीय था तो ये फज़ीलत तब है कि जब वो बा अ़मल हो और अह्ले बैत अत्हार से सच्ची मुहब्बत व हुस्ने अ़क़ीदा रखता हो अह्ले बैत से बुग्ज़ रखने वाला कितना ही बड़ा फ़क़ीय क्यों न हो वो दोज़ख़ी है और उसकी कोई फ़ज़ीलत नहीं है मसलन अ़ब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम भी फ़क़ीय था मगर उसने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को शहीद किया इमाम ज़हबी लिखते हैं कि इब्ने मुल्जिम उन लोगों में से था जिन्होंने कुरान और फ़िक़ा सीखी थी इब्ने मुल्जिम ने कुरान हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सीखा था इसलिये हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने ख़त लिखा कि इब्ने मुल्जिम का घर मस्जिद के क़रीब करदो ताकि

वो लोगों को कुरान और फ़िक़ा की ताअ़लीम दे (और इब्ने मुल्जिम उम्मत का सबसे बड़ा बदबख़्त था)
(इमाम ज़हबी–तारीख़े इस्लाम–अ़रबी–जिल्द–3-सफ़ा-653)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर व हज़रत जाबिर (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया ऐ अ़ली तुम ख़लीफ़ा बनाये जाओगे और तुम क़त्ल किये जाओगे हत्ता कि तुम्हारी दाढ़ी खून से रंगी जायेगी और तुम्हें इस इस मक़ाम पर ज़ख़्म आयेंगे फिर वहाँ से खून बहेगा और तुम्हें शहीद करने वाला उम्मत का सबसे बड़ा बदबख़्त होगा जैसे ऊँटनी की कौंचें काटने वाला क़ौमे समूद का सबसे बड़ा बदबख़्त था।
(मुस्नद अहमद–1/1294–ह०–18321)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/279–ह०–4679)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/232–ह०–4590)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/170–ह०–171)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/106–ह०–2006)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/534–ह०–7318)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/327–ह०–481, 565, 586)
(कंजुल उ़म्माल–7/71–ह०–36428, 36429)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/252)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/177)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/616)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/422)

➡ अमीर मुआ़विया की फ़ज़ीलत में जो मौजूअ़ हदीस वारिद हैं उनको बाअ़ज़ ने मुन्कर कहा और बाअ़ज़ ने मजहूल कहा क्योंकि उसके रावी या तो मजहूल हैं या–

गुमनाम हैं या ग़ैर मुअ़तबर हैं या मतरुक और झूटे हैं जो हदीसें घढ़ते हैं और बाअ़ज रिवायत में ज़ईफ़ रावी मुफ़रद हैं और बाअ़ज़ रिवायत मुअ़दिल हैं और शेखुल हदीस अल्लामा गुलाम रसूल सईदी शरह सहीह मुस्लिम के मुक़दद्मा में मुअ़दिल रिवायत के हुक्म में लिखते हैं कि जिस हदीस में दो या दो से ज़्यादा रावी मुतवातिर साक़ित हों वो मुअ़दिल रिवायत है और मुअ़दिल हदीस मुरसल व मुनक़ताअ़ से कम दर्जे की होती है क्योंकि इसमें बाकसरत रावी हज़्फ़ होते हैं और इस हुक्म पर तमाम उ़ल्माओं का इत्तिफ़ाक़ है।
(शरह–सहीह मुस्लिम–उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–124,125)
इमाम सख़ावी लिखते हैं कि मुअ़दिल रिवायत का हाल मुनक़ताअ़ से ज़्यादा बुरा होता है और मुनक़ताअ़ का हाल मुरसल से भी ज़्यादा बुरा होता है और मुरसल हदीस से हुज्जत क़ायम नहीं होती।
(फ़त्हुल मुग़ीस–अ़रबी–1–सफ़ा–285)

मुआ़विया की फ़ज़ीलत में मौज़ूअ़ अहादीस का तहक़ीक़ी जायज़ा

➡ मुहिब्बाने मुआ़विया ने बनू उमय्या के दौरे हुकूमत में मुआ़विया की फ़ज़ीलत में मन घढ़त, मौज़ूअ़ व बातिल हदीसें वज़अ़ की हैं उनमें से एक हदीस ये कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया 'ऐ–मुआ़विया तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ' और ये हदीस 'फ़ैज़ाने अमीर मुआ़विया' किताब में सफ़ा-171 पर रक़म है जो मक्तबुल मदीना बाबुल मदीना (दाअ़वते इस्लामी) से शाए हुई है इसमें एक हवाला मुस्नद अल फ़िरदौस–की हदीस न० 8530 से लिया गया है हालांकि ये हदीस मौज़ूअ़ व बातिल है क्योंकि इस हदीस के तमाम रावी–

झूटे और मौज़ूअ़ व बातिल हदीसें वज़अ़ करने वाले हैं इस हदीस के एक रावी अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन याहया है जिसे इमाम बुख़ारी ने हदीस वज़अ़ करने वाला कहा है और इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ने इसको झूटा क़रार दिया है और अबू हातिम ने इसको ज़ईफ़ कहा और मुस्अब ने इसको कज़्ज़ाब कहा है और मुहद्दिस अबू जाअ़फ़र उक़ैली ने कहा कि ये सिक़ा रावियों से बातिल हदीसें लाता था।
(इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा-213) (इमाम ज़हबी–मीज़ानुल एअ़तिदाल–अ़रबी–जिल्द–2-सफ़ा-636)(तहज़ीबुल कमाल–फ़ी असमाइ रिंजाल–अ़रबी-जिल्द-18-सफ़ा-219,220)(तक़रीबुत तहज़ीब –उ़र्दू–जिल्द–1–सफ़ा–555)

और इस हदीस में मुस्नद अल फिरदौस के अ़लावा एक हवाला अश्शरिया का दिया गया जिसका हदीस न० 1925 है और इस हदीस की ताअ़लीक़ मे नीचे मौज़ूअ़ हदीस लिखा है।
(अश्शरिया–अ़रबी–सफ़ा–785– रक़म–1925)

इस हदीस का एक हवाला ख़ल्लाल की अस्सुन्नाह से लिया गया है जिसका हदीस न०–704 है इसकी सनद में पहला रावी हर्ब लिखा है मगर हर्ब के बाप का नाम ही नहीं लिखा है और जब हदीस की सनद में रावी के बाप का नाम नामाअ़लूम हो तो हदीस अपनी सनद में कमज़ोर होती है और एक रावी इस्माईल बिन अ़याश है इसके मुताअ़ल्लिक़ ताअ़लीक़ मे नीचे लिखा है कि ये अपने शहर के लोगों से रिवायत में सच्चा था लेकिन वो दूसरों के साथ ख़ल्त मल्त करने वाला था और एक रावी अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़मर है इसके मुताअ़ल्लिक़–

ताअ़लीक़ मे नीचे लिखा है कि ये ख़ता करता था और इसमें एक रावी मुहम्मद बिन मुसफ़्फ़ा है इसके बारे में लिखा है कि ये फ़रेबकारी करता था और इस हदीस में एक रावी अ़ब्दुर्रहमान बिन दीनार है और इसके बारे में इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी लिखते हैं कि ये ख़ता करता था। (अस्सुन्नाह–अ़रबी–सफ़ा–454–रक़म–704)

इस हदीस का एक और हवाला लिसानुल मीज़ान से लिया गया है जबकि इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी ने वाज़ेह तौर पर इस रिवायत को बातिल क़रार दिया है। (इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी–लिसानुल मीज़ान–अ़रबी–जिल्द–5–सफ़ा–194)

इमाम ज़हबी फ़रमाते हैं कि ये हदीस मौजूअ़ व मन घढ़त है। (इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी जिल्द–3–सफ़ा–131)

और एक बड़ी अजीब बात ये कि ये हदीस जितनी किताबों में आई है उन सब किताबों में इस हदीस की सनद में एक रावी अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का नाम ज़रुर आया है मगर उसके बाप का नाम बदलता रहा यानी हदीस घढ़ने वाला शख़्स बहुत होशियार और चालाक था तो माअ़लूम हुआ कि बिला शको शुबाह ये हदीस कि 'ऐ मुआ़विया तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ' मन घढ़त व मौजूअ़ और बातिल है और इसी तरह मुआ़विया की फ़ज़ीलत में जितनी भी हदीसें मौजूद हैं वो सबकी सब मन घढ़त व मौजूअ़ और बातिल हैं।

➡ इसी तरह एक और हदीस जो तिमिर्ज़ी शरीफ़ में है 'अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़मीरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुआ़विया के लिये दुआ़ की ऐ अल्लाह इसे हादी व हिदायत याफ़्ता बनादे और इसके ज़रिये हिदायत नसीब फ़रमां'(तिर्मिज़ी –रक़्म–3842) जबकि ये हदीस मौजूअ़ है इस हदीस के मुताअ़ल्लिक़ इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी व इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर्र और अ़ब्दुर्रहमान मुबारक पुरी ने लिखा है कि इस हदीस के रावी अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मीरा का न तो सहाबी होना सहीह है और न ही ये हदीस सहीह है।

(इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी-जिल्द–4–सफ़ा–107–रक़्म–4641)(इमाम अ़ब्दुल बर्र–अल इस्तिआ़ब फ़ी माअ़रिफ़तिस सहाबा–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा –537–रक़्म–1677) (इमाम हाफ़िज़ अ़ब्दुर्रहमान मुबारक पुरी तोहफ़तुल अहवज़ी–शरह जामेअ़ तिर्मिज़ी–10/341–रक़्म–3932)

इमाम ज़हबी फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मीरा के सहाबी होने में इख़्तिलाफ़ है और बाअ़ज़ ये कहते हैं कि वो ताबई था।

(इमाम ज़हबी–तारीख़े इस्लाम–अ़रबी–जिल्द–2-सफ़ा-674)

इमाम इब्ने अबी हातिम फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मीरा ने ये हदीस हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से नहीं सुनी।

(किताबुल इ़लल–अ़रबी–जिल्द–6–सफ़ा–382–रक़्म-2601)

इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मीरा के सहाबी होने में इख़्तिलाफ़ है।

(इब्ने हजर अस्क़लानी–तक़रीबुत तहज़ीब–उ़र्दू–जिल्द–1-सफ़ा–534–रक़्म–3971)

इमाम इब्ने असीर लिखते हैं कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू अ़मीरा का शुमार अह्ले शाम वालों में से होता है और इनकी रिवायत कर्दा हदीस मुज़तरिब करती है व इनका सहाबी होना साबित नहीं है और जो रिवायत इनसे है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुआ़विया के लिये दुआ़ की ''ऐ अल्लाह इसे हिदायत करने वाला व हिदायत याफ़्ता बनादे और इसके ज़रिये हिदायत नसीब फरमां'' तो बाअ़ज़ ने इनकी हदीस को मौकूफ़ बयान किया बाअ़ज़ ने मरफूअ़ और अबू ऊ़मर ने बयान किया है कि इनकी हदीस मुनक़ताअ़ उस्सनद व मुरसल है और न तो इनकी हदीसें पाये सबूत तक पहुँचती हैं और न ही इनका सहाबी होना साबित है। (इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा फ़ी माअ़रिफ़तिस्‍ सहाबा–ऊ़र्दू–जिल्द–2–सफ़ा–435–रक़्म–3362)

पस माअ़लूम हुआ कि जब सहाबी की साहबियत ही मशकूक है तो ये हदीस सहीह कैसे हो सकती है और जो लोग मुआ़विया की फ़ज़ीलत में इस मौजूअ़ व बातिल हदीस को पेश करते हैं तो मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि क्या हादी व हिदायत याफ़्ता की सीरत व किरदार और आअ़माल ऐसे होते हैं मुआ़विया ने हज़रत अ़ली की बैअ़त व इताअ़त से इन्कार किया व उनसे बग़ावत और जंग की हज़रत हुज्र बिन अ़दी व उनके साथियों का क़त्ल कर'वाया और हज़रत मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ का क़त्ल कर'वाया और हज़रत मालिक बिन अश्तर का क़त्ल कर'वाया हज़रत आयशा सिद्दीक़ा व हज़रत इमाम हसन का क़त्ल कर'वाया व इमाम हसन की वफ़ात पर अमीर मुआ़विया ने खुशियाँ मनाईं और हज़रत अम्मार बिन यासिर और बेशुमार सहाबाकिराम व ताबईने किराम का क़त्ल कर'वाया और मुआ़विया ने

कुरानो सुन्नत के ख़िलाफ़ हुकूमते निज़ाम को चलाया दीन में नई नई बिदअ़तें ईजाद कीं और नाहक़ क़त्ल और नाहक़ माल लूटने का हुक्म दिया और मुअ़ाविया शराब पीता था शराब से लज़्ज़त हासिल करता था क्या शराब पीने वाला हादी व हिदायत याफ़्ता हो सकता है मुअ़ाविया ने अपने बेटे यज़ीद लईन को अपनी ज़िन्दगी में अपना जानशीन मुक़र्रर किया, मुअ़ाविया मिम्बरों से हज़रत अ़ली पर सब्बो शत्म व लाअ़न ताअ़न करता व कर'वाता था, मुअ़ाविया ने लोगों के हाथ कटवाये व सर क़लम कर'वाये इस तरह से मुअ़ाविया ने अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल और अहले बैत और सहाबा व ताबईन को अज़्ज़ियतें पहुँचाईं जिसके सबब मुअ़ाविया काफ़िर और दोज़ख़ी हुआ और अगर हादी व हिदायत याफ़्ता ऐसा होता है तो फिर ऐसा हादी और हिदायत याफ़्ता मुनाफ़िक़ों व नासबियों को मुबारक हो।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

बेशक जो लोग अल्लाह व उसके रसूल को अज़्ज़ियत देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया व आख़िरत में लाअ़नत भेजता है और उसने उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सूरह-अहज़ाब-33/57)

बस मलामत के मुस्तहिक़ तो वो हैं जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं और फ़साद फ़ैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह-शूरा-42/42)

और जो शख़्स किसी मुसलमान का क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा (सूरह-निसा-4/93)

➡ बाअ़ज़ लोग मुआ़विया के दोज़ख़ी होने व आग में जलने से बचाने के लिये ये तावील करते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है बेशक मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ उस शख़्स को जिसने तौबा की और ईमान लाया व नेक अ़मल किये फिर हिदायत पर क़ायम रहा।
(सूरह–ताहा–20/82)

इस आयते करीमा में जो बात क़ाबिले तवज्जौ है वो ये कि अल्लाह तआ़ला ने ये शर्त रखी कि बेशक मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ उसको जो तौबा करने के बाअ़द गुनाहों के काम न करे बल्कि नेक आअ़माल करे और फिर हिदायत पर क़ायम रहे और अमीर मुआ़विया की तो पूरी ज़िन्दगी जहन्नम में ले जाने वाले अ़मल और गुनाहे कबीरा में गुज़री है और न ही वो हिदायत पर क़ायम रहा तो अमीर मुआ़विया की तौबा की कुबूलियत व मग़फ़िरत मुम्किन ही नहीं और हदीस पाक में है कि मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाले की तौबा कुबूल ही नहीं होती।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से एक शख़्स ने सुवाल किया कि क्या क़ातिल तौबा कर सकता है तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ने मुताअ़ज्जुब होकर पूछा तुम क्या कह रहे हो उसने अपना सुवाल दोहराया उन्होंने फिर पूछा तुम क्या कह रहे हो फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ने फ़रमाया कि उसकी तौबा कुबूल नहीं होगी क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि रोज़े क़यामत मक़्तूल आयेगा एक हाथ से उसने अपने सर को सहारा दे रखा होगा और दूसरे हाथ से उसने क़ातिल का गिरेबान पकड़ा हुआ–

होगा और मक़्तूल की रगों से खून उबल रहा होगा वो उसको अ़र्श के पास लेकर आयेगा और रब तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा कि इसने मुझे क़त्ल किया था फिर अल्लाह तआ़ला क़ातिल से कहेगा तू हलाक हो गया फिर उसे दोज़ख़ की तरफ़ भेज दिया जायेगा फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने ये आयत पढ़ी ''जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है'' और फिर आपने फ़रमाया कि कुरान की ये आयत न तो मन्सूख़ हुई है और न ही बदली गई है तो उसकी तौबा कैसे कुबूल हो सकती है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/627–ह०–3029)
(नसाई–सुनन–6/681–ह०–4867)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/346–ह०–4217)
(अल बानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा-5/425-ह०-3741)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो शिर्क की हालत में मर गया या जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया हो नीज़ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन को क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला उसका कोई अ़मल भी कुबूल नहीं करेगा न ही निफ़िल न फ़र्ज़। (अबू दाऊद–सुनन–4/277–ह०–4270)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तअ़ाला हर गुनाह को मुअ़ाफ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे।
(मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

पस मज़कूरा अहादीस से ये साबित हुआ कि किसी मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाले की तौबा कुबूल नहीं होती और मुसलमान का क़ातिल दोज़ख़ी है जिसमें वो हमेशा रहेगा और मुअ़ाविया बेशुमार सहाबा किराम व ताबईन का क़ातिल है इसलिये मुअ़ाविया दोज़ख़ी है।

बाअ़ज़ लोग मुअ़ाविया के दिफ़ाअ़ में कुरान की सूरह निसा की आयत के अ़लावा एक हदीस पेश करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुमसे पहले लोगों में से एक शख़्स ने सौ लोगों का क़त्ल किया फिर वो एक अ़ालिम के पास गया और कहा उसने सौ क़त्ल किये हैं क्या उसके लिये तौबा का इमकान है उस अ़ालिम ने कहा कि तुम फुलां फुलां सरज़मीन पर चले जाओ वहाँ ऐसे लोग हैं जो अल्लाह की इ़बादत करते हैं तुम भी उनके साथ इ़बादत में मशगूल हो जाओ तो वो चल पड़ा यहाँ तक कि उसने आधा रास्ता तय कर लिया तो उसे मौत ने आ लिया तो रहमत के फ़रिश्ते व अ़ज़ाब के फ़रिश्ते झगड़ने लगे फिर एक फ़रिश्ता इन्सानी शक्ल में आया और उसने कहा कि दोंनों ज़मीनो के दरमियान फ़ासला माप लो जिस ज़मीन के ये ज़्यादा क़रीब होगा तो ये उसी ज़मीन के लोगों में से होगा फिर उन्होंने मुसाफ़त-

को मापा तो उस ज़मीन के क़रीब पाया जिस तरफ़ वो जा रहा था चुनांचा रहमत के फ़रिश्तों ने उसे अपने हाथों में ले लिया। (मुस्लिम–सहीह–5/243–ह०–7008)

पस जो लोग अमीर मुअ़ाविया के दिफ़ाअ़ में इस हदीस को पेश करते हैं तो इस हदीस के मुताबिक़ कुरान में अल्लाह तअ़ाला का फ़रमान (मअ़ाज़ अल्लाह) झूटा हो जायेगा जैसा कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने कुरान की सूरह निसा में फ़रमाया 'जो शख़्स किसी मुसलमान का क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा' और मज़कूरा हदीस के मुताबिक़ रसूलुल्लाह का फ़रमान भी (मअ़ाज़ अल्लाह) झूटा हो जायेगा जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया 'मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाले की तौबा कुबूल नहीं होती है और मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाला दोज़ख़ी है' हालांकि अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल ने जो फ़रमां दिया वो हक़ है और जो भी फ़रमाया वो ज़रुर होकर रहेगा

और इस हदीस में ये उस शख़्स का वाक़्अ़ा है जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बेअ़सत से पहले ज़माने में था लेकिन नासबी मुल्ला मुअ़ाविया के दिफ़ाअ़ में अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल के फ़रमान की नफ़ी करते हैं जो गुनाहे अ़ज़ीम और दोज़ख़ मे ले जाने वाला अ़मल है

और अगर इस हदीस को सहीह मान भी लिया जाये तो वो 72 फ़िरक़े भी जन्नती हैं जिनके दोज़ख़ में जाने की रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पेशीन गोई फ़रमाई क्योंकि वो 72 फ़िरक़े के लोग भी–

अल्लाह की इ़बादत करते और तौबा इस्तिग़फ़ार करते हैं और वो 72 फ़िरक़े मुसलमानों की जमाअ़त से अलग होकर बनेंगे और तमाम दहशत गर्द आतंकबादी भी जो नाहक़ मुसलमानों का क़त्ल करते मस्जिदों में व दीगर जगहों पर बम ब्लास्ट करके मुसलमानों का क़त्ल करते तो वो भी जन्नती हैं क्योंकि वो भी अल्लाह की इ़बादत करते और तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हैं और इस तरह तो (मआ़ज़ अल्लाह) अल्लाह व रसूल पर झूटा होने का इल्ज़ाम आता है कि अल्लाह व रसूल फ़रमायें कि मुसलमान का नाहक़ क़त्ल करने वाला दोज़ख़ी है और नासबी मुल्ला कहे कि तौबा करो चाहे 100 क़त्ल करो जन्नत में जाओगे हांलाकि जो कुरान की आयत व हदीस की ऐसी तावीलो तशरीह करे और मुसलमान के नाहक़ क़त्ल करने वाले को जन्नती बनाये वो भी दोज़ख़ी है।

अब रहा सुवाल कुरान की उस आयत का जिसमें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ (सूरह-ताहा-20/82) तो बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है लेकिन गुनाहे शिर्क और मुसलमान का नाहक़ क़त्ल और वो गुनाह जिनका तआ़ल्लुक़ हुकूकुल इ़बाद से है उनको छोड़कर अल्लाह तआ़ला जिसे चाहेगा उसे बख़्श देगा।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस कौन है तो सहाबाकिराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम तो मुफ़लिस उसे जानते हैं जिसके पास मालो मताअ़ में से कुछ न हो तो आपने फ़रमाया कि मुफ़लिस वो है जो रोज़े क़यामत इस तरह आयेगा-

कि उसके पास रोज़ा व नमाज़ व ज़कात होगी लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी किसी पर तुहमत (झूठा इल्ज़ाम बोहतान) लगाया होगा या किसी का माल खाया होगा किसी का नाहक़ क़त्ल किया होगा या किसी को मारा होगा तो वो बैठा होगा और ये लोग इन जुर्मों के बदले उसकी नेकियाँ ले जायेंगे और अगर गुनाहों का बदला पूरा होने से पहले नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो फिर उनके गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे फिर उसे दोज़ख़ की आग में डाल दिया जायेगा।
(मुस्लिम–सहीह–6/207–ह०–6579)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/244–ह०–2418)

पस माअ़लूम हुआ कि जिसने किसी मुसलमान का क़सदन नाहक़ क़त्ल किया तो वो बख़्शा नहीं जायेगा अल्लाह तअ़ाला ने मुसलमान के क़ातिल से ये वाअ़दा फ़रमां दिया कि उसका दायमी ठिकाना नारे दोज़ख़ है जिसमें वो हमेशा रहेगा और अल्लाह तअ़ाला कभी भी वाअ़दा ख़िलाफ़ी नहीं करता और न ही कुरान की ये आयत मन्सूख़ हुई है जिसमें अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा।

तो जब किसी अ़ाम मुसलमान को क़त्ल करने की सज़ा दोज़ख़ और दायमी सख़्त अ़ज़ाब है तो सहाबा किराम व ताबईन का क़ातिल, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का क़ातिल और मुहम्मद बिन अबू बक्र का क़ातिल हुज्र बिन अदी का क़ातिल मालिक बिन अश्तर का क़ातिल हज़रत इमाम हसन व हज़रत मौला अ़ली के क़ातिल मुअ़ाविया पर दोज़ख़ में कितना सख़्त तरीन अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा आप खुद अंदाज़ा लगायें

मुअ़ाविया का मुरतद, सरकश, शराबी, ज़ालिम, बाग़ी व फ़सादी और क़ातिल होना कुतुबे अहादीस और कुतुबे तवारीख़ से साबित है और अमीर मुअ़ाविया ने सहाबा व ताबईन के अ़लावा उन बुलन्द हस्तियों का भी क़त्ल किया कि जिनकी फ़ज़ीलत में कुरान की आयात नाज़िल हुईं और हदीस पाक में जिनके बेशुमार फ़ज़ाइल मौजूद हैं मसलन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम), हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) व उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) वग़ैराह और मुअ़ाविया उसी दिन मुरतद हो गया था जिस दिन उसने ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत मौला अ़ली की बैअ़त से इन्कार कर दिया और बाग़ी हो गया था और उसने अपनी आज़ाद हुकूमत का ऐअ़लान कर दिया था और हज़रत मौला अ़ली से जंग की जिसमें बेशुमार सहाबा शहीद हुये और एक ख़लीफ़ा के होते हुये दूसरा मुरतद (वाजिबुल क़त्ल) होता है।

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने इमाम की बैअ़त करे तो इस्तिताअ़त रखते हुये उसकी इताअ़त करे और फिर अगर दूसरा आ जाये और उससे इमामत छीनना चाहे तो उस दूसरे की गर्दन उड़ा दो (मुस्लिम-सहीह-उ़र्दू-3/713-ह०-4776)
(मुस्नद अहमद-उ़र्दू-3/506-ह०-6503)
(इब्ने अबी शैबा-उ़र्दू-11/521-ह०-38264)
(अबू दाऊद-सुनन-उ़र्दू-4/263-ह०-4248)

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दो ख़लीफ़ों के लिये बैअ़त ली जाये तो उनमें से दूसरे को क़त्ल करदो। (मुस्लिम–सहीह–3/724–ह०–4799)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान का खून हलाल नहीं सिवाये तीन बातों के ऐवज़ एक शादी शुदा होकर ज़िना करने वाला दूसरा इस्लाम के बाअ़द मुरतद होने वाला तीसरा नाहक़ क़त्ल करने के बदले क़त्ल किया जाना। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/58–ह०–2158)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के ज़माने में एक शख़्स ने किसी को क़त्ल कर दिया फिर वो क़ातिल मक़्तूल के वली को सौंपा गया सो क़ातिल ने कहा अल्लाह की क़सम मैंने क़सदन नहीं मारा तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मक़्तूल के वली से फ़रमाया कि अगर ये अपने क़ौल में सच्चा है और अगर तुमने इसे क़िसास में क़त्ल कर दिया तो तुम जहन्नम में जाओगे पस मक़्तूल के वली ने उस क़ातिल को छोड़ दिया। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/778–ह०–1407)

बाअ़ज़ सहाबा मुरतद हुये

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का सहाबी होना एक अ़ज़ीम शरफ़ और नेअ़मते उ़ज़्मा है और कोई सहाबी इस शरफ़ व अपनी साहबियत को क़ायम न रख सके तो वो मन्सबे साहबियत से ख़ारिज

हो जाता है फिर वो सहाबी नहीं रहता और उनसे ऐसे उमूर सादिर हों जो सरीह कुफ़्र हों तो वो काफ़िर व मुरतद हो जाता है तो जो सहाबा मुरतद हुये वो दीदारे नबवी और सुहबते नबवी के शरफ़ को क़ायम न रख सके और उनमें से बाअ़ज़ सहाबा ऐसे हैं कि जिन्होंने ऐसे गुनाहों का इरतिकाब किया जिसके सबब वो दोज़ख़ के मुस्तहिक़ हुये तो ऐसे सहाबा क़ाबिले मज़म्मत और लाअ़नती और मरदूद हैं और जो सहाबी अपनी वफ़ात तक ईमान पर साबित क़दम रहा तो वो सहाबी है और जो ईमान पर साबित क़दम न रहा वो सहाबी नहीं है अगरचा वो रसूलुल्लाह की ज़िन्दगी में सहाबी रहा हो।

➡ हज़रत मिक़दाद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़रीब एक शख़्स गुज़रा तो उसने कहा कि उन दो आँखों ने कामयाबी पाई जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से मुशर्रफ़ हुईं तो हज़रत मिक़दाद इंतिहाई ग़ज़बनाक हुये और फ़रमाया कि ऐ लोगो उस अम्र की तमन्ना न करो कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने मख़्फ़ी रखा है और बहुत से लोग ऐसे हैं कि जिन्होंने रसूलुल्लाह के दीदार से फ़ायदा नहीं उठाया।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/258–ह०–608)
(इब्ने असाकिर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–60/180)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम रोज़े क़यामत नंगे पाँव नंगे बदन और ख़त्ने के बग़ैर उठाये जाओगे फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई ''जिस तरह से हमने उन्हें पहली बार पैदा किया था उसी तरह से हम दोबारा पैदा करेंगे ये वाअ़दा पूरा करना हमने लाज़िम–

कर लिया है और हम ये वाअ़दा ज़रुर पूरा करने वाले हैं'' (सूरह–अम्बिया–21/104) फिर आपने फ़रमाया कि कि मेरे असहाब में से कुछ लोगों को दायीं तरफ़ यानी जन्नत की जानिब ले जाया जायेगा लेकिन कुछ लोगों को बायीं तरफ़ यानी दोज़ख़ की तरफ़ ले जाया जायेगा तो मैं कहूँगा ये मेरे असहाब हैं तो मुझे बताया जायेगा कि ऐ महबूब आप जब उनसे जुदा हुये तो उसके बाद उन्होंने इरतिदाद इख़्तियार कर लिया था यानी इस्लाम से निकल गये थे और मुरतद हो गये थे फिर आपने फ़रमाया कि मैं उस वक़्त वही कुछ कहूँगा जो हज़रत ईसा बिन मरयम (अ़लैहिमस्सलाम) ने कहा था कि जब तक मैं उनके अन्दर मौजूद रहा उनकी निगरानी करता रहा लेकिन जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनकी निगेहबानी करने वाला था और तू हर चीज़ पर निगेह बान है फिर अगर तू उन्हें सज़ा दे तो वो तेरे ही बन्दे हैं और अगर तू उन्हें मुआ़फ़ फ़रमांदे तो बिला शुबाह तू हर शैः पर ग़ालिब और हिकमत वाला है''।
(सूरह–मायदा-5/117,118)(बुख़ारी–सहीह-3/599-ह०-3447)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने विसाल फ़रमाया और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुये तो अ़रब के बाअ़ज़ लोग काफ़िर (मुरतद) हो गये तो अबू बक्र सिद्दीक़ ने उनके ख़िलाफ़ क़िताल का इक़दाम किया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम मैं हर उस शख़्स से क़िताल करुँगा जो नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ करता है क्योंकि ज़कात माल का हक़ है अल्लाह की क़सम अगर उन्होंने एक बकरी का बच्चा भी रोक लिया या ऊँट का पाँव बांधने

की एक रस्सी भी रोकेंगे जो वो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को दिया करते थे तो उसके रोकने पर मैं ज़रुर उनसे जंग करुँगा तो इस पर उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मैं भी इस वज़ाहत के बाअ़द वही समझने लगा जिसके लिये अल्लाह तअ़ाला ने अबू बक्र सिद्दीक़ का सीना खोल दिया था और अब मैं पहचान गया हूँ कि हक़ यही है। (मुस्लिम–सहीह–1/138–ह०–124)
(बुख़ारी–सहीह–2/143–ह०–1399, 1400)
(मिश्कात–3/511–ह०–6034)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सूरह नस्र की आयत तिलावत फ़रमाई ''जब अल्लाह की मदद और फ़तह आये और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं' फिर आपने फ़रमाया कि जिस तरह लोग इसमें दाख़िल होंगे उसी तरह इससे निकल भी जायेंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/640–ह०–8518)
(दारमी–सुनन–1/129–ह०–91)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
देहाती लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं पस आप फ़रमां दीजिये कि तुम ईमान नहीं लाये हो हाँ ये कहो कि हम इस्लाम लाये हैं और ईमान अभी तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ। (सूरह–हुजुरात–49/14)

मुअ़ाविया और मुहिब्बाने मुअ़ाविया के अ़लावा बेशुमार लोग इस आयत के मिस्दाक़ हैं कि जो इस्लाम लाये थे लेकिन ईमान उनके दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ था।

➡हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान फ़रमाते हैं कि क़बीला उ़क्ल के चन्द आदमियों की एक जमाअ़त हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया उन्हें मदीने की आबो हवा मुवाफ़िक़ न आई तो आपने उन्हें सदक़े के ऊँटों के पास रहने का हुक्म दिया ताकि वो उनका दूध पियें और फिर वो मुरतद हो गये और उनके चरवाहों को क़त्ल करके ऊँटों को हांक ले गये तो आपने उन्हें पकड़ने के लिये आदमी भेजे वो उन्हें पकड़कर ले आये फिर आपके हुक्म से उनके हाथ व पाँव काट दिये गये व उनकी आँखों में गरम सलाइयाँ फेरी गईं और उनका खून बहता रहा हत्ता कि वो फ़ौत हो गये।
(बुख़ारी–सहीह–2/204–ह०–1501, 3018, 6804)
(मुस्लिम–सहीह–3/466–ह०–4353)
(मिश्कात–2/421–ह०–3539)

कातिबे वही का मुरतद होना

➡हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है एक नसरानी शख़्स ने मुसलमान होकर सू०–बक़राह और सू०–आले इमरान पढ़ली और फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लिये वही की किताबत करने लगा और उसके बाद वो फिर से नसरानी हो गया और वो कहने लगा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तो सिर्फ़ वो कुछ जानते हैं जो कुछ मैंने उनके लिये लिख दिया है चुनांचा जब वो शख़्स मरा तो लोगों ने उसे दफ़न कर दिया जब सुबह हुई तो लोगों ने देखा कि ज़मीन ने उसकी लाश बाहर फेंक दी तो लोगों ने कहा कि ये

मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) व उनके असहाब का काम है क्योंकि ये उनके पास से भाग कर आया था सो उन्होंने हमारे साथी की क़ब्र खोद डाली फिर उन लोगों ने बहुत गहरी क़ब्र खोदी और उसमें उसे दफ़न किया मगर सुबह ज़मीन ने उसकी लाश को बाहर फेंक दिया इस पर फिर लोगों ने यही कहा कि ये तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) व उनके साथियों का काम है फिर उन लोगों ने उसकी क़ब्र और ज़्यादा गहरी खोदी जितना उनके बस में था लेकिन सुबह के वक़्त उसकी लाश फिर से ज़मीन ने बाहर फेंक दी तब उन लोगों ने यक़ीन किया कि ये लोगों की तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है लिहाज़ा उन लोगों नें उसकी लाश को उसी हाल पर छोड़ दिया। (बुख़ारी–सहीह–3/685–ह०–3617)
(मुस्लिम–सहीह–5/288–ह०–7040)
(मिश्कात–3/192–ह०–5645, 5898)

इसी तरह एक और सहाबी जो कातिबे वही था वो मुरतद हुआ और उसका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन साअ़द था इसका ज़िक्र नसाई शरीफ़ में है।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मर‘वी है कि अ़ब्दुल्लाह बिन साअ़द हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये वही लिखा करता था फिर शैतान ने उसको बहका दिया और वो काफ़िरों से जा मिला और फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह ने उस मुरतद के क़त्ल का हुक्म जारी फ़रमां दिया था लेकिन हज़रत उ़स्मान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसके लिये पनाह मांगी तो आपने उसे पनाह दे दी।
(नसाई–सुनन–6/97–ह०–4074)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़तह मक्का के दिन चार मर्दों व दो औ़रतों के सिवा तमाम लोगों को अमान दे दी थी उनमें से एक अ़ब्दुल्लाह बिन साअ़द भी था जो हज़रत उ़स्मान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के घर छुप गया था रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने जब लोगों को बैअ़त के लिये बुलाया तो उ़स्मान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अ़ब्दुल्लाह बिन साअ़द को ले आये और रसूलुल्लाह के पास खड़ा कर दिया और अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल अ़ब्दुल्लाह बिन साअ़द की बैअ़त कुबूल फ़रमां लीजिये तो आपने अपना सर उठाया और उसकी तरफ़ देखा तीन बार इस तरह हुआ और आप ने हर बार इन्कार फरमाया फिर तीसरी बार के बाअ़द आपने बैअ़त फ़रमाई और फिर अपने सहाबा की तरफ़ मुतावज्जै हुये फिर फ़रमाया कि तुममें से कोई समझदार आदमी न था जो उसकी तरफ़ उठता कि जब देखा कि मैंने उसकी बैअ़त से हाथ खींच लिया है तो उसे क़त्ल कर देता उन्होंने कहा या रसूलल्लाह हमें माअ़लूम न था कि आपके जी में क्या है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/174–ह०–2683)
(नसाई–सुनन–6/93–ह०–4072)

पस माअ़लूम हुआ कि किसी का सहाबी होना या कातिबे वही होना उसे किसी क़िस्म का कोई नफ़ा और फ़ायदा न देगा और न ही उसकी फ़ज़ीलत को क़ायम रखेगा अगर वो इस्लाम से फिर जाये और मुरतद हो जाये बाअ़ज़ लोग कहते हैं कि मुआ़विया कातिबे वही था और ये उसकी फ़ज़ीलत है जबकि गुज़िश्ता सफ़हात पर मुस्तनद व मुस्तहकम दलाइल से ये बात साबित हो

चुकी है कि मुआ़विया कातिबे वही नहीं था बल्कि मुन्शी था वो भी कुछ वक़्त के लिये और कातिबे वही हज़रत ज़ैद बिन साबित थे और अमीर मुआ़विया फ़तह मक्का के दिन मजबूरी में इस्लाम लाया था तब तक 99.9% कुरान नाज़िल हो चुका था तो फिर मुआ़विया ने कौन सी वही लिखी थी और जैसा कि हदीस पाक में है कि कातिबे वही जब इस्लाम से फिर गया तो अल्लाह के रसूल ने उस मुरतद कातिबे वही को क़त्ल कर देने का हुक्म फ़रमाया था और एक कातिबे वही को ज़मीन ने कुबूल नहीं किया तो मुआ़विया का कितना बुरा अन्जाम होगा जबकि अमीर मुआ़विया तो कातिबे वही भी नहीं था अमीर मुआ़विया के कुफ़्रिया उमूर ने उसे काफ़िर व मुरतद बना दिया था।

बाअ़ज़ सहाबा भी दोज़ख़ में जायेंगे

बाअ़ज़ मुल्ला ये कहते हैं कि किसी सहाबी को बुरा न कहो और हर सहाबी जन्नती है तो इसका जवाब ये है कि जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये वाज़ेह फ़रमां दिया कि बाअ़ज़ सहाबा दोज़ख़ में जायेंगे बाअ़ज़ सहाबा हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे और रसूलुल्लाह ने खुद बाअ़ज़ को मुरतद कहा तो रसूलुल्लाह के क़ौल मुबारक की नफ़ी करने वाला नासबी मुल्ला भी दोज़ख़ी है और हक़ीक़त ये है कि जो जैसा अ़मल करेगा उसे वैसा बदला अ़ता किया जायेगा ख़्वाह वो आ़म मुसलमान हो या सहाबी हो हदीस पाक में है कि एक सहाबी ने चोरी की तो उसका हाथ काटा गया एक सहाबी ने ज़िना किया तो उसे रज्म की सज़ा दी गई व जिन सहाबा ने ज़कात देने से मनाअ़ किया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु

ने उनसे जंग का ऐअ़लान किया रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर मेरी बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) चोरी का इरतिकाब करती तो मैं उसके भी हाथ काटने हुक्म देता और जिसको रसूलुल्लाह बुरा कहें उसे बुरा कहना सुन्नत है फिर मुल्ला की क्या औक़ात जो रसूलुल्लाह के क़ौल की नफ़ी करे और कुरानो अहादीस में सैकड़ों मक़ामात पर इस बात का ज़िक्र है कि जो जैसे अ़मल करेगा उसे वैसा बदला दिया जायेगा और उनके साथ ना इन्साफ़ी नहीं की जायेगी हालांकि इस वक़्त हमारा ये मौजूअ़ नहीं है वरना इस उन्वान पर अल्हम्दुलिल्लाह मैं अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से कुरान व सुन्नत की रौशनी में सैंकडों सफ़हात पर मुश्तमिल एक किताब की तालीफ़ कर सकता हूँ कि जो जैसे अ़मल करेगा उसे वैसा बदला दिया जायेगा और उनके साथ ना इन्साफ़ी नहीं की जायेगी।

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा में से 12 अफ़राद मुनाफ़िक़ हैं और उनमें से आठ ऐसे हैं जो जन्नत में दाख़िल न होंगे और न उसकी खुश्बू पायेंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में दाख़िल न हो जाये यानी वो कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे और उनमें से 8 ऐसे हैं कि उनके शर से निजात के लिये तुम्हारी किफ़ायत आग से जलते हुये दीये की तरह सुर्ख़ फोड़ा करेगा जो उनके कन्धों के दरमियान ज़ाहिर होगा। (मुस्लिम-सहीह-5/284-ह०-7035, 7036)
(मिश्कात-3/461-ह०-5917)
(मुस्नद अहमद-8/85-ह०-18503)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि ख़ैबर के मक़ाम पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और मुश्रिकीन में खूब लड़ाई हुई फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपने लश्कर की जानिब वापस आ गये और मुशरिकीन अपने लश्कर की तरफ़ लौट गये इस दौरान में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के असहाब में से एक शख़्स ऐसा था कि जो जमाअ़त से अलग हो जाने वाले या तन्हा रह जाने वाले मुशरिक को नहीं छोड़ता था वो उसका पीछा करता और अपनी तलवार से उसे मौत के घाट उतार देता था उस शख़्स के बारे में चर्चा होने लगा कि वो खूब लड़ा और जितना काम उसने किया हममें से किसी ने भी इतना काम नहीं किया है

लेकिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसके मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि तुम आगाह रहो कि वो शख़्स दोज़ख़ी है जब वो शख़्स ज़ख़्मों से निढाल हो गया तो उसने जल्दी मरना चाहा इसलिये उसने अपनी तलवार ज़मीन पर रखी और उसकी नोक अपने सीने पर रखी फिर अपनी तलवार पर ज़ोर दिया इस तरह उसने खुदकुशी कर ली फिर एक शख़्स रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या बात है तो उस शख़्स ने कहा कि जिस शख़्स के बारे में आपने फ़रमाया था कि वो दोज़ख़ी है और लोगों को ये बात बड़ी गिरां गुज़री थी चुनाँचा मैं उसकी तलाश में निकला तो देखा कि वो शदीद ज़ख़्मी हो गया था और जल्दी मरना चाहता था तो उसने अपनी तलवार की नोक अपने सीने के दरमियान करके उस पर झूल–

गया और खुदकुशी कर ली फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी बा ज़ाहिर लोगों के सामने अह्ले जन्नत वाले काम करता है हालाँकि वो दोज़ख़ी होता है इसी तरह कोई आदमी बा ज़ाहिर लोगों के सामने अहले जहन्नम वाले काम करता है लेकिन वो जन्नती होता है।

(बुख़ारी–सहीह–4/314–ह०–4203)
(बुख़ारी–सहीह–6/130–ह०–6607)
(मुस्लिम–सहीह–1/206–ह०–306)

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है फ़रमाते हैं कि हज़रत जुन्दब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने हमें मस्जिद में हदीस बयान की जिसे मैं नहीं भूला उन्होंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से बयान किया कि आपने फ़रमाया कि एक शख़्स को सख़्त ज़ख़्म लग गया था उसने खुद को क़त्ल कर डाला तो अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया चूँकि मेरे बन्दे ने मुझसे सबक़त चाही लिहाज़ा मैंने उस पर जन्नत को हराम कर दिया।

(बुख़ारी–सहीह–2/123–ह०–1364)
(बुख़ारी–सहीह–3/606–ह०–3463)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि हमने ख़ैबर फ़तह किया तो हमें माले ग़नीमत में सोना चाँदी नहीं मिला था बल्कि गाय, ऊँट, सामान और बाग़ात मिले थे फिर हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के हमराह वादी कुरा में आये जबकि आपके साथ एक मिदअम नामी गुलाम भी था वो रसूलुल्लाह का कजावा उतार रहा था कि अचानक नामाअ़लूम सिम्त से एक तीर आकर उसे

लगा और वो गुलाम मर गया तो लोगों ने कहा कि इसे शहादत मुबारक हो तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं है उस ज़ात की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है जो चादर उसने ख़ैबर के रोज़ तक़सीमे ग़नीमत से पहले चुराई थी वो उस पर शुअ़ला बनकर भड़क रही है रसूलुल्लाह की ये बात सुनकर एक शख़्स एक या दो तस्मे लेकर हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ की कि मैंने भी ये उठा लिये थे फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये एक या दो तस्मे भी दोज़ख़ की आग बनते।
(बुख़ारी–सहीह–4/327–ह०–4234)
(मुस्लिम–सहीह–1/215–ह०–309, 310)

➡ अबुल ग़ादिया नामी शख़्स जो कि सहाबी–ए–रसूल था और इसने अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को नेज़ा मारकर क़त्ल किया था और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये फ़रमाया था कि अम्मार बिन यासिर का क़ातिल दोज़ख़ी है।
(मुस्नद अहमद–6/880–ह०–16818, 16819)
(मुस्नद अहमद–3/517–ह०–6538, 6929)
(अल बानी-सिलसिला अहादीसे सहीहा–3/520-ह०-3524)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/482–ह०–5217)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फरमाते हैं कि हम नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की माअ़इयत में जंगे हुनैन में शरीक हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक मुसलमान शख़्स के बारे में फ़रमाया कि ये दोज़ख़ियों में से है लेकिन जब

हम लड़ाई में गये तो उस शख़्स ने बड़ी ज़ोरदार जंग लड़ी जिसकी वजह से उसे ज़ख़्म लगे इस पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई ऐ अल्लाह के रसूल वो शख़्स कि जिसके बारे में आपने अभी फ़रमाया था कि वो दोज़ख़ियों में से है मगर उसने तो आज बड़ी ही शदीद जंग लड़ी है और वो मर चुका है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो आग की तरफ़ जायेगा बाअ़ज़ मुसलमान आपके इस फ़रमान के बारे में शक व शुबहा में मुब्तिला होने लगे कि ऐसा जां निसार शख़्स दोज़ख़ी कैसे हो सकता है लोग इसी हालत में थे कि बताया गया कि वो अपनी मौत नहीं मरा नहीं बल्कि उसे शदीद ज़ख़्म लगे थे तो वो अपने उन ज़ख़्मों पर सब्र न कर सका और उसने खुदकुशी करली जब आपको इसकी इत्तिला दी गई तो आपने फ़रमाया अल्लाह सबसे बड़ा है और मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ फिर आपने बिलाल रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को हुक्म दिया तो उन्होंने लोगों में ऐअ़लान किया कि यक़ीनन उस जान के सिवा कोई जन्नत में दाख़िल न होगा जो इस्लाम पर है और बिला शको शुबाह अल्लाह तआ़ाला बुरे लोगों से भी इस दीन का काम कराता है।
(मुस्लिम–सहीह–1/212–ह०–305)

बाअ़ज़ सहाबा हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को औंघ आ गई और फिर आप मुस्कुराते हुये उठे तो

सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप क्यों मुस्कुराये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर अभी-अभी एक सूरह नाज़िल हुई है फिर आपने पढ़ा 'इन्ना आअ़तैना कल कौसर..' जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इसे पूरा पढ़ लिया तो फ़रमाया क्या तुम जानते हो कौसर क्या है सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल बेहतर जानते हैं फिर आपने फ़रमाया कि ये एक नहर है जो मेरे रब ने मुझे जन्नत में देने का वाअ़दा फ़रमाया है और इस पर मेरा हौज़ होगा जिस पर क़यामत के दिन मेरी उम्मत के लोग आयेंगे और इसके पीने के बर्तन सितारों की ताअ़दाद से भी ज़्यादा होंगे फिर एक शख़्स उसमें से बाहर खींचा जायेगा तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरी उम्मत में से है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ महबूब आप नहीं जानते कि आपके बाद जो इसने किया है (यानी दीन से फिर गया और शरीअ़ते इस्लाम के ख़िलाफ़ काम किये) फिर मैं कहूँगा तू दूर हो तू दूर हो जिसने मेरे बाद अपना दीन बदल लिया। (नसाई-सुनन-2/452-ह०-905)

➡ हज़रत अबू हाज़िम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा पेश ख़ेमा होऊँगा और जो वहाँ आयेगा और मेरे उस हौज़ से पियेगा तो फिर वो कभी भी प्यासा न रहेगा और मेरे सामने कुछ लोग ऐसे आयेंगे जो मुझे पहचानते होंगे और मैं उन्हें पहचानता होऊँगा फिर वो मेरे पास आने से रोक दिये जायेंगे फिर मैं कहूँगा कि ऐ मेरे रब ये तो मेरे ही लोग हैं तो मुझे जवाब मिलेगा कि आप नहीं जानते जो इन्होंने आपके बाअ़द किया है

(यानी काफ़िर या मुनाफ़िक़ या ख़ारजी) हो गये तो मैं कहूँगा कि दूर हो दूर हो जिसने मेरे बाद अपना दीन बदल लिया था। (मुस्लिम–सहीह–6/21–ह०–5968,5969)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं अपने हौज़ पर तुमसे पहले मौजूद रहूँगा और तुममें से कुछ लोग मेरे सामने लाये जायेगे फिर उन्हें मेरे सामने से हटा दिया जायेगा तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरे साथी हैं तो मुझसे कहा जायेगा (ऐ महबूब) आप नहीं जानते कि इन्होंने आपके बाद दीन में क्या क्या नई नई चीज़ें ईजाद कर ली थीं फिर मैं कहूँगा दूरी हो उस शख़्स के लिये कि जिसने मेरे बाद दीन में तब्दीली कर ली थी।
(बुख़ारी–सहीह–6/118–ह०–6576)
(बुख़ारी–सहीह–6/121–ह०–6584)
(मुस्लिम–सहीह–4/448–ह०–5978, 5996)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे कुछ साथी मेरे पास मेरे हौज़ पर आयेंगे और मैं उन्हें पहचान लूंगा फिर वो मेरे सामने से हटा दिये जायेंगे मैं कहूँगा ये तो मेरे साथी हैं और फिर मुझसे कहा जायेगा कि आपको माअ़लूम नहीं है कि आपके बाअ़द इन्होंने दीन में क्या क्या चीज़ें ईजाद करलीं थीं और आपके बाद बिला शुबा ये लोग ऐड़ियों के बल इस्लाम से उल्टे लौट गये थे।
(बुख़ारी–सहीह–6/120–ह०–6582, 6585, 6586)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं हौज़ पर मौजूद रहूँगा ताकि मैं देखूँ कि तुममें से कौन मेरे पास आता है कुछ लोगों को मुझ तक पहुँचने से पहले ही पकड़ लिया जायेगा तो मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये तो मेरे हैं मेरी उम्मत में से हैं तो कहा जायेगा कि आपको माअ़लूम नहीं है कि आपके बाअ़द इन्होंने क्या क्या किया है और आपके बाद ये इस्लाम से उल्टे पाँव फिर गये थे। (मुस्लिम–सहीह–4/445–ह०–5972)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी बा ज़ाहिर लोगों की नज़र में अह्ले जन्नत वाले काम करता है हालाँकि वो दोज़ख़ी होता है इसी तरह से कोई आदमी बा ज़ाहिर लोगों की नज़र में अहले जहन्नम वाले काम करता है लेकिन वो जन्नती होता है।
(मुस्लिम–सहीह–5/124–ह०–6741)

चोरी करने वाले का हाथ काटने का हुक्म

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मर'वी है कि एक औ़रत ने चोरी की तो हज़रत उसामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उस औ़रत की सिफ़ारिश रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की तो आपने फ़रमाया ऐ उसामा क्या तुम हुदूदुल्लाह में से एक हद को साक़ित करने के बारे में सिफ़ारिश कर रहे हो फिर आप उठे और खुत्बा इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगो तुमसे पहले–

लोगों को इसी चीज़ ने तबाह कर डाला कि जब उनका कोई मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते थे और जब कोई कमज़ोर आदमी चोरी करता तो वो उस पर हद नाफ़िज़ करते अल्लाह तआ़ाला की क़सम अगर मेरी बेटी फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काटने का हुक्म देता।
(बुख़ारी–सहीह–6/222–ह०–6788)
(मुस्लिम–सहीह–3/496–ह०–4410)

एक सहाबी को ज़िना करने की वजह से रज्म किया गया

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सहाबी–ए–रसूल माइज़ बिन मालिक हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास आये और कहा कि मैंने ज़िना किया है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मुँह फेर लिया तो उन्होंने रसूलुल्लाह से बार बार यही कहा और आप ने मुँह फेर लिया फिर आपने पूछा क्या तू पागल है तो उसने कहा नहीं फिर आने पूछा क्या तू शादी शुदा है उन्होंने कहा हाँ फिर आपने पूछा कि क्या तुमने वाक़ई ज़िना किया है उन्होंने कहा हाँ फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनके मुताअ़ल्लिक़ हुक्म दिया कि इसे रज्म किया जाये फिर उन्हें ले जाया गया और संगसार कर दिया गया और उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी गई। (अबू दाऊद–सुनन–5/378–ह०–4421)
(अबू दाऊद–सुनन–5/383–ह०–4430)

पस माअ़लूम हुआ कि गुनाह करने पर गिरफ़्त होगी ख़्वाह वो सहाबी–ए–रसूल हो या अ़ाम मुसलमान हो।

➡ बाअ़ज़ लोग मुआ़विया के दफ़ाअ़ में ये कहते हैं कि किसी सहाबी को बुरा न कहो और बतौर दलील ये हदीस पेश करते हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद व हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के दरमियान कुछ झगड़ा था तो हज़रत ख़ालिद ने उनको बुरा कहा तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा में से किसी को बुरा न कहो क्योंकि तुममें से कोई भी उहद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करे तो वो उनमें से किसी के दिये हुये एक या आधे मुद के बराबर नहीं पहुँच सकता। (मुस्लिम–4/695–ह०–6488) (बुख़ारी–सहीह–3/715–ह०–3673)

नासबी मुल्लाओं ने मुआ़विया की मुहब्बत और उसके दिफ़ाअ़ में इस मज़कूरा हदीस का माअ़ना और मफ़हूम ही बदल दिया और इस हदीस की बिल्कुल ग़लत और बातिल तावील की ताकि किसी तरह उनका काफ़िर व मुरतद मामू अमीर मुआ़विया बच जाये और इन अ़क्ल के अन्धों को ये भी दिखाई नहीं दिया कि इस हदीस में अल्लाह के रसूल ने वाज़ेह तौर पर अपने उन सहाबा के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया जो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से बहुत पहले इस्लाम लाये और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की निस्बत बहुत पहले से रसूलुल्लाह की सुहबत का शरफ़ हासिल था इस तरह वो रसूलुल्लाह के ज़्यादा क़रीबी साथी थे इस बिना पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान को हज़रत ख़ालिद पर वही फ़ौक़ियत हासिल थी जो रसूलुल्लाह ने मज़कूरा हदीस में बताई कि तुम मेरे सहाबा को बुरा न कहो इसलिये कि तुम बहुत बाअ़द में इस्लाम लाये हो और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान तुमसे बहुत पहले इस्लाम ला चुके हैं तो इस तरह वो तुमसे मेरे बहुत ज़्यादा क़रीबी साथी

हैं और इस हदीस में ये हुक्म ख़ास सहाबा के लिये है अ़ाम सहाबा के लिये नहीं है और आपका ये फ़रमाना तुममें से कोई भी उहद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करे तो वो उनमें से किसी एक सहाबी के एक मुद या आधे मुद के बराबर नहीं पहुँच सकता और इस हदीस में दोनों तरफ़ सहाबी हैं तो ज़ाहिर है कि आपने किसी एक के लिये ही फ़रमाया है और वो ख़ास सहाबा में से एक सहाबी हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ थे पस वाज़ेह हुआ कि नासबी मुल्ला मुअ़ाविया को बचाने के लिये इस हदीस की बातिल तावील करके पेश करते हैं

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
तुममें से जिन लोगों ने फ़तह मक्का से पहले (अल्लाह की राह में अपना माल) ख़र्च किया और क़िताल किया वो (और तुम) बराबर नहीं हो सकते वो उन लोगों से दर्जे में बहुत बुलन्द हैं कि जिन्होंने बाअ़द में माल ख़र्च किया। (सूरह-हदीद-57/10)

सुलह इमाम हसन के असबाब

बाअ़ज़ लोग मुअ़ाविया की हिमायत व उसके दिफ़ाअ़ में कहते हैं कि हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने मुअ़ाविया से सुलह करली थी व उनके दरमियान कोई ग़िला शिकवा न रहा था तो मुअ़ाविया को बुरा न कहो तो इसका जवाब ये है कि जो लोग हज़रत इमाम हसन और मुअ़ाविया के दरमियान हुई सुलह की बात करते हैं वो इस सुलह की हक़ीक़त को बयान नहीं करते कि किन हालात और असबाब और किन शराइत के तहत हज़रत इमाम हसन ने सुलह की थी और ये सुलह इस बात की दलील नहीं कि मुअ़ाविया उमूरे कुफ़्रिया और-

गुनाहे कबीरा से बरी हो गया है बल्कि मुआ़विया उमूरे कुफ़्रिया व गुनाहे कबीरा का मुरतकिब ही रहेगा और उस पर लगे तमाम इल्ज़ामात साक़ित न होंगे क्योंकि हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने अमीर मुआ़विया से सुलह कोई खुशी से नहीं की थी बल्कि वक़्त और हालात के तक़ाज़े ने मुआ़विया से सुलह के लिये आप को मजबूर किया था हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम ने मुसलमानो की जानो माल की हिफ़ाज़त और क़त्लो ग़ारत खूँरेज़ी से होने वाले मुसलमानों के नुक़सान और तक़वे की वजह से अमीर मुआ़विया से सुलह की और चन्द शराइत के तहत ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गये

➡ जब हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने हुकूमत अमीर मुआ़विया के सुपुर्द करदी तो ख़वारिज ने अमीर मुआ़विया से जंग करने के लिये अमीर मुआ़विया की तरफ़ कूच किया और उस वक़्त हज़रत इमाम हसन मदीना जा रहे थे तो मुआ़विया ने हज़रत इमाम हसन को ख़त लिखा और आपको उस ख़वारिज फ़िरक़े से लड़ने के लिये बुलाया तो हज़रत इमाम हसन ने जवाब में लिखा कि ऐ मुआ़विया अगर मैं किसी से लड़ता तो सबसे पहले तुझसे लड़ता मैंने तुझे फ़क़त इस उम्मत और उसके खून की ख़ातिर छोड़ा है (इब्ने असीर–अल कामिल फ़ी तारीख़–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–275)

जिस तरह मौक़ेअ़ की नज़ाकत व हालात के तक़ाज़े को मद्दे नज़र रखते हुये नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हुदैबिया में कुफ़्फ़ारों से सुलह की उसी तरह से हज़रत इमाम हसन मौक़ेअ़ की नज़ाकत व हालात के तक़ाज़े को मद्दे नज़र रखते हुये अमीर मुआ़विया से सुलह की थी।

➡ हज़रत इमाम हसन बसरी रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) अपने एक लश्कर के साथ मुआ़ाविया से लड़ने के लिये निकले तो अम्र बिन आस ने अमीर मुआ़ाविया से कहा कि मैं ऐसा लश्कर देख रहा हूँ जो वापस नहीं होगा जब तक कि वो अपने मुख़ालिफ़ीन को क़त्ल न करदे और अपने मुक़ाबिल मुख़ालिफ़ीन को भगा न दे यानी सामने वाले मुख़ालिफ़ दुश्मन को हराकर भागने पर मजबूर कर दे फिर अमीर मुआ़ाविया ने अ़ब्दुर्रहमान बिन समुराह और अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर से कहा कि तुम हसन के पास जाओ और और सुलह की पेशकश करो।
(बुख़ारी–सहीह–3/139–ह०–1704)
(बुख़ारी–सहीह–6/403–ह०–7109)

मुआ़ाविया ने हज़रत अबू अय्यूब के साथ ज़्यादती की

➡ हज़रत मिक़सम फरमाते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) मुआ़ाविया के पास गये और अपनी हाजत का ज़िक्र किया तो मुआ़ाविया ने पूछा क्या तुम हज़रत उ़स्मान के साथी नहीं हो उन्होंने कहा क्या हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हमें हज़रत उ़स्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के साथ पेश आने वाले मुआ़ामलात हमें पहले ही नहीं बता दिये थे मुआ़ाविया ने कहा रसूलुल्लाह ने क्या बताया था तो हज़रत अबू अय्यूब ने फ़रमाया ये कि हम सब्र करेंगे हत्ता कि हौज़े कौसर पर इकट्ठे हों तो मुआ़ाविया ने कहा ठीक है फिर सब्र ही करो और एक रिवायत में है कि मुआ़ाविया ने उनके साथ ज़्यादती की इस पर हज़रत अबू अय्यूब अमीर मुआ़ाविया पर सख़्त

नाराज़ हुये और क़सम खाली कि अमीर मुआ़विया से कभी बात नहीं करेंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/157–ह०–5935, 5941)

इमाम बुख़ारी के उस्ताद अमीर मुआ़विया से नफ़रत करते थे

➡इमाम बुख़ारी के उस्ताद हज़रत उबैदुल्लाह बिन मूसा कूफ़ी अमीर मुआ़विया से इतनी सख़्त नफ़रत करते थे कि मुआ़विया नाम के शख़्स को भी घर में दाख़िल नहीं करते और ना ही बात करते थे। (इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–17–सफ़ा–174)

➡ इमाम बुख़ारी और इमाम अहमद बिन हम्बल के उस्ताद हज़रत अ़ली बिन जॉद इनकी हदीस की किताब 'मुस्नद अ़ली इब्नुल जॉद' है इनके बारे में इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी किताब 'तहज़ीबुत तहज़ीब' में नक़ल किया है कि आपने फ़रमाया कि मुझे बुरा नहीं लगता अल्लाह तआ़ला मुआ़विया को अ़ज़ाब दे। (इब्ने हजर अस्क़लानी–तहज़ीबुत तहज़ीब–अ़रबी–जिल्द–4–सफ़ा-571) (ताअ़दाद रक़आ़त क़याम रमज़ान–उ़र्दू–सफ़ा–77)

मुआ़विया के बारे में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा का क़ौल

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से अ़र्ज़ किया गया कि आपको इस बात पर तआ़ज्जुब नहीं होता कि मुआ़विया रसूलुल्लाह के सहाबा पर जबरदस्ती करके ख़िलाफ़त पर क़ाबिज़ हो गया तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हा) ने फ़रमाया कि इसमें तअ़ाज्जुब की क्या बात है ये अल्लाह तअ़ाला का इख़्तियार है वो अपने नेक बन्दों को भी देता है और फ़ासिक़ व फ़ाजिर को भी देता है फ़िरऔन ने तो मिस्र में 400 साल तक हुकूमत की।
(तारीख़ इब्ने कसीर–अ़रबी–अल बिदाया वन निहाया–जिल्द–8–स०–131)
(इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–3–सफ़ा–141)

मुअ़ाविया के बारे में रसूलुल्लाह का फ़रमान

➡हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम अमीर मुअ़ाविया को मेरे मिम्बर पर खुत्बा देते हुये देखो तो उसे क़त्ल कर देना।
(इब्ने हजर मक्की–तत्हीरुल जिनान–सफ़ा–62)

मुअ़ाविया के चार बाप

➡मुअ़ाविया के पैदा होने का तअ़ाल्लुक़ चार अशख़ास से है यानी मुअ़ाविया के चार बाप थे और इन चार में से नामाअ़लूम ये किसकी औलाद था व इनमें से हर एक हिन्दा के साथ मुत्तहिम था यानी अमीर मुअ़ाविया ज़िना से पैदा हुआ था और इसको पालने वाली अ़ौरतें कहती थीं कि मुअ़ाविया ज़िना से पैदा हुआ है।
(सिब्ते इब्ने जोज़ी–तज़किरातुल ख़्वास–उ़र्दू–सफ़ा–252)
(इन्सानियत मोत के दर‘वाज़े पर–उ़र्दू–सफ़ा–161)
(दीवाने–हज़रत हस्सान बिन साबित–उ़र्दू–सफ़ा–312)

हिन्दा बड़ी शहवानी अ़ौरत थी व सियाह रंग की तरफ़ माइल थी और जब कोई सियाह बच्चा पैदा होता तो उसे मार देती थी। (तज़किरातुल ख़वास–उर्दू–सफ़ा–253)

➡ हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं ऐ हिन्दा तू उस बदतरीन अ़मल को भूल गई जिसका तूने इरतिकाब किया था तेरा सत्यानाश हो और तेरा ये अ़मल हमेशा के लिये तेरी रुसवाई व ज़िल्लत का सबब बन गया इस हिन्दा ने हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) का सीना चीरकर व उनका कलेजा निकाल कर चबाया था।
(दीवाने–हज़रत हस्सान बिन साबित–उ़र्दू–सफ़ा–312)

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की तौफ़ीक़ और उसके अ़ता कर्दा इ़ल्म से मैंने इस किताब की तालीफ़ की और मैंने अमीर मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान की हक़ीक़त व उसका किरदार और उसके कुफ़्रिया उमूर और बातिल अ़क़ाइद को अहले सुन्नत वल जमाअ़त की किताबों से वाज़ेह और साबित किया है ताकि अमीर मुअ़ाविया की हक़ीक़त आशकार हो और अह्ले हक़ व अह्ले बातिल की पहचान हो चुनांचा हर अह्ले इ़ल्म पर ये लाज़िम है कि वो हमेशा हक़ बात कहे और जो इ़ल्म वो जानता हो वो दूसरों तक पहुँचाये ताकि वो अज्र व सवाब का मुस्तहिक़ बने और कभी भी हक़ को न छुपाये क्योंकि रोज़े क़यामत अल्लाह तअ़ाला हमारा हिसाब लेने वाला है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
हक़ को बातिल के साथ ख़ल्त मल्त न करो और ना ही हक़ को जानबूझ कर छुपाओ। (सूरह–बक़राह–2/42)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाये जिसे वो जानता हो फिर भी वो न बताये तो रोज़े क़यामत उसे आग की लगाम डाली जायेगी।
(तिर्मिज़ी–2/424–ह०–2649) (मिश्कात–1/110–ह०–223)
(अबू दाऊद–सुनन–3/855–ह०–3658)
(इब्ने माजा–सुनन–1/121–ह०–261)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से किसी को लोगों का डर हक़ बात कहने से न रोके जब वो हक़ देखता या सुनता हो (मुअ़जम औसत–3/720–ह०-4906)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे अफ़ज़ल जिहाद ये है कि इन्सान जाबिर हाकिम और ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ व इन्साफ़ की बात कहे।
(अबू दाऊद–सुनन–5/325–ह०-4344)
(इब्ने माजा–सुनन–3/301–ह०-4011)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/70–ह०-2174)

➡ हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह कौन सा जिहाद अफ़ज़ल है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़ालिम हाकिम के सामने हक़ बात कहना।
(नसाई–सुनन–6/220–ह०-4214)

पस माअ़लूम हुआ कि हमेशा हक़ बात कहना चाहिये ख़्वाह लोग तुम्हें अच्छा कहें या बुरा कहें हत्ता कि तुम्हें तकलीफ़ पहुँचायें तुम पर बेदीनी या रिफ़्ज़ का फ़तवा लगायें फिर भी सिवाए अल्लाह के किसी से न डरते हुये हक़ बात कहें चुनांचा हमारे आइम्मा मुहद्दिसीन और हमारे फ़िक़्ई चारों इमामों को अह्ले बैत अत्हार की मुहब्बत और हक़ बात कहने के बाइस राफ़्ज़ी कहा गया और बाअ़ज़ आइम्मा मुहद्दिसीन को तकलीफ़ें दी गईं लेकिन वो हक़ बात पर क़ायम रहे मसलन हज़रत इमाम नसाई, इमाम हाकिम, इमाम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैराह को सख़्त तकलीफ़ें दी गईं मगर वो हक़ पर क़ायम रहे (इमाम ज़हबी–सीयरे आलामिन नुबला–अ़रबी–जिल्द–17 –सफ़ा–174)(इमाम ज़हबी–तज़किरातुल हुफ़्फ़ाज़–जिल्द–1 –सफ़ा–364)

और हक़ बात यही है जो इस किताब में सरीह तौर पर कुरानो सुन्नत के मुस्तनद व मुस्तहकम दलाइल से वाज़ेह की गई कि अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान काफ़िर मुरतद जहन्नमी है और बेशुमार लाअ़नत का मुस्तहिक़ है बेशक मुआ़विया इंतिहाई ज़ालिम बादशाह था जिसने दुनियावी माल व मताअ़ हासिल करने और अपनी हुकूमत को क़ायम और बरक़रार रखने के लिये और दायरा–ए–हुकूमत को बढ़ाने की ग़रज़ से मुआ़विया ने अह्ले बैत अत्हार और बेशुमार सहाबा किराम व मुसलमानों का क़त्ले आ़म किया और ऐसे मज़मूम उमूर को अन्जाम देने वाले का दायमी ठिकाना दोज़ख़ है कि जिसमें वो हमेशा जलता रहेगा और उस पर मुख़्तलिफ़ सख़्त अ़ज़ाब मुसल्लत किये जायेंगे इस ज़िमन में हम यहाँ एक बाब क़ायम कर रहे हैं जिसमें मुसलमानों पर जुल्म व ज़्यादती और उनका क़त्ल करने के सबब क्या

क्या वईदें कुरान व अहादीस में आईं हैं और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने मुसलमानों का क़त्ल व उन पर जुल्म व ज़्यादती के मुताअ़ल्लिक़ क्या क्या फ़रमाया है और क्या क्या अहकाम हम पर नाफ़िज़ किये उसका ज़िक्र करेंगे।

मुसलमानों पर जुल्म व उनका क़त्ल करने से मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह व रसूल का फ़रमान

-: मुसलमान का क़ातिल दोज़ख़ी :-

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक होगा व उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (सूरह-निसा-4/93)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और ये वो लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे माअ़बूद की इबादत नहीं करते और न ही किसी ऐसी जान को क़त्ल करते हैं जिसे बग़ैरे हक़ मारना अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है और न ही बदकारी करते हैं और जो शख़्स ये काम करेगा वो सज़ा पायेगा उसके लिये क़यामत के दिन अ़ज़ाब दो गुना कर दिया जायेगा और वो उस (दोज़ख़) में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ हमेशा रहेगा। (सूरह-फुरक़ान-25/68, 69)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर (नाज़िल की गई

तौरात में ये हुक्म) लिख दिया था कि जिसने किसी शख़्स को बग़ैर क़िसास के या ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी की सज़ा के बग़ैर (नाहक़) क़त्ल कर दिया तो गोया उसने तमाम लोगों को क़त्ल कर डाला।
(सूरह–मायदा–5/32)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक जो लोग अल्लाह व उसके रसूल से जंग करते हैं और ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी करते फिरते हैं (यानी मुसलमानों में खूँरेज़ी दहशत गर्दी और क़त्ले अ़ाम के मुरतकिब होते हैं) तो उनकी सज़ा यही है कि वो क़त्ल किये जायें या वो फांसी दिये जायें या उनके हाथ और उनके पाँव मुख़्तलिफ़ सिम्तों से काटे जायें या ज़मीन से दूर कर दिये जायें ये उनके लिये दुनिया में रुसवाई है और उनके लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।
(सूरह–मायदा–5/33)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से बढ़कर है।
(नसाई–सुनन–6/40–ह०–3995)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/414–ह०–4349)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक सारी दुनिया का तबाह हो जाना एक मुसलमान के नाहक़ क़त्ल के मुक़ाबले में बहुत ही माअ़मूली है यानी मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तअ़ाला

के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से ज़्यादा बड़ा है।
(नसाई–सुनन–6/39–ह०-3992, 3993, 3994)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/775–ह०-1395)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़मीनो आसमान के तमाम लोग किसी मुसलमान के खून में शरीक हो जायें तो अल्लाह तआ़ला सबको औंधा करके दोज़ख़ में डाल देगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/776–ह०-1398)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को क़त्ल करेगा वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं पायेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू चालीस बरस की मुसाफ़त से महसूस की जा सकती है।
(बुख़ारी–सहीह–3/424–ह०-3166, 6914)
(इब्ने माजा–सुनन–2/318–ह०-2686, 2687)
(नसाई–सुनन–6/609–ह०-4753, 4754)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को क़त्ल करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस पर जन्नत को हराम फ़रमां देगा यानी ऐसा शख़्स जो ग़ैर मुस्लिम हो और हुकूमते इस्लामियाँ में रह रहा हो और टैक्स वग़ैराह देता हो उसे ज़िम्मी कहते हैं।
(अबू दाऊद–सुनन–3/231–ह०-2760)
(नसाई–सुनन–6/608–ह०-4752)

-: मुसलमान को क़त्ल करना कुफ़्र है :-

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द व हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उससे क़िताल कुफ़्र है यानी किसी मुसलमान से जंग करना या किसी मुसलमान का क़त्ल करना कुफ़्र है। (बुख़ारी–सहीह–1/106–ह०–48)
(मुस्लिम–सहीह–1/177–ह०–221)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53–ह०–69)
(इब्ने माजा–सुनन–3/273–ह०–3939, 3940, 3941)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058–ह०–1983, 2634, 2635)
(नसाई–सुनन–6/132–ह०–4109)
(मिश्कात–3/62–ह०–4814)

मुसलमान का माल, इज़्ज़त व खून हराम है

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर फ़रमाया कि तुम्हारी जान व माल और इज़्ज़तें तुम पर उसी तरह हराम हैं जैसे आज के दिन की हुरमत है जैसे इस महीने की हुरमत है जैसे इस शहर की हुरमत है और तुम मेरे बाअ़द कुफ़्र में मत लौट जाना कि तुम एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो। (मुस्नद अहमद–6/880–ह०–16819)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/178–ह०–5982)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/497–अ़रबी–ह०–2193)
(इब्ने माजा–सुनन–3/274–ह०–3942, 3943)
(बुख़ारी–सहीह–6/388–ह०–7080)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक मुसलमान के लिये दूसरे मुसलमान का माल, इज़्ज़त व खून हराम है नीज़ फ़रमाया बन्दे के लिये यही बुराई काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने।
(अबू दाऊद–सुनन–6/685–ह०-4882)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम पर हराम है मुसलमानों की जान व माल और इज़्ज़त और क़रीब तुम अपने पर'वर दिगार से मिलोगे और तुम्हारे सब आअ़मालों की पुरशिश होगी और मेरे बाद तुम गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।
(मुस्लिम–सहीह–4/303–ह०-4383)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक करना व किसी का नाहक़ क़त्ल करना। (बुख़ारी–सहीह–6/162–ह०-6675)
(बुख़ारी–सहीह–6/266–ह०-6871)

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी भी मुसलमान का खून हलाल नहीं है सिवाए तीन जुर्मों के एक वो जो इस्लाम लाने के बाअ़द कुफ़्र करे और दूसरा वो शादी शुदा होने के बाअ़द ज़िना करे व

तीसरा वो जिसने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और जो शख़्स अपने दीन से फिर जाये उसे क़त्ल कर दो यानी जो इस्लाम के बाअ़द कुफ़्र करे या दीन से फिर जाये या फिर किसी जान को नाहक़ क़त्ल करे।
(मुस्नद अहमद–10/339–ह०–22365)
(बुख़ारी–सहीह–6/270–ह०–6878)
(मुस्लिम–सहीह–3/475–ह०–4375, 4377)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/58–ह०–2158)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/777–ह०-1402)
(मिश्कात–2/393–ह०–3446, 3466)
(इब्ने माजा–सुनन–2/264–ह०–2533, 2534)
(नसाई–सुनन–6/59–ह०–4023, 4024)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/92–ह०–3760)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ हथियार उठाये वो हममें से नहीं यानी वो इस्लाम से ख़ारिज है।
(बुख़ारी–सहीह–6/268–ह०-6874)
(बुख़ारी–सहीह–6/385-ह०-7071)
(मुस्लिम–सहीह–1/198–ह०-282, 283)
(इब्ने माजा–सुनन–2/278-ह०-2575, 2576, 2577)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/811-ह०-1459)
(नसाई–सुनन–3/162–ह०-4107)
(मुस्नद अहमद–3/8–ह०-4467)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई भी

अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे क्योंकि वो नहीं जानता कि मुम्किन है कि शैतान-उसके हाथ से वार करादे फिर वो दोज़ख़ के गढ़े में जा गिरे। (बुख़ारी-सहीह-6/385-ह०-7072)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि तुममें से कोई जब अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा करता है तो फ़रिश्ते उस पर लाअ़नत करते हैं।
(मुस्लिम-सहीह-6/228-ह०-6666)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/62-ह०-2162)
(तबरानी-मुअ़जम औसत-3/322-ह०-4169)

रोज़े क़यामत सबसे पहला फ़ैसला बन्दों के खून का होगा

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत जो सबसे पहले फ़ैसला करेगा वो बन्दों के खून का होगा। (बुख़ारी-सहीह-6/99-ह०-6533)
(मुस्लिम-सहीह-4/303-ह०-4381)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/775-ह०-1396)
(नसाई-सुनन-3/124-ह०-3999, 4000)

हर गुनाह मुआ़फ़ सिवाए मुसलमान के क़त्ल के

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ाला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो शिर्क की हालत में मर गया या जिसने किसी मुसलमान का क़त्ल किया हो नीज़ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन को क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ाला उसका उसका कोई अ़मल कुबूल नहीं करेगा न निफ़िल न फ़र्ज़। (अबू दाऊद–सुनन–4/277–ह०–4270) (इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

➡रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ाला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे। (मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

➡हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला ने मोमिन के क़ातिल की तौबा कुबूल करने से इन्कार फ़रमां दिया है।
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/425–ह०–3742)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से पूछा गया कि क्या क़ातिल तौबा कर सकता है तो आपने फरमाया कि क़ातिल की तौबा कैसे कुबूल हो सकती है मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि रोज़े क़यामत मक़्तूल क़ातिल का गिरेबान पकड़े हुये आयेगा और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब इसने मुझे क़त्ल किया था तो अल्लाह तआ़ला उस क़ातिल से फ़रमायेगा तू हलाक हो गया है फिर उसे जहन्नम की तरफ़ भेज दिया जायेगा फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि जब ये आयत " और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बर दस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है" (सूरह-निसा-4/93) नाज़िल हुई तो उसके बाअ़द ये आयत मन्सूख़ नहीं हुई तो क़ातिल की तौबा कैसे मुम्किन है।

(तिर्मिज़ी-सुनन-2/627-ह०-3029)
(नसाई-सुनन-6/48-ह०-4010)
(अलबानी-सिलसिला अहादीसे सहीहा-5/425-ह०-3741)

मुसलमान पर ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाला दोज़ख़ी

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

बस मलामत के मुस्तहिक़ तो वो हैं जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं और फ़साद फ़ैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह-शूरा-42/42)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

यही वो लोग हैं कि जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़फ़िरत के बदले अ़ज़ाब कैसा अजीब है

ये उनका हौसला कि दोज़ख़ का अ़ज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार हैं। (सूरह–बक़राह–2/175)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम ऐसे लोगों की तरफ़ मत झुकना जो जुल्म कर रहे हैं वरना तुम्हें आतिशे (दोज़ख़) आ छुयेगी और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई भी मददगार न होगा और फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी। (सूरह–हूद–11/113)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को अज़िय़त दी फिर तौबा न की तो उनके लिये अ़ज़ाबे जहन्नम है और उनके लिये आग में जलने का अ़ज़ाब है। (सूरह–बुरुज–85/10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो लोग मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को अज़िय़त देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ (ख़ता) की हो तो बेशक उन्होंने बोहतान व खुले गुनाह को बोझ (अपने सर) ले लिया है। (सूरह–अहज़ाब–33/58)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप ज़ालिमों के देखेंगे कि जब वो अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे तो कहेंगे कि क्या (दुनिया में) पलट जाने की कोई सबील है। (सूरह–शूरा–42/44)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और उस फ़ित्ने से डरो जो ख़ास तौर पर उन लोगों को ही नहीं पहुँचेगा कि जो तुममें से ज़ालिम हैं (बल्कि जुल्म का साथ देने वाले व उस पर ख़ामोश रहने वाले

उन्हीं में शरीक कर लिये जायेंगे) और जानलो अल्लाह तअ़ाला अ़ज़ाब में सख़्ती फ़रमाने वाला है। (सूरह–अनफ़ाल–8/25)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेंगे। (सूरह–शूरा–42/45)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वो अ़ज़ाब उन पर वाक़ेअ़ होकर रहेगा। (सूरह–शूरा–42/22)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और बेशक जो लोग जुल्म कर रहे हैं उनके लिये उस अ़ज़ाब के अ़लावा भी अ़ज़ाब है मगर उनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं। (सूरह–तूर–52/47)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अगर ये ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़र‘वी) अ़ज़ाब उनकी आँखों के सामने होगा (तो जान लेंगे) कि सारी कुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है (और) जब वो (पेशवायाने कुफ़्र) जिनकी पैर‘वी की गई वो अपने पैरोकारों से बेज़ार होंगे और (वो सब अल्लाह तअ़ाला का) अ़ज़ाब देख लेंगे व सारे असबाब उनसे मुनक़ताअ़ हो जायेंगे और (ये बेज़ारी देखकर) पैरोकार कहेंगे कि काश हमें (दुनिया में जाने का) एक मौक़ाअ़ मिल जाये तो हम (भी) उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे इन्होंने (आज) हमसे बेज़ारी ज़ाहिर की है यूँ अल्लाह तअ़ाला

उन्हें उनके अपने आअ़्माल उन्हीं पर हसरत बनाकर दिखा देगा और वो (किसी भी सूरत) दोज़ख़ से निकलने न पायेंगे। (सू०–बक़राह–2/165 ता 167)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
आप लोगों को उस दिन से डरायें जब उन पर अ़ज़ाब आ पहुँचेगा तो वो लोग जो जुल्म करते रहे होंगे कहेंगे ऐ हमारे रब हमें थोड़ी देर के लिये मुहलत दे दे ताकि हम तेरी दाअ़्वत को कुबूल कर लें व रसूलों की पैरवी कर लें। (सू०–इब्राहीम–14/44)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
मैं ज़रुर सब (सरकश) इन्सानों और जिन्नों से दोज़ख़ को भर दूँगा पस अब तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने इस दिन की पेशी को भुला रखा था बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आअ़्माल के बदले जो तुम करते रहे (अब) दायमी अ़ज़ाब चखते रहो।
(सू०–सज्दा–32/13, 14)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दों मैंने जुल्म को अपने ऊपर हराम कर लिया है सो ऐ बन्दो तुम भी आपस में एक दूसरे पर जुल्म न किया करो।
(मुस्लिम–सहीह–6/204–ह०-6572)

➡हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि न तुम बग़ावत–

करो और न ही जुल्म व ज़्यादती करो क्योंकि तुम्हारे-जुल्म व ज़्यादती का वबाल खुद तुम्हारे ऊपर होगा।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-5/256-ह०-6671)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान वो है जिसकी जुबान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (बुख़ारी-सहीह-1/84-ह०-10)
(बुख़ारी-सहीह-6/75-ह०-6484)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान वो है जिसकी जुबान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/410-ह०-2627)
(नसाई-सुनन-3/462-ह०-5001, 5002)
(मुस्नद अहमद-4/471-ह०-8918)

बेशक मुआ़विया इंतिहाई ज़ालिम बादशाह था जिसने अहूले बैत व सहाबा किराम और मुसलमानों पर जुल्म व ज़्यादती की और मुआ़विया ने अहूले बैत व बेशुमार सहाबा किराम और मुसलमानों का क़त्ले आ़म किया इसलिये अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफियान लाअ़नती काफ़िर मुरतद जहन्नमी है जैसा कि मैंने इस किताब में अमीर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान की हक़ीक़त और उसका किरदार और उसके कुफ़्रिया उमूर और बातिल अ़क़ाइद को अहले सुन्नत वल जमाअ़त की किताबों से वाज़ेह और साबित किया है। (वल्लाहु आअ़लमू बिज़्ज़ॉलिमीन)

★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये– **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये–**आमीन**

नोट– जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223



ISBN 978-93-343-6952-6